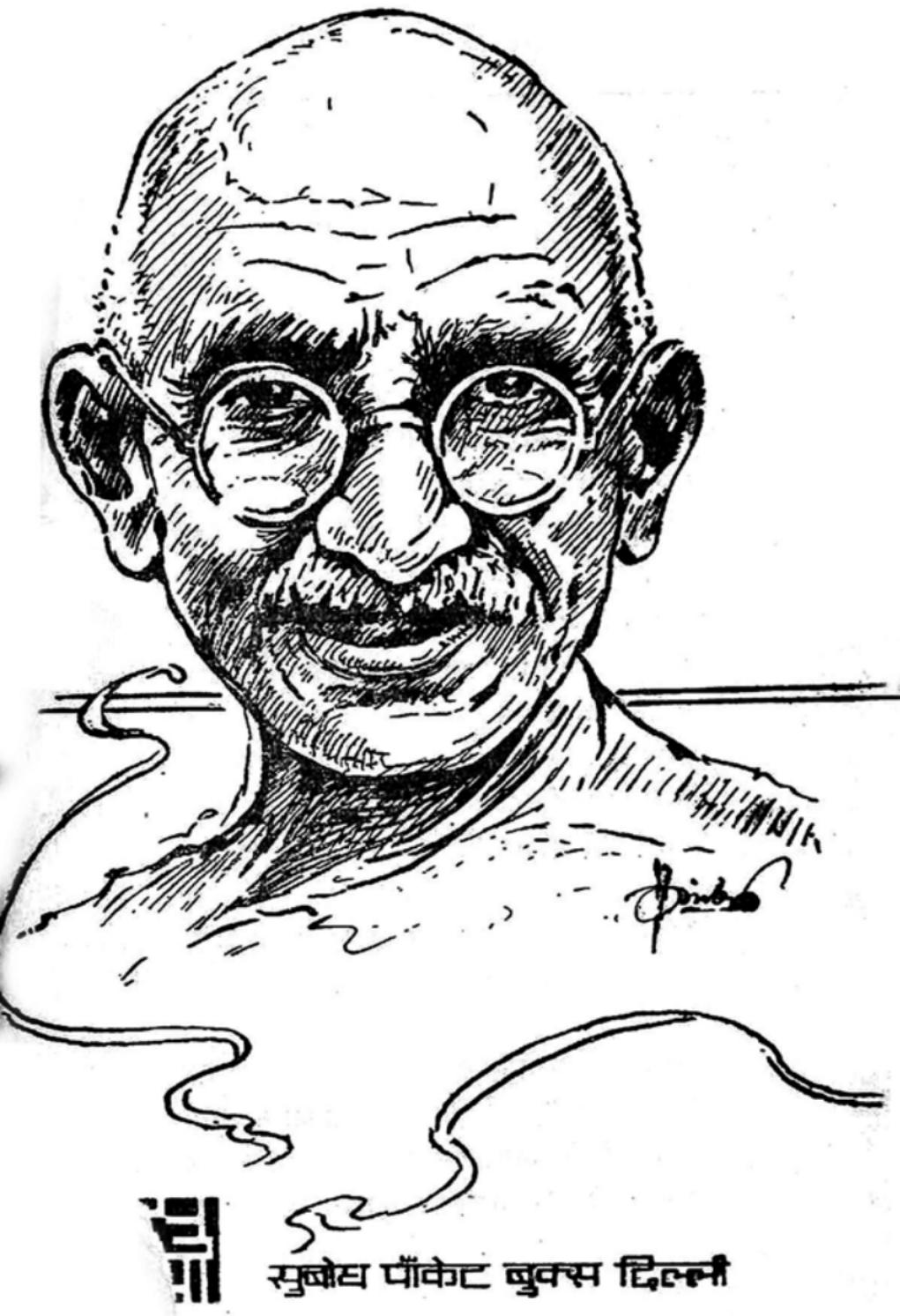


श्रीमद्भागवत
हास्य-विनोद



सुखोदय पॉकेट ब्रूक्स डिल्ली



बांधीनी

का

गुरु विलोद



⑦ सुबोध पॉकेट बुक्स

प्रकाशक
सुबोध पॉकेट बुक्स
दरियागंज, दिल्ली-६

प्रथम संस्करण अगस्त १९६९

मुद्रक
हरिहर प्रेस
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

Gandhi ji Ka Hasya Vinod : Kshitish

मूल्य : दो रुपये

प्रसन्न संस्कारिता

एक आदमी, जिसे गांधी जी का तनिक भी परिचय नहीं था, उनसे मिलने आया। उसने मान लिया था कि जितने अनुभवी धर्म-परायण महात्मा गंभीर प्रकृति के होंगे, उनके चेहरे पर विषाद की छटा भी होगी। आते ही उसने गांधी जी से सवाल पूछा, “महात्माजी, आप हास्य-विनोद को मानते हैं?”

गांधी जी ने चेहरा गंभीर करके जवाब दिया, “भले आदमी, मुझमें विनोद रसिकता न होती तो मैंने कब की आत्म-हत्या कर डाली होती।”

सचमुच दुनिया में दुःख, दारिद्र्य, दैन्य, विफलता और अबुद्धि आदि निराशा के इतने तत्त्व भरे हुए हैं कि मनुष्य को अपनी प्रसन्नता सम्भालने के लिये विनोद का ही आश्रय लेना पड़ता है।

यह विनोद क्या चीज है?

संस्कृत में हास्य, विनोद, नर्मोक्ति, नर्म-रसिकता इत्यादि अनेक शब्द हैं, जिनका अलग-अलग अर्थ होता है। जब हम गांधी जी के विनोदी स्वभाव की बात सोचते हैं और उनके जीवन में से विनोदात्मक प्रसंग ढूँढ़कर इकट्ठे करते हैं तब विनोद का व्यापक अर्थ करते हैं। ऊपर बताए हुए सब लक्षण उसमें होते ही हैं।

गांधी जी के विनोद में उनकी निश्चल संस्कारिता ही प्रकट होती है। प्रसंग कैसा भी हो, वे अपने चित्त का स्वास्थ्य कभी खोते नहीं थे। और जहाँ सामान्य लोग विषाद देखते हैं उसमें से भी गांधी जी विनोद का तत्त्व ढूँढ़ निकालते हैं। यही है जीवन के मांगल्य पर उनकी श्रद्धा।

इस पुस्तक में जो उदाहरण दिये गए हैं उनमें गांधी जी की हाँचिर-जवाबी हर वक्त प्रकट होती ही है। विनोद-वचन उन्हें कभी छूँछवे नहीं पढ़ते। उन्हें हम प्रत्युत्पन्नमति कह सकते हैं। उनकी प्रतिभा ही शुभाकांक्षी प्रसन्नमंगल विनोद की पोषक है।

सत्य को तनिक भी नहीं छोड़ना, यह है उनके जीवन का व्याकरण! और सेवामय जीवन में अर्हिसा को अखंड सम्भालते रहना, यह है उनकी जीवन-साधना! गांधी जी के विनोद का जो वैशिष्ट्य है वह उनके विश्वव्यापी-प्रेम, और उसी प्रेम से प्रकट होने वाली अर्हिसा के कारण है। चन्द्र प्रसंग ऐसे हैं जिनके अन्दर की खूबी को हम विनोद न कहते हुए हाँचिरजवाबी कहेंगे। गांधी जी के विनोद का वर्णन करते हुए हम कभी नहीं कह सकते कि हँसते-हँसते हम लेट पोट हो गये अथवा हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गये। ज्यादातर उनके विनोद से सुनने वाले के चेहरे पर प्रसन्नता का स्मित ही प्रकट होगा—कभी थोड़ा निःशब्द अथवा सशब्द हास्य।

अद्वाहास्य उनकी प्रकृति में नहीं था, सो नहीं। योग्य प्रसंग पर वे 'खड़खड़ाट' हँसते। लेकिन ऐसे प्रसंग बहुत कम आते हैं।

संस्कृत में नर्म रसिकता उच्चकोटि की पाई जाती है। इसी आदर्श को गांधी जी ने अपनी स्वाभाविकता से प्रस्तुत किया है। जहाँ देखें, उसमें खुश-मिजाजी पाई जाती है। जिससे पाठकों को बानन्द के साथ शुभ संस्कारिता की दीक्षा भी मिलती है।

श्री क्षितीशजी ने गांधी जी के जीवन में से प्रयत्नपूर्वक ऐसे प्रसंग इकट्ठे करके समाज की और साहित्य की उत्तम सेवा की है।

सूची

सौ नहीं, सवा सौ	११
जवानों की राय की कद्र	१२
दूसरा महात्मा खोजिये	१४
विशेष के घन्थे का क्या होगा ?	१६
पति को रिहवत	१७
बेकारी का इलाज	१७
दीनबन्धु की धोती	१८
बा जापानी स्त्री	१९
पत्रकार पीछा नहीं छोड़ेगे	२०
यह कौन है ?	२१
इतने लम्बे कान !	२१
लाड़ले पुत्र	२२
दरिद्र नारायण का प्रतिनिधि	२३
तुम्हें मन्त्री बनना है ?	२४
पेसिल की तरह मध्यम	२५
मुँह देखने की जरूरत नहीं	२६
यश मिलना कठिन है	२७
कौन बड़ा कौन छोटा ?	२७
रक्तचाप का इलाज	२८
लाठी ऊधमी लड़कों के लिए	३१
जवाहर—केन्यूट	३१
दुलहिन कहाँ गई ?	३२
नाश्ते की योग्यता	३३
टैगोर का रंग-ढंग	३५
आधे रास्ते तक	३५
दूध पीने से सींग	३६
सींग वाला आदमी	३७
सींग निकलेंगे जरूर	३८
शराबियों के प्रति दया	४०
मोचियों के गुरु	४१
मिर्च का तीखापन	४२
मद्रासी और मिर्च	४३
स्वराज्य में ४५ मिनट की देर	४३

इस उम्र में भी शादी	४४
फोटो क्या करेंगे ?	४६
भगवान से प्रार्थना करो !	४७
हार के लिए चोरी	४८
समझदार पति	४९
शेर को बकरी के साथ रहना पड़ेगा	५०
सरोजिनी की शक्ति	५०
यह कहाँ का न्याय है ?	५१
बड़े दिन का उपहार	५१
सार की वस्तु	५२
धन कपड़े, ऋण कपड़े	५३
गरीब की तलाशी	५३
दो के लिए काफी	५४
फकीर की शान	५४
स्वराज्य को घकेला	५६
मनु की परीक्षा	५७
चूड़ी भी फैशन है	५८
केलैंडर की परची	५९
मौलाना आजाद की सेवा	६०
बा से डरने वाले बापू	६१
शामत आ जाती	६२
तेरे लिए भी महात्मा	६३
बा की आज्ञा माननी पड़ेगी	६४
दोनों को लड़वा दिया	६५
पुरुष साड़ी धोयेंगे	६६
विवाह की जयन्ती	६७
घर छोड़कर भाग जाऊँगा	६७
जगदम्बा की तरह पूजूँगा	६८
किसकी सेवा के बदले भेंट मिली हैं ?	७२
कद़दू का साग और गांधी की पोल	७४
जवाहर की तरह तरंगी	७६
बा के प्रेम की रक्षा	७७
अपशकुन मगर किसके लिए ?	७८
अधिक सुन्दर दिखूँगा	७९

बनिये का लालच	८०
लूटने की शक्ति	८२
शेर या चूहा	८३
लड़कियों से भी गया-बीता	८४
वकील से बर्तन मंजवाये	८५
हुबम चलाने का अधिकार	८६
हजरिनों को देना ही देना	८६
लड़की के पास हथियार	८७
मकार गांधी	८८
महात्मा भी छुट्टी मनायेगा	८९
स्वाद मारने में भी हिसा	९१
एक लाख लड़कियाँ	९२
बंधी मुट्ठी	९३
चिड़ियाघर में रख देंगे	९३
जनरल को चप्पल	९४
पूँजीपति के लिए चरखा	९५
गाढ़ी पटड़ी से उतरी	९६
रसगुल्लों की आफत	९७
घड़ियाँ थले ही अलग हों	९८
जैसे भंगी वैसे जमींदार	९९
मेरा धर्म—सेवा	१००
सप्तर्षि बराती बनकर आए	१००
बच्चों की तरह रोते वाले	१०१
शरारती पैसिल में जान	१०५
मेहनत का फल	१०८
इतने सारे अर्जुन ?	११२
बिना चाबी का घर	११३
देचारा दिल क्या जाने !	११४
सब महात्मा बनने चले हैं	११४
मूरखों का सरदार	११७
दूटी-फूटी हिन्दी में भी सार	११७
मोहम्मद गांधी	११८
सिर दिया है नाक नहीं	११९
पत्रकारों से भगवान बचाए	१२०

शुभ गमन	१२१
तीन तीन बापा	१२२
पिता को भोजन की बात ही नहीं	१२३
समय बेकार नहीं गया	१२३
प्रोफेसर का काम नहीं	१२३
रुध्ये केले खाने को	१२४
प्रेम की चपत	१२५
गधा-सेवा-संघ	१२६
बेटा बाप को गोद लेगा	१२६
लाठी नहीं पार्टनर	१२७
अँधी कुलदेवी	१२८
खेल में भी बेर्इमानी नहीं	१३०
जेल भेजने का काम	१३१
गांधी जी का स्वयंवर	१३१
सबके लिए कुर्ता	१३१
रसोइया कृपलानी	१३३
झूबता सूरज	१३४
बिल्ली और सरदार	१३४
सूत नहीं सुधा फैनी	१३५
पन्द्रह और बीस में फर्क	१३६
मूसल से संगीत	१३७
कथा शुरू करो	१३७
बनिये की मूँछ नीची	१३८
अच्छा हुआ स्वराज्य नहीं आया	१३९
पाँव से कलम	१४०
संस्कृत पढ़ने का फल	१४१
संस्कृत की नोक-झोंक	१४२
ततो दुःखतरं नु किम्	१४३
मङ्गदार में नहीं छोड़ सकते	१४४
चक्की पीसें बात करें	१४६
चकील अच्छे फौसे	१४६
देहरादून का अक्लमंद	१४८
निरा पागल है	१४९
वीरोचित मृत्यु	१५१

सौ नहीं, सवा सौ

सन् १९४२ में महात्मा गांधी ने अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति की बैठक में कहा था कि मुझे १२५ वर्ष जीना है। उसके दूसरे दिन ही सरकार ने उन्हें आगाखाँ महल में कैद करके डाल दिया। वहाँ घटना-चक्र के वशीभूत होकर महात्मा गांधी को २१ दिन का उपवास करना पड़ा।

इस उपवास के बीच एक दिन महात्मा गांधी की तबीयत खराब हो गई और उनकी स्थिति इतनी चिन्ताजनक हो गई कि आस-पास के सभी लोग भगवान से यह प्रार्थना करने लगे कि गांधी जी किसी तरह इस कठिन अग्नि-परीक्षा में से सकुशल पार हो जायें।

स्वयं सरकार भी उनकी चिन्ताजनक स्थिति से व्याकुल हो उठी। उसने सोचा कि गांधी जी की यदि जेल में ही मृत्यु हो गई तो देश में इसकी बड़ी भयंकर प्रतिक्रिया होगी और समस्त संसार में ब्रिटिश सरकार कलंकित होगी सो अलग। इसलिए बहुत सोच-समझ कर सरकार ने यही निश्चय किया कि ऐसी अवस्था में गांधी जी को जेल से छोड़ देना ही श्रेयस्कर है। उसने वैसा ही किया।

जब गांधी जी जेल से छोड़ दिये गए तब समस्त देशवासी उनके स्वाध्य-सुधार के लिए भगवान से प्रार्थना करने लगे। उसी समय भारत के वयोवृद्ध नेता पं० मदन मोहन मालवीय जी का एक तार महात्मा गांधी के पास पहुँचा जिसमें निम्न

प्रकार से शुभ कामना व्यक्त की गई थी—

‘मानव-जाति और भारत माता की सेवा करने के लिये प्रभु आपको सौ वर्ष की आयु प्रदान करे !’

लेकिन गांधी जी तो १२५ वर्ष जीना चाहते थे। इस प्रकार की भावना वे सार्वजनिक रूप से भी कई बार प्रकट कर चुके थे। और कांग्रेस महासमिति में तो उन्होंने स्पष्ट ही इस प्रकार का उद्गार व्यक्त किया था। संभव है मालवीय जी को इसकी जानकारी नहीं रही होगी।

गांधी जी ने अपने विनोदी स्वभाव के अनुसार १२५ वर्ष जीने की अपनी इच्छा मालवीय जी के सामने प्रकट करते हुए उनके तार का जवाब इस प्रकार दिया—

‘आपका शुभेच्छा का तार मिला। लेकिन कलम के एक ही झटके में आपने मेरे जीवन के २५ वर्ष काट डाले। खैर, अब इन २५ वर्षों को आप अपनी उम्र में जोड़ लीजिये।’

जब यह तार मालवीय जी के पास पहुँचा होगा तब हंसी, प्रसन्नता और अपनी भूल की कैसी विचित्र भावना उनके मन में उठी होगी, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

जवानों की राय की कद्र

जिन दिनों गांधी जी आगाखाँ महल में नजर बन्द थे, उन्हीं दिनों की बात है।

गांधी जी ने वाइसराय को एक पत्र लिखा। वह पत्र श्रीमती सरोजनी नायडू ने भी पढ़ा। श्रीमती नायडू की यह राय हुई कि गांधी जी को यह पत्र नहीं लिखना चाहिये। इससे पहले गांधी जी वाइसराय को एक पत्र लिख ही चुके

हैं। अब उसके बाद दूसरे पत्र को क्या आवश्यकता है। बार-बार पत्र लिखने से अंग्रेज अधिकारियों के दिमाग में बढ़प्पन की वृ समा जाएगी और वे गांधी जी को अपने से हीन और अंकिचन समझने लगेंगे। इसलिये गांधी जी को इस समय शान्त होकर बैठे रहना चाहिये। अन्त में अंग्रेजों को स्वयं ही झक मारकर बापू के पास आना पड़ेगा।

गांधी जी ने सरोजिनी नायडू की राय पर विशेष ध्यान नहीं दिया।

लेकिन दूसरे दिन गांधी जी ने उस पत्र को भेजने से पहले जब दुबारा पढ़ा तब उन्हें सरोजिनी नायडू की बात सही मालूम हुई और उन्होंने वाइसराय को वह पत्र भेजने का विचार छोड़ दिया।

अकस्मात् उसी समय सरोजिनी नायडू उधर से गुजर रहीं थीं। उन्हें बुलाकर गांधी जी ने कहा—“अम्मा जान ! (गांधी जी मजाक में श्रीमती सरोजिनी नायडू को हमेशा अम्मा जान कहा करते थे) मुझे आपके सामने यह कबूल करना चाहिये कि कल मैंने वाइसराय को जो पत्र लिखकर भेजने की सोची थी उसके सम्बन्ध में मैंने पहले तुम्हारी राय को बहुत महत्व नहीं दिया था। मैंने घमंड में आकर सोचा था कि अम्मा जान तो बूढ़ी हो गई हैं।”

सरोजिनी नायडू भी कम नहीं थीं। वे कब चूकने वाली थीं ! गांधी जी अपना वाक्य मुश्किल से ही खत्म कर पाए थे कि सरोजिनी नायडू ने कहा—“हाँ, आपने अपनी जवानी के घमंड में ऐसा सोचा होगा।”

गांधी जी हँसते हुए बोले—“वह पत्र दुबारा पढ़ने के पश्चात् मैंने तुम्हारी दलील का महत्व समझा और अब मैं

अपने मन में यह मानने लगा हूँ कि मैं भले ही बूढ़ा हो रहा हूँ, किन्तु अम्माजान तो दिन-प्रति-दिन जवान होती जा रही हैं। हम तो भई 'साठी बुद्धि नाठी' (साठ साल का हो जाने के पश्चात् बुद्धि बिगड़ जाती है) कहावत को चरितार्थ करने वाले हो गए हैं इसलिये हमें जवानों की राय की कद्र करनी चाहिये। बुम्हारी राय के अनुसार अब वह पत्र वाइसराय को नहीं जाएगा।"

दूसरा महात्मा खोजिये

सार्वजनिक कार्य के लिये चंदा इकट्ठा करने में दो व्यक्ति बहुत कुशल माने गए हैं। एक तो पं० मदन मोहन मालवीय और दूसरे महात्मा गांधी।

पर चंदा इकट्ठा करने की महात्मा गांधी की पद्धति सबसे निराली थी। उन्हें उस कला का आचार्य कहा जा सकता है। वे यात्रा करते हुए या कहीं भी जब भी कभी भीड़ के सम्मुख होते तो वे चंदे के लिए अपना हाथ फैलाना कभी नहीं भूलते थे। जिस स्टेशन पर भी गाड़ी खड़ी होती, दर्शनार्थी लोगों की भीड़ जमा हो जाती और गांधी जी का चंदा माँगने का घन्धा शुरू हो जाता।

कुछ लोगों को बड़े लोगों के हस्ताक्षर इकट्ठे करने का भी शौक रहता है। जब कभी ऐसे शौकीन लोग गांधी जी के पास पहुँचते तब गांधी जी पहले से पूछ लेते कि मेरे हस्ताक्षर करने की फीस मालूम है न? और फिर हस्ताक्षर करते जाते और हर एक से पाँच-पाँच रुपये झटकते जाते।

स्त्रियों से चंदा लेने में वे और भी माहिर थे। हरिजनों

के लिए पैसे माँगते हुए जब वे देखते कि कोई महिला देना। तो चाहती है पर उसके पास पैसे नहीं हैं, तब वे सहज भाव से कहते—“कोई बात नहीं, पैसा नहीं है तो न सही, तुम्हारे गले में और हाथ में सोने के जेवर तो हैं।” और तब महिलाएँ एक-के-बाद-एक अपने गहने उतारकर उन्हें देने लगतीं। पर महात्मा गांधी तो पक्के बनिये ठहरे। वे उसी समय उन जेवरों को नीलाम कर देते और जेवरों से कई गुना कीमत वसूल कर लेते।

गरीबों के साथ-साथ श्रीमन्तों को दुहने में तो गांधी जी को कमाल हासिल था। परन्तु पूँजीपतियों से पैसे लेने में भी उन्होंने कभी अपने सिद्धान्तों की हानि नहीं होने दी। ऐसे भी अनेक अवसर आए जब वे अपने सिद्धान्तों की थोड़ी-सी भी कुर्बानी करने को तैयार हो जाते तो उनके इस झुकने से ही उन्हें लाख-लाख रुपये दान में मिल सकते थे। परन्तु गांधी जी झुके नहीं।

एक बार सनातनी हिन्दू सेठों ने गांधी जी से कहा कि हम दान देना चाहते हैं, किन्तु हमारी एक शर्त है। गांधी जी ने सोचा कि ये लोग शायद किसी विशेष रचनात्मक कार्य के लिये दान की अलग रकम देना चाहते हैं। इसलिये उन्होंने पूछा—“आपकी शर्त क्या है?”

सेठों ने कहा—“महात्मा जी, हमारी शर्त बहुत छोटी-सी है। हम केवल यह चाहते हैं कि हम जो रकम दान में दें उसमें वे हरिजनों या मुसलमानों के लिये कोई पैसा खर्च न किया जावे।”

गांधी जी के हँसते हुए बोले—“तब तो आपको इस दान को स्वीकार करने वाला कोई दूसरा महात्मा खोजना होगा।”

सेठ लोग इस उत्तर को सुनकर स्तब्ध हो गए परन्तु अपनी हँसी नहीं रोक सके।

बिशप के धन्धे का क्या होगा ?

जब गोलमेज परिषद् के सिलसिले में गांधी जी लंदन गए तब एक दिन एक बिशप उनसे मिलने आया। वह बिशप उनसे बातचीत के सिलसिले में 'विज्ञान और यन्त्र' के सम्बन्ध में चर्चा करने लगा।

बिशप का कहना था कि मशीन से मनुष्य-जाति की बहुत सेवा की जा सकती है, इसलिए मशीन की अवहेलना नहीं की जानी चाहिये। मनुष्य को जो शारीरिक श्रम करना पड़ता है यदि उससे किसी प्रकार उसको बचाया जा सके तो मनुष्य अपने बौद्धिक विकास में तथा विविध कलाओं की उपासना में एवं सांस्कृतिक कार्यों में अपना समय लगा सकता है। मशीन का मुख्य प्रयोजन शारीरिक श्रम के बोझ को किसी-न-किसी प्रकार कम करना ही है।

गांधी जी ने कहा—“सामान्य मनुष्य अपना खाली समय बौद्धिक विकास में या अन्य अच्छे कार्यों में ही लगाएगा, इसकी क्या गारण्टी है ?” ‘खाली दिमाग शैतान का घर होता है’ यह कहावत केवल कहावत ही नहीं है, बल्कि यथार्थ भी प्रतीत होती है।”

बिशप ने कहा—“मैं प्रतिदिन एक घंटे से अधिक शारीरिक श्रम नहीं करता और अपना शेष समय बौद्धिक कार्योंमें लगाता हूँ।”

गांधी जी हँसते हुए बोले—“यदि सभी मनुष्य आपकी तरह विशेष बन जाएं तो आपके विशेष के घन्थे का क्या होगा ?”

पति को रिश्वत

गोलमेज परिषद के दिनों की ही एक और घटना है। उस समय गांधी जी के ऊपर काम का इतना दोङ्गा था कि वे रात को मुश्किल से दो घंटे सो पाते थे। काम में इतना अविक व्यस्त रहने पर भी उनके मुख पर प्रसन्नता का भाव कभी कम नहीं होता था। इससे उनसे मिलने के लिए आने वालों को आश्चर्य होता था।

एक बार एक अंग्रेज-दम्पति उनसे मिलने आए। जिज्ञासा-भाव से सरलतापूर्वक अंग्रेज स्त्री ने पूछा—“मिस्टर गांधी, क्या आप कभी गुस्सा होते हैं ?”

गांधी जी ने कहा—“यह बात तो मेरी पत्नी से पूछिये। वही आपको बताएगी कि गांधी सारी दुनिया के साथ बहुत अच्छा बताव करता है, केवल मेरे साथ ही नहीं करता।”

अंग्रेज स्त्री बोली—“मेरे पति तो मेरे साथ बहुत अच्छा बताव करते हैं।”

गांधी जी ने कहा—“मुझे मानना पड़ेगा कि आपने अपने पति को भारी रिश्वत खिलाई है।”

बेकारी का इलाज

उन्हीं दिनों एक बार गांधी जी ने इंगलैंड के विद्यार्थियों

के सामने भाषण दिया। अपना भाषण समाप्त करने के पश्चात् गांधी जी ने विद्यार्थियों से कहा कि अब आप लोगों में से कोई सवाल पूछना चाहें तो पूछ सकते हैं। तब गांधी जी से तरह-तरह के सवाल पूछे जाने लगे।

एक विद्यार्थी, जिसने भारत की बेकारी और गरीबी के बारे में बहुत-कुछ सुन रखा था, पूछ बैठा—“मिस्टर गांधी, भारत के गाँवों में बहुत अधिक बेकारी है। फिर मेरी समझ में वह नहीं आता कि गाँवों के लोग कोई काम-धन्धा करने के लिए शहरों में क्यों नहीं चले जाते ?”

विद्यार्थी की इस अबोधता को देखकर गांधी जी को मन-ही-मन हँसी आई; लेकिन उन्होंने गम्भीरतापूर्वक कहा—“तुमने भारत के ग्रामीणों की बेकारी जो इलाज सुझाया है वह तुम्हारे डिटिश रॉयल कमीशन के भी दिमाग में नहीं आया था।”

दीनबन्धु की धोती

दीनबन्धु और महात्मा गांधी के बीच बड़ी प्रगाढ़ मित्रता थी। गांधी जी के सम्पर्क में आकर दीनबन्धु भी खादी पहनने लगे थे। एक बार दीनबन्धु गांधी जी से मिलने के लिए सेवाशाम गए। उस समय उन्होंने लम्बा कुर्ता और काले रंग की चौड़ी किनारी वाली धोती पहन रखी थी। ज्यों ही वे मोटर से उतरे, त्यों ही सबकी नजर उनकी धोती की तरफ गई। ऐसा लगता था कि दीनबन्धु ने किसी स्त्री की साड़ी का धोती के स्थान पर उपयोग किया है।

एक आश्रमवासी ने गांधी जी का ध्यान इस ओर खींचते हुए उनसे पूछा कि दीनबन्धु ने स्त्रियों के पहनने योग्य यह

धोती क्यों पहनी है ?

यह बातचीत चल ही रही थी कि इतने में दीनबन्धु गांधी जी के पास आ पहुँचे। उनकी ऐसी धोती को देखकर गांधी जी को भी बड़ा मज़ा आया वे धोती की ओर इशारा करते हुए बोले—“अरे चालों, यह तुमने कैसी धोती पहनी है ?”

दीनबन्धु ने पूछा—“क्यों क्या बात है ?”

गांधी जी ने कहा—‘होगा क्या ? हमारे यह साथी आश्रमवासी कहते हैं कि ऐसी धोती तो स्त्रियां पहनती हैं :’

गांधीजी के विनोद का रस लेते हुए दीनबन्धु ने सहजभाव से कहा—“मुझे अपने मोहन के पास जो आना था ।”

यह सुनते ही गांधी जी तथा अन्य आश्रमवासी ठाकर हँस पड़े और गांधी जी के मुख से निकला—“हलो, माई डालिंग ।”

दोनों बूढ़ों का यह रोमांस देखकर आश्रमवासियों के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गए ।

बा—जापानो स्त्री

जापान के अग्रगण्य कवि योन नोगुचि जब भारत आए तब उनके मन में आया कि यदि गांधीजी से बिना मिले चले गए तो भारत-दर्शन यात्रा अधूरी रह जाएगी। इसलिये वे गांधी जी से मिलने के लिए सेवाग्राम गए।

उस समय गांधी जी की तबीयत अच्छी नहीं थी। वे चार-पाई पर लेटे हुए थे। उनके मस्तक पर मिट्टी की पट्टी रखी हुई थी।

कवि का स्वागत करते हुए गांधीजी बोले—“मैं भारतवर्ष

की मिट्टी से पदा हुआ है इसलिए भारतवर्ष की मिट्टी मेरे सिर पर मुकुट की तरह विराज रही है।”

जापान के कवि ने गांधी जी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चामान्य पूछताछ की और उसके पश्चात अन्य चर्चाओं में लग गये।

इसी बीच किसी काम से कस्तूर बा गांधीजी के पास आई। गांधी जी ने कवि महोदय से उनका परिचय करवाया।

छोड़ी देर बाद ही गांधी जी हँसते हुए नोगुचि से पूछने लगे—“क्या कस्तूर बा हूबहू जापानी स्त्री जैसी नहीं लगती? बायंका वया खयाल है?”

नोगुचि निस्संकोच भाव से बोले—“हाँ, बिल्कुल मेरी माँ जैसी लगती हैं।”

पत्रकार पीछा नहीं छोड़ेंगे

एक दिन जब गांधी जी घूमने निकले तो एक पत्रकार उनके पास पहुँच गया। उसने गांधी जी से कहा—“बापू आप तो सन्त पुरुष हैं इसलिये मरने के बाद आपको तो स्वर्ग मिलेगा ही। क्यों ठीक है न ?”

गांधी जी ने कहा—“मरने के बाद मुझे स्वर्ग मिलेगा या नरक, यह तो नहीं कह सकता, किन्तु एक बात निश्चित रूप से कह सकता हूँ—और वह यह है—कि मैं चाहे स्वर्ग में जाऊँ या नरक में, परन्तु वहाँ मेरे स्वागत के लिए पत्रकारों का दल छल्लर रहेगा। वे वहाँ भी मेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे।”

यह कौन है ?

देश-विदेश के अनेक व्यंग-चित्रकारों ने गांधीजी के सम्बोध में तरह-तरह के कार्टून बनाए थे। एक दिन कार्टूनिस्ट कला, कारं एक-व्यंगचित्र बनाकर लाया और उस पर गांधी जी के दस्तखत करवाने के लिए उनके पास गया।

अपना ऐसा अनोखा व्यंग-चित्र देखकर गांधी जी ने इसने दस्तखत करने से पहले उसके ऊपर लिखा—“अरे, यह कौन है ?”

गांधी जी को उस व्यंग चित्रकार की कला के बारे में कहा कहना है, यह उक्त एक वाक्य से ही सब लोग समझ गए और सबके होंठों पर हँसी की रेखा दीड़ गई।

इतने लम्बे कान

फ्रांस के एक बहुत प्रसिद्ध व्यंग-चित्रकार भारत आए थे। दिल्ली में वे गांधी जी से मिले। और इस भेंट की यादभार के तौर पर उन्होंने गांधी जी का एक बहुत सुन्दर व्यंग-चित्र बनाया।

पेरिस विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ने यह उचित समझा कि यह चित्र गांधी जी को भेंट किया जाये और सचमुच वह चित्र लेकर वे गांधी जी के पास पहुँच गए। उस प्रोफेसर ने उस चित्र के बारे में और कलाकार की कला के बारे में गांधी जी की राय पूछी तो गांधी जी देर तक छूब ध्यान दे-

उस चित्र को देखते रहे और फिर बोले—“चित्र तो अच्छा है, लेकिन मेरे कान इतने लम्बे क्यों बनाए हैं !”

प्रोफेसर ने कहा—‘वयोंकि आपके कान हैं ही इतने लम्बे।’

गांधी जी बोले—‘मैं तो शीशे में अपना चेहरा कभी देखता नहीं। हजामत भी बिना शीशे के बनाता हूँ। इसलिए मुझे पता ही नहीं कि मेरे कान इतने लम्बे हैं।’

लाडले पुत्र

एक बार सेवाग्राम में कुछ हरिजनों ने निश्चय किया कि उपवास करके गांधी जी के खिलाफ सत्याग्रह किया जाये। हरिजन सत्याग्रही गांधी जी के पास पहुँचे और उनके सामने उन्हीं के विरुद्ध सत्याग्रह करने की इच्छा प्रकट की।

गांधी जी ने उनसे कहा—“बड़ी अच्छी बात है। आप लोग सत्याग्रह करिये। मैं आप लोगों के ठहरने की सारी सुविधा अपने आश्रम में ही कर देता हूँ, जिससे आपको किसी प्रकार की परेशानी न हो। यदि आप चाहें तो मैं अपना कुटिया भी खाली कर सकता हूँ।”

हरिजन सत्याग्रहियों ने कहा—“नहीं, हम आपकी कुटिया खाली करवा के आपको परेशान नहीं करना चाहते।”

गांधी जी बोले—‘तो आश्रम में जो भी मकान आपको पसन्द हो वह आप ले सकते हैं।’

इन सत्याग्रहियों ने कस्तूर बा की कुटिया पसन्द की।

तब गांधी जी ने बा को बुलाकर कहा—“तुम अपनी कुटिया इन लोगों को दे दो।”

बा बोलीं—“फिर मैं कहाँ रहूँगी ?”

तुरन्त गांधी जी ने कहा—“अरे तुम्हें कौन-सी ज्यादा ज़सह चाहिये ? जो थोड़ी-सी खाली जगह वव जावेगी, तुम उसी से अपना काम चला लेना । मैंने तो इन्हें यह भी कहा था कि आप लोग चाहें तो आपके लिये मैं अपनी कुटिया खाली कर सकता हूँ ।”

बा ने हँसते हुए कहा—“आप ऐसा क्यों नहीं कहेंगे ? हरिजन तो आपके लाड़ले पुत्र जो ठहरे ।”

अब गांधी जी के हँसने की बारी थी । जोर से खिल-खिलाते हुए बोले—“हाँ-हाँ, मेरे लाड़ले पुत्र तो हैं ही, लेकिन मेरे पुत्र तुम्हारे पुत्र भी तो हुए न ।”

आखिर बा ने हरिजन सत्याग्रहियों के लिये अपनी कुटिया खाली करने की बात मान ली, लेकिन गांधी जी के इस प्रेम-पूर्ण व्यवहार से उनका सत्याग्रह करने का हरिजनों का जोश ठंडा पड़ गया ।

दरिद्र नारायण का प्रतिनिधि

दक्षिण भारत में किसी सज्जन ने वर्षों तक थोड़ा-थोड़ा ऐसा इकट्ठा करके एक मन्दिर बनवाया था । उस मन्दिर में उन्होंने राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तियाँ स्थापित कीं और उन मूर्तियों को खादी के कपड़े पहनाए । साथ ही हरिजनों को भी मन्दिर में दर्शन के लिये जाने की छूट दी ।

इस मन्दिर के संस्थापक ने मन्दिर का उद्घाटन गांधी-जी के हाथों से कराया । जब गांधी जी उद्घाटन के पश्चात् मूर्तियों के पास गए तो संस्थापक ने गांधी जी को खादी का

एक थान भंट में दिया ।

यह पवित्र हश्य देखकर सबको बड़ा आनन्द हुआ और मण्डली के एक सदस्य ने गांधी जी की ओर देख कर कहा—“लोग देवता के सामने भेट धरते हैं, लेकिन यहाँ तो ऐसा लगता है कि जैसे देवता के पास पहुँचते ही स्वयं उसी की ओर से गांधी जी को यह खादी का थान भेट किया गया है ।”

संस्थापक सज्जन बोले—“भगवान को दासों का दास इसीलिये तो कहा गया है । गांधी जी जैसे दास का वह दास है ।”

गांधी जी बोले—“असलमें मुझे ईश्वर दरिद्र नारायण का सच्चा प्रतिनिधि मानता है इसलिये वह मेरी मारफत दरिद्र-नारायण के लिये कुछ-न-कुछ दान देना चाहे तो इसमें क्या आश्चर्य है !”

तुम्हें मन्त्री बनना है ?

सन् १९३७ के चुनाव में कांग्रेस ने पहली बार भाग लिया और उसे धारा-सभाओं में बहुमत प्राप्त हो गया । बहुमत ग्रहण करने के बावजूद कांग्रेस सत्तारूढ़ होकर अपना मन्त्रिमंडल बनाए या न बनाए, इस विषय पर मतभेद था । इस प्रश्न को लेकर स्वयं कांग्रेस में भी दो दल हो गए थे ।

इसी बीच गांधी जी वर्षा से मद्रास जा रहे थे । हर स्टेशन पर उनके दर्शन के लिये लोगों की भारी भीड़ इकट्ठी हो जाती थी । इस भीड़ में पत्रकार भी होते ही थे ।

जब गाड़ी विजयवाड़ा स्टेशन पर पहुँची तब एक पत्रकार

भीड़ में से बड़ी कठिनाई से अपना रास्ता बनाता हुआ गांधी-जी के पास पहुँचा। उसने गांधी जी से प्रश्न किया—“बापू, कांग्रेस पद-ग्रहण करके सरकार बनाएगी या नहीं।”

यह प्रश्न अत्यन्त विवादास्पद था और देश के राजनैतिक क्षितिज में चारों तरफ इसी प्रश्न की धूम थी। उस पत्रकार ने उसी उलझन-भरे प्रश्न के सम्बन्ध में गांधी जी की राय माँगी थी। इस प्रश्न पर गांधी जी जो भी कहते, उसका बड़ा भारी महत्व था, और गांधी जी के मुख से निकली बात को प्रचारित करके वह पत्रकार भी देश-विदेश में प्रसिद्ध प्राप्त कर सकता था।

यदि इस प्रश्न पर गांधी जी कोई उत्तर न देते तो उसका भी विशेष अर्थ लगाया जा सकता था, और उस अर्थ को लेकर राजनैतिक क्षेत्र में तरह-तरह की अटकलबाजियों का सिलसिला शुरू हो सकता था। इस विषम परिस्थिति से बचने के लिये गांधी जी ने तुरन्त पत्रकार के प्रश्न के उत्तर में पत्रकार से प्रति प्रश्न किया—“क्यों, तुम्हें मन्त्री बनना है?”

पत्रकार को इस प्रकार के प्रश्न की आशा नहीं थी। वह चला था कोई बड़ा तीर मारने, परन्तु वह तुक्का भी न लगा सका। जब आस-पास खड़े लोगों को उसने हँसते हुए देखा तो झेंपकर वह भीड़ में कहाँ अदृश्य हो गया, यह कुछ पता नहीं लगा।

पेंसिल की तरह मध्यम

एक बार एक अमरीकी पत्रकार गांधी जी से मिलने आया। गांधी जी के साथ थोड़ी देर बातचीत करने के पश्चात्

उसने गांधी जी से पूछा—“अब आपकी तबीयत कैसी रहती है ?”

गांधी जी बोले—‘इस पेंसिल की तरह—मध्यम ।’

अमरीकी पत्रकार समझा नहीं कि पेंसिल की तरह का क्या मतलब हुआ, जब वह अपनी प्रश्नसूचक हस्टिसे गांधी-जी की ओर देखता रहा तब गांधी जी ने अपने हाथ में ली हुई पेंसिल पर खुदे हुए अक्षरों की ओर इशारा किया । पेंसिल पर लिखा हुआ था—‘मिर्डिलिंग’ अर्थात् मध्यम । इस शब्द को देखते ही उस पत्रकार की समझ में आ गया कि गांधी जी ने क्यों ‘इस पेंसिल की तरह’ कहा था ।

मुँह देखने की जरूरत नहीं

अखबारों के प्रतिनिधि कैसे कुशल होते हैं और बात-चीत के माध्यम से किस प्रकार से कोई नयी खबर निकालने की होशियारी बरतते हैं, यह सभी जानते हैं । ऐसा ही एक चतुर प्रतिनिधि गांधी जी के पास मिलने के लिये आया । उसको पहले से ही यह मालूम था कि गांधी जी अपनी हजामत बनाने के लिये भी शीशे का प्रयोग नहीं करते । जब उस पत्रकार ने देखा कि गांधी जी कुछ प्रसन्न मुद्रा में हैं तो यही बात उसे याद आ गई और वह गांधी जी से पूछ बैठा—“आप शीशे में अपना मुँह क्यों नहीं देखते ।”

गांधी जी बोले—“मुझसे मिलने जितने भी लोग आते हैं उनमें से हर एक आदमी मेरा मुँह देखता ही है, फिर मुझे अलग से अपना मुँह शीशे में देखने को क्या जरूरत है ?”

यश मिलना कठिन है

गांधी जी पटना में ठहरे हुए थे, तब कुछ विदेशी यात्री उनसे मिलने के लिए आए। उन्होंने गांधी जी से बातें कीं। इसी सिलसिले में उन्होंने गांधी जी की दिनचर्या भी जान ली।

अकस्मात् उसी समय कुमारी मनु बहन गांधी उधर आ निकलीं। गांधी जी विदेशी यात्रियों से उसका परिचय कराते हुए बोले—“यह मेरी पोती है और मेरी हज्जाम भी है। यह बिना साबुन लगाए ही मेरी ऐसी अच्छी हजामत बनाती है कि उस समय मैं गहरी नींद में सो जाता हूँ।”

विदेशी यात्री खूब हँसे और उन्होंने मनु बहन को बधाई देते हुए उसे ‘कुशल हज्जाम’ की उपाधि दी।

मनु बहन बोली—“बापू जी की बात तो सच है, लेकिन हमारे यहाँ हज्जाम का दूसरा अर्थ भी होता है। जिस आदमी को कोई काम करना नहीं आता उसे हम हिन्दुस्तान के लोग कहते हैं—‘यह तो निरा हज्जाम है।’”

गांधी जी बोले—“देखा, लड़की क्या कहती है? सचमुच इस जमाने में यश मिलना बड़ा कठिन है।”

कौन बड़ा, कौन छोटा

गांधी जयन्ती का दिन था। वर्षा के महिला-आश्रम में पढ़ने वाली छात्राएँ गांधी जी को प्रणाम करने आईं। साथ में अपने हाय के कते सूत की एक घोती भी गांधी जी को भेंट

करने के लिए लाई थीं ।

इस भेंट को देखकर गांधी जी बोले—“तुम छात्राओं की इस भेंट का अधिकारी मैं नहीं, बा हैं ।”

छात्राएँ बोलीं—“आप बड़े हैं, इसलिये आपको ही यह भेंट स्वीकार करनी चाहिये ।”

‘बड़े’ शब्द का प्रयोग छात्राओं ने किसी भी अर्थ में किया हो, पर उसका सम्बन्ध उम्र के साथ जोड़कर गांधी जी ने कहा—‘नहीं-नहीं, बड़ा मैं नहीं, बड़ी तो बा है । विश्वास न हो तो स्वयं बा से ही पूछकर देख लो ।’

तब तक छात्राओं को यह पता नहीं था कि बा उम्र के हिसाब से बापू से कुछ महीने बड़ी हैं । इस प्रकार जब उन्हें यह बात पता लगी तो वे हँसते हँसते लोटपोट हो गईं ।

रक्तचाप का इलाज

एक बार एक होमियोपैथ डॉक्टर गांधी जी की परीक्षा करने आया । रोग का निदान करने से पहले होमियोपैथ डॉक्टर रोगी का इतिहास जानने का प्रयत्न करते हैं । रोगी के परिवार में कौन-सा रोग प्रचलित है, उसके माता-पिता की मृत्यु किस कारण से हुई—यह सब जानने के बाद ही के इलाज शुरू किया करते हैं । इस होमियोपैथ डॉक्टर ने भी गांधी जी से पूछना शुरू किया—“आपके पिता जी की मृत्यु किस प्रकार हुई थी ?”

गांधी जी बोले—“वे गिर पड़े थे और उन्हें भगन्दर की बीमारी थी इसलिए वे ६५ वर्ष की आयु में ही मर गए थे ।”

डॉक्टर ने पूछा—“आपकी माता जी की मृत्यु कैसे हुई

श्री ।”

गांधी जी बोले—“वे विधवा हो गईं और विधवापन के दुख से मर गईं ।”

अभीष्ट उत्तर न पाकर डॉक्टर को कुछ परेशानी महसूस हुई । लेकिन उसने सवाल पूछना जारी रखा । उसने पूछा—“आपकी स्मरण-शक्ति कैसी है ?”

गांधी जी बोले—“इतनी कमज़ोर कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते । बारीक तफ़सीलों को याद रखने की शक्ति तो मैं बिलकुल ही खो दैठा हूँ । यदि आप किसी तरह यह शक्ति मुझे दे सकें तो मैं आपका एजेण्ट बन जाऊँ और सब जगह आपका मुफ़्त विज्ञापन करता फिरूँ ।”

डॉक्टर ने सहज भाव से कहा—“यह तो ईश्वर की देन होती है । मेरी कितनी ही प्रबल इच्छा क्यों न हो कि मैं किसी तरह आपकी माँग पूरी कर सकूँ, परन्तु मैं वैसा करने में असमर्थ हूँ ।

गांधी जी बोले—“मेरी माँग के बिना ही आप अपनी ओर से मुझे यह भेंट दे दीजिये । मैं आपका बहुत आभारी होऊँगा ।”

गांधी जी इस प्रकार विनोद की धारा बहा रहे थे कि डाक्टर ने बीच में ही प्रश्न बदलकर पूछा—“आप एक बार हरिद्वार का भिशन अस्पताल देखने आए थे, तब मैंने आपको सब जगह घुमाया था । यह घटना आपको याद है ?”

गांधी जी ने उत्तर दिया—“हाँ उस अस्पताल को देखने की बात मुझे अच्छी तरह याद है ।”

डॉक्टर खुश हो गया और बोला—“तब तो आपकी स्मरण-शक्ति बहुत अच्छी है ।”

गांधी जी कहाँ चूकने वाले थे ! बोले—“लेकिन आप वहाँ

थे, यह मुझे विलकुल याद नहीं है।”

इस प्रकार विनोद-पूर्ण वातालाप कुछ देर चलता रहा।

डॉक्टर ने गांधी के रोग का निदान किया और किरण विदा लेते हुए उनसे कहने लगा—‘मेरी एक शिष्या आपके दर्शन के लिए बहुत लालायित है। वह बड़ी मधुर स्वभाव की प्रेमिल गुजराती लड़की है। आप इजाजत दें, तो मैं उसे अन्दर बुला लूँ?’

गांधी जी बोले—‘गुजराती लड़कियाँ तो वैसे ही बड़ी मधुर-भाषी और प्रेमिल होती हैं।’

डाक्टर बोला—‘नहीं महात्मा जी, सभी लड़कियाँ बड़ी मधुर और प्रेमिल होती हैं, ऐसा कहिये।

गांधी जी प्रसन्न मुद्रा में ही बोले—‘लेकिन गुजराती लड़कियों की यह खास विशेषता है।…पर देखिये, कहीं आप उसके साथ भाग न जाइयेगा।’

यह बात सुनकर विचारा डाक्टर घबरा गया और कुछ अस्त-व्यस्त होता हुआ बोला—‘बापू, आप यह कैसी बात करते हैं? अब मैं ६० वर्ष का बूढ़ा हो गया, इस उम्र में क्या मैं किसी स्त्री के साथ भाग सकता हूँ?’

पर गांधी जी रंग में थे, इसलिये बोले—‘क्यों नहीं, मैं ६० वर्ष से अधिक उम्र वाले एक आदमी को जानता हूँ जो एक फ्रेन्च लड़की के साथ भाग गया था।’

इस तरह देर तक हँसने-हँसाने के बाद जब शान्ति हुई तो गांधी जी स्वयं ही अपने निकटवर्ती लोगों से कहने लगे—‘इसी तरह मैं अपने खून का दबाव कम करता रहता हूँ।’

लाठी-ऊधमी लड़कों के लिए

एक बार श्री जवाहरलाल नेहरू अपने पिता श्री मोती खाल नेहरू के साथ गांधी जी से मिलने आए।

शाम हो चुकी थी और गांधी जी के कमरे में दीया जल रहा था। ज्यों ही जवाहरलाल जी कमरे के अन्दर घुसे कि अचानक उससे पहले ही दीया बुझ गया। दरवाजे के पास बापू की लाठी रखी हुई थी जिसे वे टहलने के समय अकसर अपने साथ रखा करते थे। अंधेरे के कारण नेहरू जी को वह लाठी दिखाई नहीं दी और वे उससे टकरा गए।

इस पर नेहरू जी को कुछ खीज हुई और वे गांधी जी से बोले—‘बापू, आप तो अहिंसा के पुजारी हैं, फिर आपने यह लाठी क्यों रखी हुई है?’

गांधी जी बोले—‘तुम्हारे जैसे ऊधमी लड़कों को सीधा करने के लिये।’

यह सुनते ही जवाहरलाल जी का गुस्सा काफूर हो गया।

जवाहर—कैन्यूट

फैजपुर कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में श्री जवाहरलाल नेहरू का चुनाव हो चुका था। उसके तुरन्त बाद ही सरदार बलभाई, जवाहरलालजी और राजेन्द्र बाबू किसी महत्वपूर्ण प्रश्न पर गांधी जी से सलाह करने के लिए सेवा ग्राम आए।

गांधी जी उस समय दो बीमारों की परिचर्या में लगे हुए थे। इन तीनों के जाने के बाद भी वे उसी काम में लगे रहे

और वहाँ से उठ कर नहीं आए। तीनों नेता यह दृश्य देख रहे थे। उनको समय दिया गया था जब उसका काफी हिस्सा बीत चुका तब सरदार बल्लभभाई ने गांधी जी को याद दिलाते हुए कहा—‘बापू, आप के पास समय न हो तो हम लोग जाएं।’

गांधी जी ने उन्हें रोकते हुए कहा—‘नहीं नहीं, आप जाते क्यों हैं। परन्तु इन बीमारों की हालत चिन्ता पैदा करने वाली हो गई है इसलिए पहले इनकी सार-संभाल का काम तो पूरा कर लूं।’

चाहे कोई भी राजनीतिज्ञ कार्य कितने ही महत्व का क्यों न हो, यदि बापू जी बीमार की सेवा में लगे हों तो वह काम उनसे छुड़वाना बहुत मुश्किल था। जवाहरलाल जी ने गांधी जी की उसी आदत पर ताना कसते हुए सरदार से कहा—‘सरदार, आप किसे कह रहे हैं? क्या हमारी यह सारी कोशिश उस राजा के कैन्यूट की तरह नहीं है जो समुद्र की लहरों को रोकने का आदेश दिया करता था?’

गांधी जी ने जवाहरलाल जी के काँग्रेस-अध्यक्ष चुने जाने की ओर इशारा करते हुए कहा—‘हम लोगों ने इसीलिये तो आपको कैन्यूट का राजा बनाया है।’

दुलहिन कहाँ गई?

एक बार गांधीजी शान्ति निकेतन गए। उस समय गुरु-देव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उनके स्वागत की खूब शानदार तैयारी की। शान्ति निकेतन कला के धाम के रूप में तो विख्यात था ही, इसलिए स्वागत के आयोजन की प्रत्येक रचना,

में शान्ति निकेतन की कला का दर्शन होना स्वाभाविक था । गांधीजी के रहने के लिए जो कमरा चुना गया था, उसे भी तरह-तरह के पुँजों और कलात्मक वस्तुओं से खूब अच्छी तरह सजाया था ।

गांधीजी को इस प्रकार की सजावट की कल्पना भी न थी वे तो आश्रम के ढंग के सीधे साधे कमरे के ही अभ्यस्त थे ।

जब गुरुदेव टैगोर गांधीजी को उस कमरे में ले गए तब उसमें प्रवेश करते ही उसकी कलात्मक सजावट को देख कर गांधीजी का विनोदी स्वभाव उभर आया वे बोले—‘यह सब क्या है ? आप मुझे यहाँ इस विवाह मंडप में कैसे ले आए हैं ?’ गुरुदेव भी विनोद में शरीक होते हुसु बोले—‘आप कवि के धाम में पदारे हैं, यह आपको याद रखना चाहिए ।’

गांधीजी ने पूछा—‘लेकिन दुल्हन कहाँ है ?’

गुरुदेव ने उत्तर दिया—‘हमारे हृदय की सदा तारुण्यवती रानी-शान्ति निकेतन—आपका सहर्ष स्वागत करती है ।’

गांधीजी बोले—‘मेरे जैसे गरीब, बूढ़े और पोपले मुँह वाले आदमी को एक बार देखने के बाद दुबारा तो वह शायद देखना पसन्द भी नहीं करेगी ।’

‘नहीं-नहीं’—गुरुदेव बोल उठे—‘हमारी रानी तो सत्य की पुजारिन है और वह सदा सत्य की पूजा ही करती आई है ।’

गांधीजी बोले—‘ऐसी बात है । तब तो मेरे जैसे बूढ़े और पोपले मुँह के आदमी के लिए भी गुन्जायश है ।’

नाश्ते की योग्यता

जब गांधीजी शान्ति निकेतन में आए थे तभी की बात है । रात को देर तक शान्ति निकेतन के शिक्षकगण उनसे बात-

करते रहे । सबेरे उठकर वे सब लोग नियमानुसार श्रम-साधन करने चले गए ।

लौट कर उन्होंने देखा कि उनके नाश्ते से लिए फल आदि सब काटकर अलग-अलग थालियों में सजाकर तैयार रखा है । उन सबको हरानी हुई कि हम सब लोग तो काम पर गए थे, हमारे पीछे यह काम किसने किया ?

काका कालेलकर भी उन दिनों शिक्षाशास्त्री के रूप में शान्ति-निकेतन में ही काम कर रहे थे । उन्होंने गांधीजी से पूछा—‘यह सब किसने किया ?’

गांधीजी बोले—‘क्यों ? मैंने किया ।’

संकोच के भार से दबते हुए काका कालेलकर ने उनसे कहा—‘आपने यह सब क्यों किया ? क्या यह हमारे लिए शोभा की बात है कि आप हमारे नाश्ते की तैयारी का कष्ट करें, और हम सब आराम से बैठकर खाएं !’

गांधीजी बोले—‘उसमें हर्ज क्या है ?’

काका कालेलकर ने कहा—‘परन्तु आप जैसों की सेवा लेने की योग्यता तो हम में होनी चाहिये ।’

गांधीजी ने कहा—‘यह योग्यता तो आप में है ।’

काका साहब स्तब्ध होकर गांधीजी की ओर देखते रहे । तब गांधीजी ने हँसते हुए कहा—‘तुम सब लोग वहाँ काम पर गए हुए थे और नाश्ता करके फिर काम करने चले जाओगे । मेरे पास और कोई काम नहीं था इसलिए मैंने यह काम करके अपने खाली समय का सदुपयोग किया और तुम्हारा समव बचा दिया । जहाँ तक योग्यता का प्रश्न है, वहाँ तक एक घंटे का परिश्रम करके आप लोगों ने ऐसा नाश्ता पाने की योग्यता तो हासिल कर ही ली है ।

‘योग्यता’ शब्द का गांधीजी ऐसा अथ लगाएँगे, वह किसी ने कल्पना नहीं की थी।

टैगोर का रंग ढंग

सन् १९३० में कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर गांधी से मिलने साबरमती आश्रम गए। कुछ देर बातचोत के पश्चात् टैगोर बोले—‘महात्मा जी, अब मेरी उम्र ७० वर्ष की हो गई है, इसलिए मैं आपसे काफी बड़ा कहा जाऊँगा न ?’

गांधीजी बोले—‘यह तो सच है परन्तु एक बहुत बड़ा फर्क भी है। वह यह कि मेरे जैसा ६० वर्ष का बूढ़ा व्यक्ति नाच नहीं सकता है।’

टैगोर बोले—यह भी सच है। ऐसा लगता है कि आप फिर ‘अरेस्ट व्यौर’ (सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिए जाने पर जेल में मिलने वाला आराम) की तैयारी कर रहे हैं। मुझे सरकार इस प्रकार के आराम का मौका दे तो कितना अच्छा हो !’

गांधीजी बोले—‘इस आराम के लायक तुम्हारा रंग-ढंग ही नहीं है, तो बेचारी सरकार ही क्या करे ?’

भारत के इन दो महान् पुरुषों की यह विनोद-वार्ता सुनने वाले आसपास के सभी लोग हँसी से लोट-पोट हो गए।

आधे रास्ते तक

१९३१ में गांधी जी इंग्लैड में किंग्सलेहाल में ठहरे थे। उनके हस्ताक्षर लेने वाले वहाँ भी उनका पीछा नहीं छोड़ते थे।

ऐसे लोगों की भीड़ लगी हो रहती थी ।

एक दिन नौकादल का एक रिटायर्ड सैनिक आया । मीरा बहन के पिता उस समय नौसेना में एडमिरल थे और वह सैनिक उन्हीं के नीचे काम करता रहा था । वह सैनिक गांधी जी के विचारों का अत्यन्त प्रशंसक था और उनसे मिलने को आतुर था ।

गांधीजी के पास आकर वह बोला—‘मुझे हथियारों की लड़ाई फसन्द नहीं है । लेकिन मुझे आपके लड़ने का तरीका जच्छू लगता है । हथियारों की लड़ाई में हिस्सा लेने के बजाय उसका विरोध करके मैं जेल जाना पसन्द करूँगा ।’

गांधीजी उसकी बात सुनते रहे और कुछ बोले नहीं । जब वह हस्ताक्षर लेकर विदा होने लगा तब गांधीजी ने उससे पूछा—‘तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?’

सैनिक बोला—‘साहब मेरे आठ बच्चे हैं । चार लड़के और चार लड़कियाँ ।’

गांधीजी बोले—‘मेरे भी चार लड़के हैं । इसलिये मैं आधे रस्ते तक तो तुम्हारे साथ दौड़ ही सकता हूँ ।’

दूध पोने से सींग

भोजन के सम्बन्ध में तरह-तरह के प्रयोग करने में गांधीजी की बहुत रुचि थी । इस सम्बन्ध में कोई और व्यक्ति प्रयोग करता, तो उसका नतीजा जानने के लिए भी वे बहुत इच्छुक रहते थे ।

एक बार गांधीजी को पता चला कि मद्रास प्रान्त में एक सज्जन वर्षों से कच्चा अन्न खाने का प्रयोग कर रहे हैं । उनके प्रयोगों और अनुभवों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए

गांधी जी ने उनको आश्रम में बुलाया ।

वे अपने प्रयोग और अनुभव गांधी जी को सुनते रहे और गांधी जी चुपचाप सुनते रहे । उन सज्जन ने आहार के रूप में कच्चे अन्न की बहुत तारीफ की और पके अन्न की सर्वथा त्याज्य बताया । पके अन्न के साथ ही उन्होंने दूध को भी हानिकारक बताया । वे यहाँ तक कह गए कि दूध जीने के मनुष्य की बुद्धि भी पशुओं जैसी हो जाती है ।

गांधी जी बकरी का दूध पिया करते थे इसलिये उन्होंने अपने हाथ की उंगलियों को सिर पर रखकर सींग-सा बनाते हुए कहा—“अरे, देखिये, देखिये मेरे सिर पर भी बकरी के सींग निकल आए हैं ।”

सींग वाला आदमी

सींग सम्बन्धी और भी कई प्रसंग हैं ।

सुप्रसिद्ध पत्रकार लुई फिशर जब दूसरी बार गांधी जी से मिलने आए तब उनका स्वागत करते हुए गांधी जी बोले—“अच्छा फिशर साहब, आप दुबारा भी आ पहुँचे । लेकिन देखिये, इन चार वर्षों में मैं कोई अधिक देखने लायक तो हो नहीं गया हूँ ।”

फिशर बोले—“मैं आपसे अलग अपनी राय रखने की हिम्मत कैसे कर सकता हूँ ?”

उसके बाद गांधी जी जब यात्रा में चले तो फिशर भी उनके साथ हो लिए । मूसलाधार वारिश हो रही थी, फिर भी हर स्टेशन पर लोग हजारों की संख्या में गांधी जी के दर्शनों के लिये आते और आगे बढ़ने में एक-दूसरे से होड़

लगाते हुए 'गांधी जी की जय' के नारों से आकाश गुंजा देते। एक स्टेशन पर १०, १२ वर्ष के दो लड़के बारिश में भी गते हुए गांधी जी की खिड़की के सामने खुशी से नाचने लगे और 'गांधी जी, गांधी जी, गांधी जी,' कहकर किलकारियाँ भरने लगे।

बच्चों को इस प्रकार खुशी से नाचते और किलकारियाँ भरते देखकर गांधी जी को भी आनन्द आ गया और वे मुस्कराने लगे। तब फिशर ने उनसे पूछा—“ये बच्चे आपके बारे में क्या सोचते होंगे?”

गांधी जी दोनों कनपटियों पर मुट्ठियाँ बांधकर और अंगूठे ऊँचे उठाकर कहने लगे—“ये बच्चे यहीं सोचते होंगे कि गांधी नाम का एक ऐसा जानवर है जिसके सिर पर सींग तो है, लेकिन शक्ल उसकी आदमी की है।”

सींग निकलेंगे जरूर

एक प्रसंग और—

गांधी जी मसूरी में ठहरे हुए थे। तब जवाहरलाल जी और मौलाना आज़ाद किसी महत्वपूर्ण विषय पर उनसे परमर्श करने के लिये मसूरी आए। गुरुकुल कांगड़ी के प्राच्यापकों का भी एक डेपूटेशन गुरुकुल सम्बन्धी किसी समस्या पर गांधी जी से परामर्श करने के लिए वहाँ आया हुआ था। परन्तु महत्वपूर्ण राजनीतिक चर्चाओं में ही सारा समय बीत जाने के कारण गुरुकुल के डेपूटेशन को गांधी जी से भेंट का अवसर नहीं मिल पा रहा था। जब प्रतीक्षा करते हुए उन्हें तीसरा दिन हो गया तब गांधी जी ने उनको कहलवाया कि

ज्यों ही मैं मौलाना आज्जाद और जवाहरलाल जी से बात करके बाहर निकलूँ, त्यों ही गैलरी में आप मुझे मिल जाएं और वहाँ से आप मेरे साथ हो लें, अन्यथा मुलाकातियों के रूप में बड़े आदमियों की भीड़ के कारण शायद आज भी मौका न मिले।

गांधी जी ज्यों ही बाहर निकले, गुरुकुल का डेपूटेशन गैलरी ढे ही उनके साथ हो लिया। एक बंगाली दम्पति भी इस डेपूटेशन के साथ हो गए। उनकी अभी हाल में ही शादी हुई थी और वे मसूरी की सैर करने आए थे। उन्होंने सोचा, मसूरी की सैर के साथ गांधी जी का आशीर्वाद भी बटोर ले चलें।

गांधी जी ने उनको पीछे आते देखकर गुरुकुल के प्राव्याप्तों से पूछा—“क्या ये लोग भी आपके साथ हैं?”

जब उन्हें असलियत बताई गई तो सहसा वे चलते-चलते मुड़े और उस दम्पति को सम्मोहित करके पूछने लगे—“क्यों मेरे सिर पर सींग हैं क्या?”

यह इस बात का द्योतक था कि इतनी अधिक व्यस्तता के कारण वे थके हुए थे और इस प्रकार आशीर्वाद प्राप्त करने के इच्छुकों द्वारा परेशान किये जाने से बचना चाहते थे।

गांधी जी के इस प्रश्न को सुनकर बंगाली सज्जन तो कुछ नहीं बोले, परन्तु किशोर अवस्था वाली उनकी नववधू तुरन्त बोल उठी—“नहीं, अभी तो आपके सिर पर सींग नहीं हैं।”

यह उत्तर सुनकर स्वयं गांधी जी खिलखिलाकर हँस पड़े और गुरुकुल के प्राव्याप्तों की ओर मुखातिब होकर कहने लगे—‘देखो यह लड़की समझती है कि अभी तो नहीं, किन्तु कुछ दिनों बाद जरूर मेरे सींग निकल आएँगे।’

शराबियों के प्रति दया

गांधी जी ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम में शराबबन्दी को बहुत महत्व दिया था। शराब और ताड़ी की दुकानें बन्द कराने के लिए धरना देने का सिलसिला भी उन्होंने चलाया था। वे कहा करते थे, 'मुझे घड़ी-भर के लिये हिन्दुस्तान का राजा बना दिया जाये तो मैं सबसे पहला कानून शराबबन्दी के लिए बनाऊँगा।' यह इस बात की निशानी है कि जनता को शराब के विनाशकारी नशे से बचाने के लिए वे कितने अधीर थे।

परन्तु विदेशों में शराब पीना वहाँ की सम्यता और उनके जीवन का अंग बन गया है। इसीलिये वहाँ के लोग शराब-बन्दी के बारे में गांधी जी के इतने बड़े रूख को और उनके शराब बन्दी के आन्दोलन को कभी नहीं समझ सके। आजकल प्रत्येक चीज में विदेशों की नकल करने में होशियार हमारी सरकार और तथाकथित शिक्षित और सम्पन्न लोग भी शराबबन्दी के आन्दोलन को तूल देना पसन्द नहीं करते।

गोलमेज परिषद् के समय जब गांधी जी 'आँसूसफ़ोर्ड विश्वविद्यालय' देखने गए तब उनसे एक विद्यार्थी ने पूछा— "शराब पीने वालों के प्रति आप इतने निर्दय क्यों हैं?"

गांधी जी सहज भाव से बोले—“जो लोग शराब पीने के असर के शिकार हो गए हैं, उनके प्रति मेरे मन में ज्याह दबा है, इसलिये।”

मोचियों के गुरु

दक्षिण अफ्रीका की जेल में तथा टाल्सटाय-फार्म में गांधी जी ने जूते और चप्पल बनाने का तथा उनकी मरम्मत करने का अच्छा अभ्यास किया था। एक दिन गांधी जी को पता लगा कि वर्धा के सत्याग्रह-आश्रम से सम्बन्धित चर्मालिय के मोची अच्छी चप्पल नहीं बना सकते, इसलिये गांधी जी ने चप्पल बनाने का प्रत्यक्ष पाठ सिखाने के लिये उनको मगन-बाड़ी में बुलाया।

मोची लोग अपने औजार और चमड़े के टुकड़े लेकर गांधी जी के पास आकर बैठ गए और गांधी जी उनको समझाने लगे कि 'यह पट्टी इस तरह आड़ी लगानी चाहिये और टाँके इस जगह लगाने चाहिये।'

जब गांधी जी मोचियों को समझा रहे थे, तभी सरदार बहलभ भाई, राजेन्द्र बाबू, कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य तथा कुछ केन्द्रीय मन्त्री आ पहुँचे और वे वहीं खड़े होकर यह नाटक देखने लगे। जब गांधी जी वहाँ से नहीं हिले तो उन सबके चेहरों पर अधीरता प्रकट होने लगी। उस अधीरता को ताढ़कर गांधी जी बोले—'मैं छठे चौमासे भी इनको इतना-सा समय दूँ तो आपको ईर्ष्या होती है? अच्छे चप्पल बनाना भी कारीगरी का काम है। आप लोग देखिये कि अच्छे चप्पल कैसे बनते हैं।'

मोची लोग अपने चारों ओर इतने बड़े-बड़े नेताओं को खड़ा देखकर विचलित हो गए और अपने-आप ही एक के बाद एक उठकर बाहर चले गए। अब वे बाहर बैठकर

अपना काम करने लग। लेकिन उनकी ठोकाठाको की आवाज आती रही।

नेताओं में इस बात से असन्तोष फैला कि इतनी गम्भीर चर्चा चल रही है और उसी समय यह ठोका-पीटी का शोर चल रहा है। जब एक नेता से नहीं रहा गया तब उसने एक आश्रमवासी से उन मोचियों को वहाँ से हटा देने को कहा।

आश्रमवासी को मोचियों से कहने के लिये उठता देख गांधी जी उसे रोकते हुए बाले—“मोची जिस जगह काम करते हों उसके पास बैठकर भी हम अपने काम कर सकें, यह आदत हमको डालनी चाहिये। और फिर यह ग्राम-उच्छोष संघ का कार्यालय है, इसका पता इन लोगों को कैसे लगेगा?”

मिर्च का तीखापन

सूरत के पाटीदार आश्रम में जब गांधी जी पहले-पहल गए तब उनके स्वागत के लिये जो तोरण द्वार बनाया गया था उसमें साग-भाजी लटकाई गई थी। उस तोरण के बीचोंबीच एक बड़ी लाल मिर्च लटकी हुई थी।

आश्रम में प्रवेश करते ही इस दृश्य को देखकर गांधी जी बोले—“मुझे ऐसा लगता है, जैसे मैं अपने ही आश्रम में आ गया हूँ।”

उसके बाद कुछ देर तक उस तोरण और साग-भाजी के सम्बन्ध में बातचीत चलती रही। एक सज्जन कहने लगे—‘बापूजी, साग-भाजी में जैसी सादगी और मिठास है, वह तो आप में है ही, परन्तु मिर्च भी तो साग-भाजी में शामिल है, उस मिर्च का तीखापन आप में नहीं है।’

गांधी जी बोले—“मुझमें मिच-जैसा तीखापन है या नहीं
यह तो आपको तभी पता चलेगा जब आप मेरा स्वाद
चखेंगे।”

मद्रासी और मिच

जे० सी० कुमारप्पा ‘यंग इण्डिया’ का सम्पादन किया
करते थे। उनके लिखने की शैली में कुछ करारापन होता था
इसलिये अनेक पाठकों को उनके लेखों के तीखेपन की शिका-
यत थी।

एक दिन एक सज्जन गांधी जी का ध्यान इस बात की ओर
खींचते हुए बोले—“वापू, अँहिसा की दृष्टि से कुमारप्पा का
अपने लेखों में इतना तीखापन नहीं लाना चाहिये और उनमें
कुछ नर्मी होनी चाहिए।”

गांधी जी बोले—“कुमारप्पा मद्रासी हैं इसलिये] उनकी
कलम में मिच का थोड़ा तीखापन हो तो हमें उसे सहन कर
लेना चाहिये।”

स्वराज्य में ४५ मिनट की देर

गांधी जी को अपना हर काम समय पर करने की आदत
थी और वे औरों से भी ऐसी ही आशा करते थे। एक बार गांधी
जो एक परिषद् में शामिल होने के लिए ठीक समय पर पहुंचे,
परन्तु परिषद् का काम तब तक शुरू न हो सका जब तक एक
प्रमुख लोकप्रिय नेता वहाँ नहीं आए। सब लोग उनकी प्रतीक्षा

करते रहे ।

आखिर ४५ मिनट बाद वे नेता आए तो गांधी जी उनसे कहने लगे—“अगर हम सब इसी तरह काम करेंगे तो मुझे लगता है, स्वराज्य आने में भी ४५ मिनट की देर हो जावेगी ।”

उसके बाद वे नेता फिर कभी विलम्ब से नहीं आए ।

इस उम्र में भो शादी

सन् १९४७ में दिल्ली में एशियाई देशों के प्रतिनिधियों को एक कान्फ्रेस हुई थी, उसमें तिब्बत के प्रतिनिधि भी आए थे ।

एक दिन जब गांधी जी अपना दोपहर का भोजन कर रहे थे तो तिब्बत के प्रतिनिधि उनसे मिलने के लिए आए । उन सब प्रतिनिधियों ने लम्बे रेशमी चोगे पहन रखे थे । उनके बाल ढंग से सँभाले हुए थे और उनके कानों में सोने के आभूषण थे । वे सब गांधी जी के लिए कुछ-न-कुछ भेट लाए थे ।

उनका स्वागत करते हुए गांधी जी ने अंग्रेजी में कहा—“मैं तिब्बती भाषा नहीं जानता और आप हिन्दुस्तानी भाषा नहीं जानते, इसलिए खेद है कि मुझे अंग्रेजी में बोलना पड़ेगा । आपमें से जो भाई अंग्रेजी जानते हों वे आगे आ जाएँ ।”

दो प्रतिनिधि आगे आए और बोले—“हम अंग्रेजी के दुभाषिये हैं ।”

गांधी जी बोले—“तब तो बहुत अच्छी बात है । आप इन सबसे कहिये कि ‘मैं आप सबका स्वागत करता हूँ, लेकिन कुछ देने में असमर्थ हूँ । मनुष्य को भला होना चाहिये, दानशील होना चाहिये और सत्यवादी होना चाहिए । किन्तु मैं अपने-

आप को भला कैसे कहूँ, क्योंकि मैं अकेला खा रहा हूँ, और दानशील भी कैसे हूँ, क्योंकि मैं आपको कुछ दे भी नहीं पा रहा हूँ। अपने जोख्य पदार्थों में से मैं आपको कुछ दे भी दूँ तो उसमें न आपकी रुचि होगी, न की तृप्ति। अलबत्ता मैं सत्यवादी जरूर हूँ, क्योंकि मैंने वचन दिया था कि समय की कितनी भी तंगी क्यों न हो, किन्तु मैं तिब्बत के प्रतिनिधियों से अवश्य मिलूँगा। मैं चाहे खा रहा होऊँ या सो रहा होऊँ, जिस भी किसी हालत में होऊँ, तिब्बत के प्रतिनिधियों के लिए मेरे द्वार सदा खुले हैं।' आप मेरी बात का तिब्बती में अनुवाद करके अपने साधियों को समझाइये। परन्तु आप मेरी बात में छिपे विनोद को समझ गए हैं न? यदि विनोद को न समझे हों तो सब गुड़ गोबर हो जावेगा।'

गांधीजी के इस विनोद का आनन्द लेने के पश्चात् तिब्बत के प्रतिनिधि उन्हें अपनी भेंटें देने लगे। इन भेंटों में मलमल की दो बारीक पट्टियाँ भी थीं? गांधी जी ने पूछा—'ये पट्टियाँ कहाँ बनी हैं?"

प्रतिनिधियों ने बताया—“चीन में।”

तब गांधी जी ने पूछा—“चीन में इनकी बुनाई हुई है या इनका सूत भी वहीं काता गया है?”

प्रतिनिधियों ने कहा—“इनका सूत भी चीन में ही काता गया है।”

गांधी जी बोले—“चीन की वह कौन-सी लड़की है जो इतना बारीक सूत कात सकती है? आप लोग उसे खोजकर ले आइये। हालाँकि अब मेरी उम्र शादी की नहीं रही, लेकिन इतना बारीक सूत कातने वाली लड़की के साथ तो मैं अब भी शादी करने को तैयार हूँ।”

यह ध्यान रखना चाहिये कि तब तक चीन में साम्यवादी शासन नहीं आया था, चीन भारत के स्वतन्त्रता-आनंदोलन का समर्थक ही नहीं था, बल्कि च्यांगकाई शेक ने भारत को आजादी दिलवाने के लिए ब्रिटिश और अमेरिकी नेताओं से मिलकर यथासंभव प्रयत्न भी किया था। इसलिये तब तक भारत और चीन परस्पर मित्र थे।

गांधी जी की उक्त बात सुनकर जब सब प्रतिनिधि हँसने लगे तब गांधी जी ने स्पष्ट करते हुए इतना और जोड़ा—“अब तक मैं समझता था कि चीन में लड़कियाँ बुनती ही हैं, कातती नहीं। लेकिन अब मैं देख रहा हूँ कि कैसे कातना भी बहुत अच्छा जानती हैं।”

फोटो क्या करेंगे ?

उक्त भेंट के समय की ही बात है। एक प्रतिनिधि ने गांधी जी से कहा—“आपकी उम्र को देखते हुए आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।”

गांधी जी बोले—“क्या करूँ ? सभी मुझसे ईर्ष्या करते हैं। दों इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरा स्वास्थ्य ठीक है।”

प्रतिनिधि बोला—“आप अपना एक फोटो दीजिये।”

गांधी जी ने होठों पर से अपना हाथ हटाते हुए कहा—“देखिये, अब मेरे मुँह में दाँत भी नहीं रहे। इस पोपले मुँह वाले आदमी का फोटो लेकर आप क्या करेंगे ?”

प्रतिनिधि बोला—“नहीं-नहीं, फोटो तो आप जरूर दोंजिये, हमारे देश में सभी लोग आपको जानते हैं और आपके प्रति बहुत आदर का भाव रखते हैं।”

गांधी जी बोले—“तब तो फोटो की बिल्कुल जरूरत नहीं है।”

प्रतिनिधि ने अपना आग्रह नहीं छोड़ा। अन्त में गांधी जी ने कहा—“अच्छा, जब आप दूसरी बार भारत आएं और मैं जिन्दा होऊँ तो मेरा फोटो ले जाइयेगा।”

गांधी जी के इस कथन से ऐसा आभास होता है कि जैसे वे भविष्य का दर्शन कर रहे थे, क्योंकि उसके पश्चात् न तो वे ही जिन्दा रहे और न वह तिब्बत ही जिन्दा रहा, क्योंकि साम्यवादी चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया।

भगवान से प्रार्थना करो

एक बार श्रीपाद जोशी, जो राष्ट्रभाषा-प्रचार के अच्छे कार्यकर्ताओं में थे, गांधी जी से मिलने आए। उनकी नई-नई शादी हुई थी इसलिये वे गांधीजी का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते थे। जब श्रीपाद जोशी अपनी पत्नी के साथ गांधी जी के पास पहुँचे तब कनु गांधी और उनकी पत्नी आभा बहन भी गांधीजी के पास ही बैठे हुए थे। कनु और आभा, गांधी जी के पुत्र और पुत्र-वधू के समकक्ष थे।

कुछ देर तक श्रीपाद जोशी के साथे उनके विवाह के सम्बन्ध में बातचीत चलती रही। उसके बाद किसी ने उनकी पत्नी को लक्ष्य करके मजाक में कहा—“एक बात अच्छी है कि तुम्हें तकलीफ देने के लिए तुम्हारे सास-ससुर नहीं हैं।”

गांधी जी आभा बहन के ससुर थे इसलिये कनु गांधी ने आभा बहन की ओर संकेत करते हुए कहा…‘केवल तुम्हीं को यह लाभ नहीं मिलता। क्यों, ठीक है न ?’

गांधी जी अपनी पुत्रवधू से कहने लगे—“तुम भगवान से प्रार्थना करो कि मेरे सास-ससुर जल्दी-से-जल्दी मर जाएं।”

आभा बहन बोली—“पर मेरी प्रार्थना से ऐसा होने वाला थोड़े ही है !”

हार के लिए चोरी

गांधी जी जिन दिनों पूना के ‘निचर क्योर किलनिक’ (प्राकृतिक उपचारगृह) में रह रहे थे, उन दिनों की बात है। उनसे मिलने के लिए उपर्युक्त श्रीपाद जोशी की पत्नी आई। लेकिन किसी ने उन्हें भीतर नहीं जाने दिया। आखिर डेढ़ घंटा प्रतीक्षा करने के पश्चात् उनको भीतर आने का अवसर मिला। अन्दर आकर गांधी जी को प्रणाम करके वह बोली—‘आपने भी कैसा सस्त पहरा लगा रखा है। मैं कब से भीतर आने का प्रयत्न कर रही थी, परन्तु कोई भीतर आने ही नहीं देता था।’

गांधी जी बोले—‘लेकिन अब तो तुम आ ही पहुँची। बड़ी होशियार और धैर्यशाली मालूम होती हो। अपनी इस होशियारी और लगन का जीवन में जितना उपयोग करोगी उतनी ही सुखी रहोगी। साथ ही, हमेशा अपनी ज्ञान-वृद्धि का प्रयत्न भी करते रहना।’

इतने में ही गांधी जी की नजर उसके गले के हार पर पड़ी, तो बोले—“अरे यह क्या है? हमारा श्रीपाद तो बहुत मरीब है, परन्तु तुम तो उड़ाऊ मालूम होती हो। तुम क्या पैसे बाली हो? धनी लोग किस तरह पैसा जमा करते हैं यह जानती हो? वे सब चोरी करके धनी बनते हैं।”

फिर थोड़ी देर बाद हँसकर कहने लगे—‘मैं बहुत गरीब हूँ, किसी दिन तुम्हारा यह सोने का हार चुराने के लिए मुझे तुम्हारे घर में सेंध लगानी पड़ेगी ।’

समझदार पति

जिन दिनों गांधी जी दक्षिण भारत में हरिजनों के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए यात्रा कर रहे थे, उन दिनों की बात है। एक बहन अपने गहनों की भेंट देने के लिए उन्हें अपने घर बुलाकर ले गई।

वहाँ से लौटते समय पड़ोस की एक दूसरी बहन ने भी अपनी सोने की चूड़ियाँ गांधी जी के हाथ पर रख दीं। उस समय उस बहन के पति से गांधी जी ने पूछा—‘आपको मालूम है न कि आपकी पत्नी ने सोने की सारी चूड़ियाँ मुझे दे दी हैं। आपकी पत्नी ने ऐसा करते हुए आपकी सम्मति ले ली थी न?’

पति महोदय बोले—“जी हाँ, मेरी सम्मति उसने ले ली थी, परन्तु न भी लेती तो कोई हर्ज न था। यह चूड़ियाँ उसकी हैं, स्त्री-घन पर उसका पूरा अधिकार है, मैं उसे रोकने वाला कौन?”

गांधी जी बोले—“मगर सब पति इतने समझदार नहीं होते, आपकी उम्र क्या है?”

पति महोदय ने कहा—“तीस वर्ष !”

गांधी जी ने कहा—“आपकी उम्र में मैं इतना समझदार नहीं था। मुझमें यह समझदारी बाद में आई।”

शेर को बकरी के साथ रहना पड़ेगा

एक बार गांधी जी ने भारत की जनता के सामने ऐसा कार्यक्रम रखा जिसका सच्चे दिल से पालन करने पर, गांधी-जी के कथनानुसार, एक ही वर्ष में भारत को स्वराज्य मिल सकता था।

भारत में अंग्रेजी के कई ऐसे अखबार निकलते थे जो अत्येक बात में अंग्रेजों का पक्ष लेते थे। एक प्रसिद्ध अखबार तो अंग्रेजों के स्वामित्व में ही निकलता था इसलिए उसका पूरी तरह अंग्रेज-समर्थक होना स्वाभाविक ही था। एक दिन उसी अखबार का एक प्रतिनिधि अत्यन्त चिन्तित होकर गांधी जी से पूछने लगा—“आपके कार्यक्रम के अनुसार यदि सचमुच ही एक वर्ष में भारत को स्वराज्य मिल गया तो अंग्रेजों का क्या होगा?”

गांधी जी बोले—“होगा क्या? शेर को बकरी के साथ रहना पड़ेगा।”

सरोजिनी की शक्ति

दो अक्टूबर को गांधी जयन्ती मनाई जाती है। सन् १९४७ की बात है कि गांधी जी को उनके जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में एक थैली भेंट की जाने वाली थी। वह थैली गांधी जी के पास रखी हुई थी।

रूपयों से भरी हुई उस थैली को देखकर श्रीमती सरोजिनी नायडू बोलीं—“बापू, अगर यह थैली मैं आपके पास

से उठाकर भाग जाऊँ, तो आप क्या करें ?”

गांधी जी बोले—“मैं जानता हूँ, तुममें ऐसा करने की शक्ति है। मैंने आज तक तुम्हारी क्षमता में अविश्वास नहीं किया तो अब कैसे कर सकता हूँ ?”

यह कहाँ का न्याय है

एक बार सेवाग्राम में आश्रमवासी दो अवतूबर को उनके जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में गांधी-जयन्ती मना रहे थे। बासू और बा उस समय वहीं थे। कुछ लोग बां और बापू को देने के लिए भेंट भी साथ लाए थे। कुछ बहनें बा को देने के लिये एक साड़ी लाई थीं।

साड़ी को अपने पास रखा हुआ देखकर गांधी जी बोले—“अरे, तुम लोग मुझे साड़ी पहनाना चाहती हो ?”

बहनें बोलीं—“नहीं बापू, यह साड़ी तो बा के लिये है ?”

गांधी जी ने हँसते हुए कहा—“वाह, यह भी खूब रही है जयन्ती मेरी और भेंट बा को ? यह कहाँ का न्याय है ?”

बड़े दिन का उपहार

जब गांधी जी गोलमेज परिषद् से लौटकर भारत आए, तब उन्हें पता लगा कि जवाहर लाल जी और सीमान्त गांधी स्थान अब्दुल गफ्फार खाँ गिरफतार कर लिए गए हैं।

गांधी जी को यह खबर २८ दिसम्बर को सुनाई गई। तब उन्होंने छूटते ही कहा—“हमारे वाइसराय लार्ड बिलिंस्टॉन

ईसाई हैं न, इसलिए उन्होंने बड़े दिन (क्रिसमस) की भेट के रूप में हमें यह ईसा इयत के अनुकूल ही उपहार दिया है ! ”

सार की वस्तु

जब गांधी जी गोलमेज परिषद् में भाग लेने के लिए इंग्लैण्ड जा रहे थे, तब की बात है। उसी जहाज पर एक अंग्रेज भी था जो गांधी जी के विचारों का विरोधी था और अक्सर उनका मजाक उड़ाया करता था।

एक दिन उस अंग्रेज ने गांधी जी के बारे में व्यंगपूर्ण कविता लिखी और स्वयं अपने हाथ से गांधी जी को दे गया।

गांधी जी ने उस कविता वाले कागज को फाढ़कर कचरे की टोकरी में डाल दिया, लेकिन उसमें लगी हुई पिन निकाल-कर अपनी डिब्बी में रख ली।

अंग्रेज ने देखा कि गांधी जी को चिढ़ाने की जो तरकीब सोची थी वह बेकार जा रही है, इसलिये बोला—“अरे गांधी वह कविता पढ़कर तो देखो, उसमें आपके लिए बहुत-कुछ सार की बात लिखी हुई थी।”

डिब्बी में रखी पिन की ओर इशारा करते हुए गांधी जी बोले—“हाँ, हाँ उसमें जो सार की बात थी, वह तो मैंने निकालकर अपनी डिब्बी में रख ली है।”

अन्य यात्रियों के सामने अपनी ऐसी फजीहत देख कर वह अंग्रेज इतना खिसिया गया कि आगे से गांधी जी का मजाक उड़ाना भूल गया।

धन कपड़े, क्रृष्ण कपड़े

जब गोलमेज परिषद् के लिए गांधी जी इंगलैंड गए तब लन्दन के पत्रकारों ने उनके अधीनग्न शरीर की ओर इशारा करते हुए कहा—“आप इतने कम कपड़े पहनते हैं ?”

गांधी जी ने इसका जवाब गणित-शास्त्र की परिभाषा में देते हुए विनोदपूर्वक कहा—“यह तो बिलकुल स्वाभाविक है। आपकी पोशाक में धन नार कपड़े (चार कपड़े ज्यादा) हैं और मेरी पोशाक में क्रृष्ण चार कपड़े (चार कपड़े कम) इसलिए हिसाब बराबर हो गया ।

गरीब की तलाशी

गोलमेज परिषद् में शामिल होने के लिए जब गांधी जी जहाज से इंगलैंड के तट पर उतरे तब बाहर जाने से पहले चुंगी-अधिकारी उनके सामान की जाँच करने आया। और मुसाफिरों की तरह गांधी जी के पास कोई सामान नहीं था, फिर किस चीज़ की जाँच की जाए ? फिर भी नियम के बनुसार चुंगी-अधिकारी ने गांधी जी से पूछा—“आपका सामान कहाँ है ?”

गांधी जी बोले—“मैं तो एक गरीब आदमी हूँ। मेरे पास एक चरखा, एक जेल की थाली, बकरी का दूध रखने के लिए टीन का एक डिब्बा तथा कच्छा और अंगोछे मिलाकर छोड़ जोड़ी कपड़े हैं। आपकी नज़रों में मेरे-जैसे आदमी की वज़़ह

इच्छत हो सकती है ?”

चुंगी-अधिकारी ने गांधी जी के सामान की तलाशी लेने का इरादा ही छोड़ दिया ।

दो के लिए काफी

इसी गोलमेज परिषद् के समय जब गांधी जी इंग्लॅंड की थे तब सम्राट् पंचम जार्ज ने बर्किंघम प्रासाद के एक समारोह में गांधी जी को भी आमन्त्रित किया था । गांधी जी हमेशा जिस पोशाक में रहते थे, उसी पोशाक में सम्राट् से मिलने के लिए उनके महल में गए । तब तक बर्किंघम प्रासाद की वैसी पोशाक में किसी व्यक्ति ने प्रवेश नहीं किया था । सदियों पुरानी उस परम्परा के टूटने से क्षुब्ध होकर एक पत्रकार ने गांधी जी से, जब वे प्रासाद से लौटे, तब पूछा— “मिस्टर गांधी, यह पोशाक पहनकर शाही हाल में जाते हुए अपको किसी प्रकार को हिचकिचाहट या परेशानी नहीं हुई ?”

पत्रकार का प्रश्न सुनकर गांधी जी खिलखिलाकर हँसते झूँसे—“मुझे परेशानी किस बात की होती ? अकेले आपके सज्जा ने ही इतने कपड़े पहन रखे थे जो हम दोनों के लिए काफी होते ।”

फकीर की शान

गांधी-ईर्विन करार पर जब वाइसराय और महात्मा गांधी दोनों के हस्ताक्षर हो चुके थे, दोनों व्यक्ति बैठकर कुछ

देर तक प्रसन्न मुद्रा में बातचीत करते रहे। वाइसराय में गांधी जी से कहा—“चलिए, इस खुशी के अवसर पर हम दोनों एक-दूसरे की सेहत के लिए जाम पिएं।”

अंग्रेजों के समाजमें किसी भी खुशी के मौके पर एक-दूसरे के स्वास्थ्य की कामना करते हुए, शराब पीने का रिवाज है ही।

परन्तु उक्त वाक्य कहने के बाद वाइसराय को तुरन्त ख्याल आया कि गांधी जी तो शराब पीते नहीं। इसलिए उन्होंने इतना और जोड़ा—“बेशक चाय के रूप में।”

वाइसराय के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए गांधी जी ने कहा—“मैं तो पानी में थोड़ा-सा नमक और नीबू का रस डाल कर ही ‘टोस्ट’ (उस जामें सेहत को अंग्रेजी में ‘टोस्ट’ ही कहते हैं) पीऊँगा।”

उन्हीं दिनों चर्चिल ने गांधी जी को ‘अधनंगा फकीर’ कहा था। गांधी जी और वाइसराय दोनों उसको याद करके हँसते रहे। लेकिन गांधी जी सचमुच ही वैसे फकीर हैं, इसका सबूत देने वाली घटना उसी समय घट गई।

जब गांधी जी वाइसराय-भवन से विदा होकर जाने लगे तब वे अपना शॉल लेना भूल गए।

शॉल के बिना गांधी जी बिल्कुल अधनंगे फकीर ही लगते थे। वाइसराय ने चर्चिल के उपर्युक्त शब्दों की ओर संकेत करते हुए व्यंयपूर्वक कहा—“मिस्टर गांधी, आपका यह शॉल तो यहीं रह गया। आपके शरीर पर शॉल के सिवाय और कोई दूसरा कपड़ा है भी नहीं, इसलिए इसे भूलना आपको महँगा पड़ जाएगा।”

गांधी जी हँसते हुए बोले—“बेशक मौहँगा पड़ जावेगा।” और यह कहकर उन्होंने अपना शॉल उठा लिया।

स्वराज्य को धकेला

जिस दिन की यह बात है उस दिन जवाहर लाल जी कई घण्टे तक गांधी जी से विचार-विनिमय करते रहे थे। नेहरू जी के जाने के बाद प्रसिद्ध पत्रकार लुई फिशर ने गांधी जी के कमरे में प्रवेश किया। उस समय गांधी जी चरखा चला रहे थे। उन्हें कातते देखकर फिशर बोले—“मैं तो समझता था कि आपने चरखा एक ओर सरका दिया होगा ?”

गांधी जी बोले—“मैं कातना कैसे छोड़ सकता हूँ। ४० करोड़ हिन्दुस्तानियों में से यदि बच्चे, बीमारों और अपाहिजों आदि को छोड़ दें—जिनकी संख्या करीबन् १० करोड़ होगी—और शेष ३० करोड़ नर-नारी प्रति दिन-एक घण्टा भी सूत कातें तो हमें बहुत जल्दी स्वराज्य मिल जाए।”

फिशर बोले—“सूत कातने से कोई आध्यात्मिक शक्ति पैदा होती है, या आर्थिक शोषण से मुक्ति की बात है ?”

गांधी जी बोले—“दोनों ही बातें हैं। किसी हिटलरी हुक्म से नहीं, परन्तु एक ऊँचे आदर्श से प्रेरित होकर यदि ३० करोड़ आदमी दिन में एक बारी निश्चित काम ही करें, तो हमें इतनी एकता आ सकती है कि हम स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं।”

फिशर ने कहा—“मेरे साथ बात करते समय आपका कातना रुक जाता है, तो क्या स्वराज्य के मिलने में इतनी देर नहीं होगी ?”

गांधी जी ने कहा—“होगी क्यों नहीं ? आपने स्वराज्य को छः बार पीछे धकेला है।”

मनु की परीक्षा

एक बार गांधी जी पटना में डॉ० सैयद महमूद के घर ठहरे थे। उस समय विहार में हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की आग भड़क रही थी। महात्मा गांधी आपसी तनाव को दूर करने और दोनों सम्प्रदायों में पुनः एकता स्थापित करने के लिए पटना आए थे। उन्हीं दिनों डॉ० सैयद महमूद के लड़के को शादी हुई थी।

शादी से पहले डॉ० साहब का लड़का बापू को प्रणाम करके उनसे आशीर्वाद लेने आया, तो मनु गांधी ने, जो उस समय गांधी जी के साथ रहती थी, बहन के नाते डॉ० साहब के लड़के के माथे पर सगुन का तिलक लगाया। भाई के नाते डॉ० साहब के लड़के ने २५-३० तोले का सोने के गहनों का एक पूरा सेट मनु बहन को भेंट में दिया।

उस भेंट को स्वीकार करने में जब मनु आनाकानी करने लगी तो गांधी जी गम्भीरता से बोले—“अरे, लेती क्यों नहीं? भाई के नाते से यह देता है तो तुझे ले लेना चाहिये। भाई द्वारा दी हुई चीज से इन्कार थोड़े ही किया जाता है?”

मनु ने गहनों का डिब्बा ले तो लिया पर असमंजस में छड़ी रही। थोड़ी देर बाद बोली—“बापू, मैं ये गहने मुस्लिम अहायता कोष में देती हूँ। आप इन्हें नीलाम कर दीजिये।”

गांधी जी बोले—“अरे लड़की, मैं तो तेरी परीक्षा ले रहा था। तू उसमें इतनी आसानी से पास हो जावेगी, यह मुझे कल्पना भी नहीं थी।”

चूड़ी भी फैशन है

१९४७ के दिसम्बर की बात है। मनु बहन गांधी ने साड़ी पहनी और हाथ में काँच की एक-एक चूड़ी भी डाल ली। जब इस वेष में वह गांधी जी के सामने आई तो वे साड़ी के लिए तो कुछ नहीं बोले, लेकिन चूड़ियों की ओर लक्ष्य करके कहने लगे कि काँच की चूड़ी के बजाय हाथ से कते हुए सूत के तार कलाई पर लपेटती तो अच्छा रहता।

मनु बोली—“बापू, जब आप चूड़ी को हाथ में डाली हुई हृथकड़ी से उपमा देते हैं तो वह समझ में आती है, लेकिन साड़ी के साथ हाथ में चूड़ी न हो तो कुछ कमी-सी मालूम देती है। आप आश्रम की बहनों की मिसाल देते हैं, पर वे सब बहनें आपको खुश करने के लिए निरा ढोंग रचती हैं। इसके बजाय तो यह ज्यादा अच्छा है कि हम मन में जैसे हैं, वैसे बाहर भी दिखाई दें। आज मैंने जान-बूझकर साड़ी और चूड़ियाँ पहनी हैं। क्या जरूरत-से-ज्यादा सादगी का दिखावा ढोंग में शामिल नहीं है? और फिर साड़ी और चूड़ी निरा फैशन ही है, यह तो आप भी नहीं मानेंगे। जो लोग सिर्फ आपको खुश करने के लिए सादगी का ढोंग करते हैं, मैं उनको अच्छा नहीं समझती।”

गांधी जी बोले—“तेरी इस साफगोई से मुझे बड़ी खुशी हुई। मैं तो बार-बार लोगों से कहता हूँ कि केवल गांधी को खुश करने के लिए कुछ न करो; जब तुम्हारा मन वैसा माने, तब करो।”

फिर थोड़ा ठहरकर बोले—“ऐसी साफ-साफ बात करने

चांली यदि पाँच लड़कियाँ भी मेरे पास होतीं, तो मेरा काम कितना आसान हो जाता !”

इधर यह बातचीत चल ही रही थी कि इतने में बेल्जियम की राजकुमारी और उनके साथी गांधी जी से मिलने आए। राजकुमारी को मनु का परिचय देते हुए गांधी जी बोले—“मेरी इस पोती ने अभी-अभी अपने दादा को जोरदार भाषण सुनाया है।”

थोड़ी देर में मनु अन्दर गई, साड़ी और चूड़ी उतारकर तुरन्त सलवार-कुर्ता पहनकर आ गई। इस पोशाक में दूसे देखकर गांधी जी ने कहा—“क्यों, दिमाग तो नहीं फिर गया है?”

और इसके बाद जब राजकुमारी को सारा किस्सा सुनाया, तो सब लोग देर तक हँसते रहे।

कैलेण्डर की पर्ची

आगा खाँ महल में रोज कैलेण्डर की पिछले दिन की तारीख की पर्ची फाड़कर नयी तारीख बदलने का काम भीरा बहन का था। एक दिन भीरा बहन को बुखार आ गया, इसलिये वह तारीख नहीं बदल सकी। मनु ने यह सोचकर कि किसी ने पर्ची फाड़कर तारीख नहीं बदली, स्वयं पर्ची फाड़कर बाहर फेंक दी।

परन्तु मनु को यह पता नहीं था कि भीरा बहन पर्ची फाड़कर रोज बापू के ‘मौन दिवस वाले पैड’ में रख देती थीं ताकि उस दिन गांधी जी पर्ची के पीछे की ओर के कोरे हिस्से का उपयोग वार्ताज्ञाप के समय लिखने के लिए कर सकें।

गांधी जी ने अपने पैड में उस तारीख की पर्ची खोजी, पर वह उनको नहीं मिली। तब गांधी जी ने कस्तूर बा से लेकर एक-एक करके सभी से पूछा—“आज तारीख किसने बदली है?” मनु से भी पूछा। मनु ने कहा—“बापू, आज तारीख मैंने बदली है और पर्ची फाड़कर मैंने फेंक दी है।”

मनु सोचती थी, गांधी जी उसकी इस जागरूकता के लिए उसे शाबाशी देंगे, मगर इसके बजाय गांधी जी उससे बोले—“जा, वह पर्ची अभी खोजकर ला।”

आगा खाँ महल के लम्बे-चौड़े मैदान में पर्ची खोजने का अभियान प्रारम्भ हुआ। गांधी जी के साथ के लोग तो इस अभियान में शामिल हुए ही, जो कैदी बाग में पेड़ों को सींचने के लिए तैनात किये गए थे, उन्होंने भी साथ लगकर सारङ्ग मैदान खोज भारा।

आखिर शाम के समय वह पर्ची मुङ्गी-मुङ्गाई हालत में महादेव भाई की समाधि के पास पड़ी हुई मिली।

जब गांधी जी को वह पर्ची मिल जाने की खबर मिली तब बड़े खुश हुए और उसे किताब में दबाकर सीधा करके अपने पैड में लगाते हुए बोले—‘मेरे लिए यह पर्ची भी सौ रुपए के नोट से कम नहीं है। मैं इसकी बर्बादी कैसे बदलित कर सकता हूँ !’

मौलाना आजाद की सेवा

गांधी जी जब दिल्ली में थे तब मौलाना अब्बुल कलाम आजाद अक्सर उनसे मिलने आया करते थे। उन्हें सिगरेट धीने की आदत थी, इसलिए जब कभी वे आते तब उनके

सामने सिगरेट की राख छाड़ने के लिए खाली रकाबी रख दी जाती थी।

एक बार उनके सामने रकाबी नहीं रखी जा सकी। गांधी जी मौलाना साहब के साथ पाकिस्तान के साथ भारत के सम्बन्धों के बारे में गम्भीर वातालाप कर रहे थे कि अचानक बीच में ही गांधी जी उठ गए। मौलाना साहब भी समझ नहीं पाए कि गांधी जी बीच में क्यों उठ गए।

गांधी जी सामने की खिड़की के पास गए और वहाँ रखी रुई खाली रकाबी लाकर चुपचाप मौलाना साहब के सामने रख दी।

मौलाना आज्ञाद बड़े शर्मिन्दा हुए और बोले—“अरे, आपने इतनी तकलीफ क्यों की?”

गांधी जी ने उत्तर दिया—“मुझे आप-जैसे महानुभावों की सेवा करने का मौका मिले तो मैं उसे क्यों छोड़ूँ!”

बा से डरने वाले बापू

साबरमती आश्रम में पं० मोती लाल नेहरू आने वाले थे। उनके लिए खाना तैयार करना था। लेकिन कस्तूर बा रसोई का काम निबटाकर सो गई थीं। उनकी नींद में बाधा न पहुँचे इसलिए गांधी जी ने आश्रम के लड़के-लड़कियों को यह काम सौंपा और उनसे कहा—बिना खटपट किये काम करना, ताकि कहीं बा की नींद न खुल जाए।

पर रसोईघर में थाली की आवाज होने से ही बा जाग उठीं। थोड़ी-सी बातचीत के बाद ही वे समझ गईं, कि यह सब गांधी जी का ‘षड्यन्त्र’ है और वे स्वयं खाना बनाने के

लिए रसोईघर में पहुँच गईं ।

शाम की प्रार्थना के बाद बा बापू के सामने हाजिर हुईं और कमर पर हाथ रखकर उलाहने के स्वर में बोलीं—“खाना बनाने का काम आपने बच्चों को क्यों सौंपा ? क्या आप मुझे आलेसियों की पीर समझते हैं ? अगर मेरी अंख लग गई थी, तो आप मुझे जंगा सकते थे !”

गांधी जी बोले—“देवि, तुम जानती ही हो कि ऐसे मीके पर मैं तुमसे कितना डरता हूँ !”

बा बोली—“क्या आप सच बोल रहे हैं ?” और यह कहकर खूब जोर से हँसी ।

शामत आ जाती

दक्षिण अफ्रीका में एक बार कस्तूर बा बहुत बीमार हो गई । उस समय गांधी जी ने अत्यन्त मनोयोगपूर्वक उनकी सेवा की ।

गांधी जी बा के सूजे हुए हाथ-पैरों पर रोज नीम के तेल की मालिश किया करते थे और बा के लिए काफ़ी तैयार करके दिया करते थे । एक दिन गांधी जी ने मालिश करने के लिए पीतल की रकाबी में नीम का तेल निकाला और जब वे काफ़ी तैयार करने लगे कि काशी बा आ पहुँची । गांधी जी उस रकाबी को साफ करके उसमें काफ़ी का प्याला रखने ही वाले थे ।

गांधी जी को किसी चीज की गंध बहुत कम आती थी । इसलिए उन्होंने काशी बा को देखकर कहा—‘काशी बा, जरा इस पीतल की रकाबी को सूंघकर तो देखो कि इस

रकाबी में तेल की गंध आती है या नहीं ?”

काशी बा ने रकाबी सूंघकर कहा—“हाँ, गंध तो आती है।”

यह सुनकर गांधी जी चौंक उठे और बोले—“अगर मैं इस रकाबी में बा के लिए कॉफ़ी ले जाता तो आज मेरी शामत ही आ जाती ।”

तेरे लिए भी महात्मा ?

एक बार सेवाग्राम में भी बा बीमार हो गई । वहां बा के लिए एक अलग कुटिया बनाई गई थी । गांधी जी बीमार बा को देखने के लिए सुबह शाम दोनों समय नियमपूर्वक जाया करते थे । लेकिन एक दिन बहुत ज्यादा काम होने के कारण वे बा के पास न जा सके ।

दूसरे दिन सवेरे वे बा को देखने गए तो उन्होंने बा से पूछा—‘अब तुम्हारी कैसी तबीयत है ?’

पिछले दिन शाम को गांधी जी नहीं आए थे, यह बात बा को बहुत बुरी लगी थी । इसलिए अपनी नाराजगी प्रकट करने के लिए बोली—“आपको मेरी क्या परवाह है ? आप तो बड़े आदमी हैं, महात्मा हैं न ! महात्माओं को तो सारी बुनियाँ की चिन्ता रहती है फिर मेरी चिन्ता के लिए उनको समय कैसे मिल सकता है ?”

बा की नाराजगी को भाँप कर गांधी जी ने बा के सिर पर प्रेम से हाथ रखा और उनके बालों में उँगलियाँ डालकर हँसते-हँसते बोले—“क्या तेरे लिए भी मैं महात्मा और बड़ा आदमी हूँ ?”

बा की आज्ञा माननी पड़ेगी

गांधी जी ने जब 'अखिल भारतीय ग्राम-उद्योग संघ' की स्थापना की तब उसके काम को व्यवस्थित रूप देने के लिए वे स्वयं मगनवाड़ी (वर्धा) में रहने लगे। उन्होंने नियम बनाया था कि वहाँ का सब काम मगनवाड़ी में रहने वाले सब लोग आपस में मिल-बाँटकर करें और किसी काम के लिए कोई नौकर न रखा जाय।

गांधी जी और जे० सी० कुमारप्पा के हिस्से में रसोईघर के जूठे बर्तन माँजने का काम आया। दोनों उत्साह से उस काम में जुट गए।

जब बा को इस बात का पता चला तो वे तुरन्त वहाँ पहुँचीं और गांधी जी को उलाहना देती हुई बोलीं—“अरे, यह आप क्या करने लगे? इसके सिवाय आपके पास कोई दूसरा धन्वा नहीं है? आपको और इतने जरूरी काम करने हैं, जाकर उन्हें करिये न! बरतन माँजने का काम करने वाले तो मगनवाड़ी में और बहुत-से लोग हैं।”

यह सुनकर भी गांधी जी बर्तन माँजते रहे।

इस पर बा चिढ़ गई और गांधी जी के हाथ से बर्तन छीनकर खुद माँजने बैठ गई। गांधी जी के मिट्टी से सने हुए झाथ में केवल नारियल के छिलके का बना पोंछा ही रह गया।

तब गांधी जी हँसते हुए कुमारप्पा से बोले—“कुमारप्पा, तुम सचमुच सुखी आदमी हो, क्योंकि तुम पर राज्य करने के लिए तुम्हारी पत्नी नहीं हैं। लेकिन मुझे तो अपने घर में शान्ति बनाए रखने के लिए बा की आज्ञा माननी ही पड़ेगी।”

दोनों को लड़वा दिया !

साबरमती आश्रम में यह नियम था कि हर आश्रमवासी को महीने में एक निश्चित राशि तक का ही साबुन काम में लेना चाहिये, उससे ज्यादा नहीं। लेकिन आश्रम की बहनों को अपनी साड़ी और चढ़ार आदि धोने के लिए उतना साबुन काफी नहीं होता था।

शिकायत करने का अर्थ होता गांधी जी द्वारा बनाए गए नियम का विरोध करना। लेकिन रोज-रोज कम साबुन से काम कैसे चलाया जावे? अन्त में बहनों ने यह रास्ता निकाला कि एक अर्जी तैयार की जाए और उस पर सबके हस्ताक्षर करके गांधी जी को दे दी जावे।

बहनों ने कस्तूर बा से उस अर्जी पर हस्ताक्षर करने की प्रार्थना की। बा स्वयं इस नियम की शिकार थीं और बहनों का पक्ष लेना वह अपना कर्तव्य समझती थीं। इसके अतिरिक्त गांधी जी के कड़े नियमों के खिलाफ आन्दोलन में उन्हें रस भी आता था। इसलिए बा ने तुरन्त अर्जी पर हस्ताक्षर कर दिये।

जब वह अर्जी गांधी जी के सामने पेश की गई तो उन्होंने ध्यान से देखा कि उस पर किस-किसने हस्ताक्षर किये हैं। उसमें उन्हें बा के हस्ताक्षर भी दिखाई दिए। यह देखकर गांधी जी अर्जी लाने वाली बहनों की मुखिया से कहने लगे—“तुमने तो हम दोनों को भी लड़वा दिया !”

पुरुष साड़ी धोयेंगे

गांधी जी ने विदेशी कपड़ों के खिलाफ जो आन्दोलन चलाया था, उसी के परिणामस्वरूप खादी का आविष्कार हुआ। लेकिन शुरू-शुरू में जो खादी बनती थी, उसकी बात न पूछिये। लम्बे अर्ज में तो खादी बनती ही नहीं थी, सैंतीस इंच अर्ज वाली खादी भी मुश्किल से बनती थी। इसलिए अगर किसी को खादी की धोती या साड़ी पहननी होती तो उसे छोटे अर्ज वाली खादी के दो टुकड़ों को बीच से जोड़कर काम चलाना पड़ता। इस तरह जोड़ी हुई धोती या साड़ी का वजन सेर-डेढ़-सेर तक पहुंच जाता था।

बहनों के लिए ऐसी मोटी और वजन में ऐसी भारी साड़ी पहनना मुश्किल था। इसलिए वे गांधी से शिकायत करतीं—“बापू, इतनी भारी साड़ी तो हमसे उठाई भी नहीं जाएगी!”

गांधी जी हँसते हुए कहते—“नौ नौ महीने तक बालक को पेट में रखने वाली महिलाओं को क्या यह साड़ी इतनी भारी लगती है कि वे देश की गरीब बहनों की आबरू की खातिर इतना-सा वजन भी नहीं उठा सकतीं?”

तब बहनें दूसरी दलील देते हुए कहतीं—“बापू, इतनी भारी साड़ी रोज धोएगा कौन ?”

गांधी जी हँसते हुए कहते—“तुम्हारी साड़ियाँ हम पुरुष धो दिया करेंगे।”

विवाह की जयन्ती

सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय सरकार ने गांधी जी को आगा खाँ महल में नजर-कैद रखा था। उस समय श्रीमती सरोजिनी नायडू, डॉ० सुशीला नायर तथा डॉ० गिल्डर भी गांधी जी के साथ थे।

एक दिन डॉ० गिल्डर के नाम बढ़िया आमों का एक पार्सल आया। यह पार्सल उनको उनके विवाह की २६वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में भेजा गया था।

सब लोग प्रसन्न होकर जब डॉ० गिल्डर को बधाई देने लगे तब वातों-ही-बरतों में बा ने उत्साह में आकर गांधी जी पूछा—“हमारे विवाह को कितने वर्ष हुए होंगे ?”

गांधी जी निकटवर्ती लोगों को सम्बोधित करते हुए बोले—“देखो रे देखो, बा भी अपने विवाह की जयन्ती मनाना चाहती हैं !”

घर छोड़कर भाग जाऊँगा ?

एक रात गांधी जी सावरमती आश्रम में सो रहे थे। सामने के बरामदे में बा तथा अन्य बहनें सोई हुई थीं।

रात के दो ढाई बजे के आसपास गांधी जी एकाएक उठे और एक ओर को चल दिये। अकस्मात् उसी समय बा की आंख खुल गई और उसने पास वाली एक बहन को जगाकर पूछा—“गांधी जी इस समय कहाँ जा रहे हैं ? आओ, जरा

उनका पीछा करें।”

इसके बाद वा और वह बहन चुपचाप यह देखने के लिए गांधी जी के पीछे-पीछे चलने लगीं कि वे कहाँ जाते हैं।

सड़क पर किसी आदमी को बिच्छु ने काटा था और वह रो रहा था। उसके रोने की आवाज सुनकर ही गांधी जी उठे थे।

गांधी जी सड़क तक गए; उस आदमी को धीरज बंधा-कर कुछ देर बाद लौट आए। तब उन्होंने रास्ते में वा और उस बहन को खड़े हुए देखा तो हँसते हुए बोले—“तुम क्या समझ रही थीं कि मैं महात्मा बुद्ध की तरह आधी रात को घर छोड़कर भाग जाऊँगा?”

जगदम्बा की तरह पूजूँगा

सन् १९१३ में दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने यह कानून बनाया था कि जो विवाह ईसाई धर्म के अनुसार होंगे अर्थात् सरकार के विवाह-विभाग के अधिकारों के दफ्तर में दर्ज होंगे, वे ही विवाह मान्य होंगे, अन्य नहीं। इस कानून के परिणामस्वरूप मुस्लिम, हिन्दू, पारसी आदि धर्मों के अनुसार जितने भी विवाह किये गए थे, वे सब अवैध माने गए। इस कानून के कारण अधिकांश स्त्रियों का दर्जा धर्म-पत्नियों का न रहकर रखैल स्त्रियों का हो गया। इस बात को हिन्दुस्तानी स्त्री-पुरुष कैसे बर्दास्त कर सकते थे?

गांधी जी ने उस कानून को रद्द करवाने के बारे में सरकार से बातचीत की लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला। इसीलिए गांधा जी ने सत्याग्रह करने का निश्चय

किया ।

गांधी जी चाहते थे कि इस संघर्ष में स्त्रियाँ भी हिस्सा लें । किन्तु यह काफी खतरनाक काम था । उस समय तक किसी भी आन्दोलन में स्त्रियों द्वारा हिस्सा लेने की बात भी कल्पना से परे थी । जेलों में स्त्रियों के साथ दुर्ब्यवहार होता तो उसकी प्रतिक्रिया भी भयंकर हो सकती थी और यदि जेल के कष्टों से घबराकर स्त्रियाँ माफी माँगकर आ जातीं तो उससे सत्याग्रह आन्दोलन को बहुत धक्का लगता ।

फिर भी गांधी जी सत्याग्रह की सफलता के लिए उसमें स्त्रियों का शामिल होना आवश्यक समझते थे । परन्तु जब तक इस काम के लिए स्वयं कस्तूर बा तैयार न हों, तब तक अन्य स्त्रियों को सत्याग्रह करके जेल में जाने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता था ?

एक दिन बा रसोईघर में रोटी बना रही थीं । गांधी जी कोई और काम कर रहे थे । अपना काम करते-करते उन्होंने एकाएक बा से पूछा—“तुझे कुछ पता चला या नहीं ?”

बा ने उत्सुकता से पूछा—“क्या ?”

गांधी जी ने कहा—“आज तक तू मेरी ब्याहता पत्नी थी, मगर अब तू मेरी ब्याहता पत्नी नहीं रही ।”

बा ने भौंहें चढ़ाकर पूछा—“तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया ? रोज कोई-न-कोई नई बात खोज निकालते हो ।”

गांधी जी बोले—“मैं कहाँ खोज निकालता हूँ ? वह तो जनरल स्मट्स कहता है कि ईसाइयों की विधि के अनुसार जिनका विवाह सरकारी अदालत के रजिस्टर में दर्ज नहीं

हुआ, वह गर-कानूनी माना जाएगा। इसलिए तू मेरी ब्याहता पत्नी नहीं रही, सिर्फ रखैल मानी जाएगी।”

यह सुनकर बा का चेहरा तमंतमा उठा। गुस्से से भर कर बोली—“वह और उसका सिर ! उस बईमान को ऐसी बातें ही सूझतीं हैं ?”

गांधी जी ने पूछा—“लेकिन अब तुम स्त्रियाँ करोगी क्या ?”

बा ने उलटकर प्रश्न किया—“आप ही बताइये न कि हम क्या करें ?”

गांधी जी बोले—“हम पुरुष जिस तरह सरकार से लड़ते हैं, वैसे ही तुम भी लड़ो। सच्ची ब्याहता पत्नी बनना हो और रखैल न कहलाना हो, एवं तुम लोगों का अपनी आबरू प्यारी हो, तो तुम्हें भी सरकार से लड़ना चाहिए।”

बा ने कहा—“आप लोग तो जेल में जाते हैं।”

गांधी जी बोले—“तो तू भी अपनी आबरू बचाने के लिए जेल जाने के लिए तैयार हो जा।”

बा चकित होकर बोली—“हाँ मैं जेल में जाऊँ ? कभी औरतें भी जेल में जाया करती हैं ?”

गांधी जी बोले—“क्यों, औरतें जेल में क्यों नहीं जा सकतीं ? जो सुख-दुख पुरुष भोगें, उनको स्त्रियाँ क्यों नहीं भोग सकतीं ? राम के पीछे सीता गई थी या नहीं ? तारा-मती ने हरिश्चन्द्र का साथ दिया था या नहीं ? और नल के साथ जाकर दयमन्ती ने जंगल में अपार कष्ट सहे थे या नहीं ?”

यह सुनकर बा बोली—“वे सब तो देवता लोग थे। उनके कदमों पर चलने की शक्ति हममें कहाँ है ?”

गांधी जो ने गम्भीर होकर कहा—“इसमें क्या है ? यदि हम भी उनके जैसा आचरण करें तो उनके जैसे हो सकते हैं । मैं राम बन सकता हूँ और तू सीता बन सकती है । सीता अपने धर्म का पालन करने के लिए राम के साथ बन में न जाती और राजमहलों में रहकर ही सुख भोगती तो उसे सीता माता कहकर कौन पूजा करता ? यदि तारामती हरिश्चन्द्र के सत्य के पालन के लिए न विकी होती तो तारा-मती को सती-शिरोमणि कौन कहता ? इसी तरह अगर दमयन्ती नल के साथ जंगल में दुख न भोगती तो उसकी भी गणना सतियों में कौन करता ? यदि तुझे भी अपनी आबरू प्यारी हो, मेरी व्याहता स्त्री कहलाना हो और रखेल माने जाने के कलंक से छुटकारा पाना हो तो सरकार से लड़ने और जेल में जाने के लिए तैयार हो जा ।”

बा थोड़ी देर चुप बैठी रहीं, फिर बोलीं—“तो यह कहो न कि तुम मुझे जेल भेजना चाहते हो । अब यही काम बाकी रह गया है । तुम कहते हो तो, मैं जेल में भी जाऊँगी, जरूर जाऊँगी । लेकिन जेल का खाना क्या मुझसे खाया जाएगा ?”

गांधी जी बोले—“मैं तुझसे नहीं कहता कि तू जेल में जा । अपनी आबरू की खातिर यदि तू जेल जाने से न घबराती हो और तुझमें उत्साह हो, तो जा । रही जेल के खाने की बात, यदि वहाँ का खाना अनुकूल न पड़े तो फल खाकर रहना ।”

बा ने पूछा—“जेल में सरकार मुझे फल खाने को देनी ?”

गांधी जी बोले—“फल न मिलें तो उपवास करना ।”

बा हँसते हुए बोली—“ठीक है, अब तो आपने मुझे मरने का पूरा रास्ता बता दिया । मुझे लगता है कि मैं अगर जेल में गई, तो मर जरूर जाऊँगी ।”

गांधी जी खिलखिलाकर बोले—“हाँ, हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ। तू जेल में जाकर मरेगी, तो मैं जगदम्बा की तरह तेरी पूजा करूँगा।”

किसकी सेवा के बदले मेंटें मिली हैं ?

जब गांधी जी नेटाल से हिन्दुस्तान आने लगे तब नेटाल में रहने वाले भारतीयों ने उनको भाव-भीनी विदाई दी। जगह-जगह सभाएँ करके उन्हें मान पत्र दिये गए और हर जगह कीमती उपहार उन्हें भेंट किए गए। इन भेंटों में सोने-चाँदी की चीजों के अलावा हीरे-जवाहरात की चीजें भी थीं। इसके सिवाय कस्तूर बा के लिए पचास गिन्नी का एक हार भी भेंट में दिया गया।

जिस दिन यह भेंटे मिलीं उस रात गांधी जी अपने कमरे में चक्कर काटते रहे और सोचते रहे कि मैं इन भेंटों को स्वीकार करूँ या न करूँ ? अब तक वे अपने परिवार में सब को हमेशा यह समझाते आए थे कि सेवा की कीमत नहीं लेनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उनके जीवन में सादगी लगातार बढ़ती जा रही थी और उन्होंने घर में कीमती गहने या अन्य कीमती चीजें रखना छोड़ दिया था। फिर वे सोने चाँदी और जवाहरात की चीजों का क्या करते ?

अन्त में गांधी जी इस निश्चय पर पहुँचे ये चीजें मुझे अपने पास नहीं रखनी चाहिए और भेंट में मिली चीजें और गहने ट्रस्टी को सौंप देनी चाहिये। उन्होंने पारसी रस्तम जी को ट्रस्टी बनाने की सोची और उन्हें भेजे जाने वाले पत्र का मसविदा भी रात को ही तैयार कर लिया।

सबेरे गांधी जी ने अपने पुत्रों से यह बात कही तो वे भी तुरन्त मान गए और उन्होंने कहा—“हाँ, हमें इन कीमती गहनों की ज़रूरत नहीं है। हमें यह सारी भेंटें ट्रस्टी के ही सुपुर्द कर देनी चाहिए।”

बच्चों की बात सुनकर गांधी जी प्रसन्न होकर उनसे बोले—“तब तुम बा को समझाओ।”

बच्चे बोले—“ज़रूर ! यह काम हमारा है।”

लेकिन बा को समझाने का काम इतना आसान नहीं था। आँखों में आंसू भरकर बा बोलीं—“आपको और आपके पुत्रों को इन गहनों की आवश्यकता न हो तो न सही। बच्चों का क्या है ! उन्हें तो जैसा सिखाएँ, सीख जाते हैं। भले ही आप मुझे भी यह गहने न पहनने दें, लेकिन मेरी बहुओं का क्या होगा ? यह उनके काम तो आ सकते हैं ? और कौन जानता है, कल क्या हो ? फिर प्रेम से दी हुई चीज भी कहीं लौटाई जाती है ?”

गांधी जी धीरे से बोले—“बच्चों की शादी तो होने दो ! हमें कौन-सी बचपन में उनकी शादी करनी है। बड़े होने पर तो वे स्वयं अपनी मर्जी के मालिक होंगे ? फिर हम ऐसी बहुएँ खोजेंगे ही क्यों, जो गहनों की शौकीन हों ? इस पर भी अगर गहने बनवाने ही पड़े, तो मैं कहीं गया थोड़े हूँ, अभी तो जिन्दा हूँ।”

यह सुनकर बा गांधी जी को उलाहना देते हुए बोली—“मैं खूब जानती हूँ आपको ! आप वही हैं न, जिन्होंने मेरे गहने भी उतरवा लिये थे ! जब आपने खुशी से मुझे ही कभी गहने नहीं पहनने दिए तो आप मेरी बहुओं के लिए क्या खरीदेंगे ! बच्चों को तो आपने आज से ही बैरागी बना

दिया है। मैं कहती हूँ, यह गहने नहीं लौटाए जाएँगे। और किर मेरे इस हार पर आपका क्या अधिकार है ?”

गांधी जी बोले—“लेकिन वह हार तेरी सेवा के बदले में मिला है या मेरी सेवा के बदले में ?”

इस प्रश्न का उत्तर सहज नहीं था। कस्तूर वा की आँखों में आँसू आ गए।

अन्त में धैर्यपूर्वक वा को समझाने से वे सारी चीजें लौटाने की अनुप्रति बा ने दे दी।

कद्दू का साग और गांधी की पोल

सावरमती आश्रम में गांधी जी ने यह नियम बनाया था कि आश्रम में पैदा होने वाली साग-भाजी ही काम में ली जाए, बाहर से कोई साग-भाजी न मँगाई जाए।

उस समय आश्रम के खेत में कद्दू खूब होता था इसलिए रोज उसी की सब्जी बनती थी। इस सब्जी को भी बड़े-बड़े ढुकड़े काटकर उबालकर रख दिया जाता था। उसमें नमक नहीं डाला जाता था; जिसे जरूरत होती वह ऊपर से नमक ले सकता था।

आश्रमवासी कई भाई बहनों को कद्दू की यह सब्जी अनुकूल नहीं आई। लेकिन गांधी जी के सामने की शिकायत करने की किसी में हिम्मत नहीं थी।

श्री नरहरि भाई पारीख की पत्नी ने तो कद्दू की सब्जी पर एक गीत ही लिख डाला। बा ने वह गीत सुना तो गांधी-जी के पास शिकायत लेकर पहुँचीं और उन्हें गीत की बात सुनाती हुई बोलीं—“आपकी कद्दू की सब्जी भी अच्छी

मुसीबत है। एक बहन को बादी हो गई है, दूसरी के सिर में चक्कर आते हैं और तीसरी को डकारों के मारे चैन नहीं है। कद्दू का साग क्या कभी सिर्फ उबालकर ही बनाया जाता है? उसमें भेथी का बघार लगाना चाहिए, गर्म मसाला डालना चाहिए, तब तो ठीक रहता है, वर्णा तो वह नुकसान करेगा ही।”

अगले दिन प्रार्थना के बाद गांधी जी ने कहा—“हमारे आश्रम में एक नए कवि पैदा हुए हैं, अब हमें उनकी कविता सुननी चाहिए।”

इसके बाद गांधी जी ने नरहरि भाई की पत्नी मणि बहन से कद्दू के सम्बन्ध में लिखा वह गीत गँवाकर सुना।

गीत पूरा होने पर गांधी जी ने हँसते हुए कहा—“अच्छा तुम लोगों की शिकायत मंजूर। जिन्हें बघार लगाकर और मसाला डालकर यह सब्जी खानी हो, वे मुझे अपने नाम लिखा दें।”

गांधी जी सोचते थे कि बहनें संकोच के मारे अपना नाम नहीं लिखाएँगी। तभी वा बीच में ही बोल उठीं, “इस तरह कोई बहन अपना नाम आपको नहीं देगी। हम सब बहनें मिलकर खुद ही नाम तय कर लेंगी।”

गांधी जी बोले, “तो ठीक ऐसा ही करो, लेकिन देखना, इसमें बच्चों को शामिल मत करना! बच्चे बिना मसाले की सब्जी ही पसन्द करते हैं।”

वा के पास इसका उत्तर तैयार था—“इस तरह बच्चों को बहका-बहकाकर रखना आप अपने पास। मैं जानती हूँ, ये सब बच्चे कितने आपके होकर रहने वाले हैं।”

इसके बाद बहनों ने तय करके अपने नाम लिखवा दिये

और गांधी जी से मसाला खाने की इजाजत पा ली ।

मगर गांधी जी किसी को आरम्भ से मसाला खाने देने वाले थोड़े ही थे ! बहनें गांधी जी के सामने वाली पंक्ति में ही खाने बैठती थीं तो गांधी जी उनको ताना मारते हुए कहते थे—“क्यों, बधार कैसा लगा है ? सब्जी बढ़िया मसालेदार चटपटी बनी है न ?”

बा भी कम नहीं थीं । वे भी गांधी जी से कहतीं—“अब रहने भी दीजिये, आप क्या कुछ कम थे ? हर रविवार को मुझसे पूरन पोली और पकौड़ियाँ बनवाकर पहले चटकर जाने वाले आप ही थे या कोई और ?”

गांधी जी कहते—“तू तो मेरी सारी पोल खोल देगी !”

जवाहर की तरह तरंगी

आश्रम में रहने वाले सब मेहमानों की आवभगत बा ही किया करती थीं । आने वाला चाहे परिचित हो या अपरिचित, हरेक से अत्यन्त प्रेम से पूछतीं कि खाना खाया है या नहीं, और उसके बाद आवश्यक व्यवस्था करती थीं ।

दीनबन्धु ऐण्ड्रूज़ को चाय पीने की आदत थी, परन्तु गांधी जी के आश्रम में उन्हें चाय कहाँ से मिलती ! यह चाय उन्हें बुलाकर स्वयं बा ही पिलाया करती थीं, क्योंकि बा को भी चाय पीने की आदत थी । गांधी जी बहुत बार बा को उलाहना देते हुए कहते—“बा, तू दीनबन्धु को बुरी आदत लगा रही है ।”

बा उलटकर जवाब देतीं—“रहने भी दीजिये, आप तो सब जगह अपनी ही चलाना चाहते हैं । सब लोगों पर इस

तरह जबर्दस्ती नहीं चला करती।”

इसी तरह राजा जी को कॉफ़ी और जवाहर लाल जी को अपने ढंग की खास स्वाद वाली चाय बा के कारण ही मिला करती थी। राजेन्द्र बाबू, सरदार पटेल, मोतीलाल नेहरू, मौलाना आज़ाद आदि सब नेता जब आश्रम में आते, तो गांधी जी से घंटों राजनैतिक चर्चा के पश्चात् मिलने ही क्यों न थके हों, बा से बिना मिले नहीं जाते थे। इन सबका बा से मिलने का तरीका भी अलग अलग होता था। सरदार पटेल कोई मजाक की बात कहते। मौलाना आज़ाद गम्भीर भाव से बा की तबीयत के बारे पूछते? और जवाहरलाल जी मौज में होते तो कोई क्रांतिकारी बात कहकर बा को चिढ़ाने का प्रयत्न करते।

एक बार जवाहरलाल जी बुत थके हुए थे, इसलिए वे बा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करके चुपचाप चले आए। बा को यह खामोशी अच्छी नहीं लगी। उस दिन बा ने सवालों की झड़ी लगाते हुए गांधी जी से कहा—“आज जवाहर उदास क्यों दिखाई देता था? उसे क्या हुआ था? कहीं आपने उससे कुछ कह तो नहीं दिया?”

गांधी जी बोले—“नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। आज तो हमारे बीच मतभेद का कोई प्रसंग नहीं आया। यों जवाहर तरंगी है, तू भी जवाहर की तरह आज तरंगों तो नहीं बन पर्व है?”

बा के प्रेम की रक्षा

सन् १९३३ की बात है। महात्मा गांधी ने आत्म-शुद्धि के

लिए उपवास किया था। गांधी जी को चाहे जब उपवास करते देखकर बा बहुत घबरा जाती थीं। हमेशा की तरह इस बार भी वे बहुत दुखी हुईं। मीरा बहन उनके साथ थीं; जब उनको बा के दुख का पता लगा तब उन्होंने गांधी जी को चिट्ठी लिखी—‘हमें आज ही आपके उपवास का समाचार मिला! बा को इससे गहरा आघात लगा है; उनका कहना है कि आपका यह निर्णय सर्वथा अनुचित है। लेकिन आप किसी की बात मानते थोड़े ही हैं! आपने आज तक किसी की बात नहीं सुनी तो अब क्या सुनेंगे? बा को विश्वास है कि आप उनकी बात भी नहीं सुनेंगे। इसलिए वे ईश्वर से प्रार्थना करती रहती हैं कि आपका उपवास निर्विघ्न समाप्त हो।’

इसके उत्तर में गांधी जी ने मीरा बहन को लिखा—‘तुम बा से कहना कि उसके पिता ने उसके ऊपर एक ऐसा जीवन-साथी लाद दिया है, जिसका बोझ किसी भी स्त्री को कुचल सकता है। लेकिन उसका मुझसे कितना प्रेम है, मैं जानता हूँ। इसलिए मैं उसके प्रेम की रक्षा करने का भरसक प्रयत्न करूँगा।’

अपशकुन—मगर किसके लिए?

१५ अगस्त, १९४२ के दिन आगा खाँ महल में महादेव-देसाई पर अकस्मात् हृदय-रोग का आक्रमण हुआ और वे कुछ ही देर में चल बसे। बा इससे मर्माहत हो गईं। कड़ा मन करके उन्होंने प्रार्थना आदि में भाग तो लिया लेकिन उनकी आँखों से लगातार आँसू बहते रहे।

अग्नि-संस्कार के लिए जब महादेव भाई की मृत देह को

नीचे लाया गया, तब भी बा आग्रह करके नीचे गईं वे स्वयं बीमार रहकर उठी थीं और इतनी कमज़ोर थीं कि सीढ़ियाँ चढ़ने उत्तरने की ताकत भी उनमें नहीं रही थी। लेकिन अपने पुत्रों से प्रिय महादेव भाई को वे अन्तिम विदा देने न जाएं यह कैसे हो सकता था?

वा की ऐसी तबीयत देखकर सब यह चाहते थे कि बा अन्त्येष्टि-संस्कार न देखें तो अच्छा हो। लेकिन बा मानने वाली नहीं थीं। चिता से कुछ दूर उनके लिए कुर्सी रग्न दी गई। वे सारे समय हाथ जोड़कर यही कहती रहीं—“महादेव, तू जहाँ जाए, वहाँ सुखी रहना! भाई, तूने बापू की अपार सेवा की है। महादेव, तू सदा सुख से रहना!” बीच-बीच में उनके मुँह से यह करुण शब्द भी निकल जाते थे—“महादेव, तू क्यों चला गया? मैं क्यों नहीं गई? ईश्वर का यह कैसा न्याय है?”

अग्नि-संस्कार पूरा हो जाने के पश्चात् जब सब लोग वापस आए तब बा के मन में बार-बार यह विचार उठता रहा—“यह तो ब्राह्मण की मृत्यु हुई है, यह भारी अपशंकुन कहा जाएगा।”

जब गांधी जी को यह बात पता लगी तो बोले—“हाँ अपशंकुन तो है ही, लेकिन हमारे लिए नहीं, सरकार के लिए!”

अधिक सुन्दर दिखूँगा?

एक बार बापू के जन्म-दिवस पर श्री शंकरराव देव अपने हाथ के सूत की दो धोतियाँ लाए और अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक गांधी जी को भेंट में दीं। मनु बहन गांधी ने उन धोतियों

को और सफेद चमकाने के लिए धोबी को दे दिया । सिवाय मनु के यह बात और किसी को पता नहीं थी ।

गांधी जी को कोई चीज खोजते देखकर मनु ने पूछा—“बापू, आप क्या खोज रहे हैं ?”

गांधी जी बोले—“कल शंकरराव देव दो धोतियाँ दे गए थे, वे कहाँ हैं ?”

मनु बोली—“वे तो मैंने धोने के लिए धोबी को दे दीं हैं ।”

गांधी जी बोले—“तुमने धोबी को क्यों दे दीं ? धोतियों के अधिक सफेद निकल आने पर मैं उनको पहनूँगा, तो क्या अधिक सुन्दर दिखूँगा ?”

मनु क्या जवाब देती !

बनिये का लालच

इसी तरह बापू के जन्म-दिन का एक और प्रसंग है । उस समय वे दिल्ली में थे । दिल्ली के कुछ गुजरातियों ने शरणाधियों के लिए कुछ पैसा इकट्ठा किया था । वे चाहते थे कि एक सभा करके गांधी जी को उसमें बुलाया जाय और वह पैसा भट्ट किया जाय । गांधी जी सभा में जाना मान चुके थे ।

गांधो जी को तबीयत उस समय ठीक नहीं थी और खांसी भी खुब आती थी । जब सरदार पटेल का यह पता लगा तो उन्होंने गांधी से कहा—“आपको इतनी सख्त खांसी हो रही है, फिर आपने गुजरातियों की सभा में जाना मंजूर क्यों कर लिया ? लेकिन आप तो इतने लालची हैं कि यदि आपको यह पता लग जाए कि अमुक जगह से पैसा मिलने वाला है तो

आप मृत्यु-शय्या से उठ कर भी वहाँ पहुँच जाएँगे । खों-खों करते हुए सभा में जाने की क्या जरूरत है ? लेकिन आप मेरी मानेंगे थोड़े ही !” और दोनों खूब जोर से हँस पड़े ।

आखिर गांधी जी सभा में गए और वहाँ उन्होंने अपने भाषण में कहा—“जब मुझे पता लगा कि गुजराती भाई मुझसे मिलना चाहते हैं और कुछ पैसे भी देंगे, तब मैं झट फिसल पड़ा । आखिर पैसे का लालची तो मैं हूँ ही । लेकिन मुझे यह मालूम नहीं था कि इस सभा में मुझे भाषण भी करना पड़ेगा । पहले मुझे पता नहीं था कि मेरी वर्षगाँठ की क्या कीमत है । दक्षिण अफ्रीका से लौटकर जब मैं हिन्दुस्तान में आया, तभी यह ढोंग शुरू हुआ । लेकिन इसके साथ चरखा जुड़ा हुआ था इसलिए मैं भी इसमें शामिल हो गया । पैसों के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ । निराश्रित भाई-बहनों की आप जितनी भी सहायता कर सकें, वह थोड़ी है । आखिर एक-दूसरे की मदद से हो हम अपनी समस्याएँ हल कर सकते हैं ।”

इसके बाद सरदार पटेल से भी लोगों ने दो शब्द बोलने के लिए कहा । तब वे विनोद के स्वर में बोले—“आज मेरी वर्षगाँठ थोड़े ही है ! आप लोग पैसा जमा करके तो महात्मा जी को देते हैं, फिर मुझसे बोलने को किसलिए कहते हैं…लेकिन बापू तो बनिये हैं न ! और बनिये स्वभाव से लालची होते हैं । इतनी सख्त खाँसी और कमजोरी होते हुए भी आप लोगों को ठगने की ताकत उनमें आ ही गई । अब आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप बापू को आराम करने दें, जिससे अगले दिन वे फिर औरों को ठगने में समर्थ हो सकें ।”

लूटने की शक्ति

सन् १९४७ की ही बात है। गांधी जी शाम को जब प्रार्थना से लौटकर आए तो एक मद्रासी सज्जन गांधी जी के पास उनके हस्ताक्षर लेने आए।

उन्होंने गांधी जी से तमिल लिपि में हस्ताक्षर करने की प्रार्थना की। गांधी जी ने कहा—“मैं तमिल में अपने दस्तखत करने की कोशिश करूँगा, कुछ गलती हो तो आप सुधार लेना। लेकिन आपको इसकी दुगुनी कीमत देनी पड़ेगी—यानी दस रुपया फीस होगी।”

मद्रासी सज्जन ने दस रुपया देना स्वीकार किया।

गांधी जी ने धीरे-धीरे तमिल में ‘मो० क० गांधी’ लिखा और उन्हें दिखाया।

वे सज्जन बोले—“आपने तो बिल्कुल सही लिखा है।”

गांधी जी ने कहा—“अगर मैंने बिल्कुल सही दस्तखत किये हैं और उसमें कहीं कोई गलती नहीं है तो आपको दस रुपये और देने चाहिए।”

मद्रासी सज्जन के पास और रुपये नहीं थे। गांधी जी ने उनकी परेशानी समझकर कहा—“मैं कल तक यहीं रहूँगा। आप कल शाम तक दे जाइये। मैं आप पर विश्वास करता हूँ।”

इस पर उन सज्जन ने अपने हाथ की अँगुली में पहनी हुई सोने की अँगूठी टुकिकालकर प्रणाम करते हुए उनके हाथ पर रख दी।

इतने में ही नेहरू जी वहाँ आ गए। उन्होंने जो मद्रासी सज्जन को बापू के पास खड़े देखा तो पूछा—“क्या बात है?”

साथ खड़े एक व्यक्ति ने कहा—“बापू अपना व्यापार कर रहे हैं।”

गांधी जी ने सारी बात पं० जी को सुनाते हुए कहा—“मैंने बिना किसी गलती के तमिल में अपने सही दस्तखत कर दिये तो हरिजन-फंड के लिए मुझे इसका मेहनताना तो मिलना चाहिए न !”

पंडित जी ने हँसते हुए मद्रासी सज्जन से कहा—“तुम जानते नहीं हो कि बापू बनिये हैं ?”

मद्रासी सज्जन बोले—“लेकिन साहब, उनमें लूटने की गजब की शक्ति है !”

शेर या चूहा ?

एक बार गांधी जी ने सुहरावर्दी साहब को कोई अपना संदेश देकर जिन्ना साहब के पास कराची भेजा था। जब वे लौटकर आए तो गांधी जी ने पूछा—“क्यों, शेर या चूहा ?”

सुहरावर्दी साहब बोले—“मैं तो चूहा बनकर आया हूँ। क्योंकि मैं मानता हूँ कि चूहा बड़ा समझदार प्राणी होता है। उसके जैसा दूसरा कोई और प्राणी नहीं होता।”

गांधी जी बोले—“तब तो आप सचमुच समझदार हैं।”

फिर इसके बाद १०२ डिग्री बुखार में भी उन्होंने एक छोटी-सी कहानी सुना दी—“एक था चूहा। उसे शेर ने जाल में पकड़ लिया। शेर ने मन में सोचा था कि मैं बाद में चूहे को खा जाऊँगा। लेकिन चूहा होशियार था। वह अपने दाँतों

से जाल काटकर बाहर निकल गया। घर में भी चूहा आदमी को कब काट खाता है, इसका पता नहीं चलता। आप ऐसे ही चूहे हैं न ?”

उक्त कहानी में छिपे हुए व्यंग्य को समझते हुए सुहरावर्दी साहब बोले—“महात्मा जी, आप स्वयं समझदार हैं। मैं आपके सामने क्या बोल सकता हूँ !”

लड़कियों से भी गया बीता ?

एक दिन शाम के समय गांधी जी सेवाग्राम से वर्धा आए। वहां से लौटते समय वे महिला-आश्रम के रास्ते सेवाग्राम जाने को निकले। बीच में आश्रम का फाटक पड़ गया। फाटक में ताला पड़ा था।

दूर से गांधी जी को फाटक की ओर आते देखकर आश्रम की बहनें चाबी लंने दौड़ीं इतने में कदम बढ़ाते हुए गांधी जी फाटक के और नज़दीक आ गए।

गांधी जी के साथ कुछ बहनें भी सेवाग्राम जा रही थीं। उन सबको जल्दी थी क्योंकि प्रार्थना के समय से पहले सब को सेवाग्राम पहुँचना था। इसीलिए गांधी जी को भी जल्दी थी।

फाटक के दोनों ओर कंटीले तारों का बाढ़ा खिचा हुआ था। डॉ० सुशीला नायर कंटीले तारों को थोड़ा ऊपर उठाकर और अपनी देह सिकोड़कर उस पार निकल गई। उनकी देखा-देखी अन्य बहनें भी उसी रास्ते पार पहुँच गईं।

इतने में आश्रम की एक बहन चाबी ले आई और उसने फाटक खोल दिया।

गांधी जी अभी फाटक के इसी ओर ही थे । जब उन्होंने देखा कि दो-तीन बहनें कँटीले तारों के रास्ते से सड़क पर पहुँच गईं हैं तो वे भी खुले फाटक को देखा-अनदेखा करके उसी ओर बढ़े ।

किसी ने कहा—“बापू, फाटक खुल चुका है । आप फाटक के रास्ते से ही बाहर जाइए न !”

गांधी जी यह सुनकर बोले—“मेरे साथ की छोटी-छोटी लड़कियाँ तो कँटीले तारों में से निकल जाएँ और मैं खुले फाटक के रास्ते से बाहर जाऊँ । अखिर ७० वर्ष का बूढ़ा हूँ तो क्या हुआ ? मैं अपना बुढ़ापा नहीं लजाऊँगा ।”

वकील से बर्तन मँजवाए

बिहार में राजेन्द्र बाबू गांधी जी के साथ सत्याग्रह आंदोलन में शामिल हो गए तो आंदोलन चमक उठा । राजेन्द्र बाबू गांधी जी के साथ ही रहते और सब काम उनके साथ-साथ ही करते । गांधी जी के साथ रहने वाले सब लोग अपने जूठे बर्तन स्वयं ही माँजा करते थे ।

नियमानुसार भोजन से निवृत्त होने के पश्चात् राजेन्द्र बाबू अपने बर्तन माँजने बैठे । गांधी जी भी अपने बर्तन लेकर वहीं आ गए ।

राजेन्द्र बाबू को बर्तन मलते देखकर गांधी जी हँसते हुए बोले—“हाइकोर्ट के इतने बड़े वकील से जूठे बर्तन साफ़ करवाने का श्रेय तो मुझे ही मिलेगा न !”

हुक्म चलाने का अधिकार

एक बार राजेन्द्र बाबू बीमार पड़ गए। गांधी जी कुछ मिनट के लिए उनसे मिलने आए तो उन्हें पूर्ण विश्राम की सलाह दी।

गांधी जी ने उनकी पत्नी से पूछा—“मालूम होता है, आप इनकी सेवा अच्छी तरह नहीं करतीं। यह बार-बार बीमार क्यों पड़ते हैं?”

राजेन्द्र बाबू की पत्नी बोलीं—“ये मेरी बात कहाँ मानते हैं? खूब काम करते हैं और विश्राम का नाम नहीं लेते। इसी-यिए बीमार पड़ते हैं।”

गांधी जी बोले—“यह भी आपका ही दोष है। आपको चाहिए, आप इन्हें आराम करने का हुक्म दें। आखिर पति के नाते ये भी तो कभी-कभी अपना हुक्म आप पर चलाते होंगे, इसीलिए कभी-कभी आपको भी इन पर अपना हुक्म चलाने का अधिकार है।”

हरिजनों को देना ही देना

एक बार एक नव-विवाहित दम्पति गांधी जी के पास आशीर्वाद लेने के लिए आए। उन्होंने खूब तड़क-भड़क वाली पोशाक पहन रखी थी, इसलिए गांधी जी भी भ्रम में पड़ गए। वे यह अंदाज़ा नहीं लगा सके कि वर व वधू हरिजन होंगे। (वर महोदय दक्षिण भारत के प्रसिद्ध हरिजन-नेता

श्री एम० सी० राजा के सुपत्र थे ।)

गांधी जी ने उनसे पूछा—“तुम दोनों ने शादी की, इसकी खुशी में मेरे लिए क्या लाए हो ?”

वर महोदय बोले—“हम आपके लिए फूल लाए हैं ।”

गांधी जी ने कहा—“लेकिन फूलों से काम नहीं चलेगा । तुम दोनों तो शादी करो और मुझे केवल फूलों से संतोष करने को कहो ?”

वर महोदय बोले—“फूल के साथ हम आपके लिए फल (अंगूर) भी लाए हैं ।”

गांधी जी बोले—“लेकिन अंगूर तो खट्टे होते हैं, यह तुम जानते ही हो । इसलिए अंगूरों से या फूलों से काम नहीं चलेगा । दोनों सोचकर और निश्चय करके बताओ कि हरिजनों के लिए तुम क्या दोगे ?”

वर-वधू एक-साथ बोले—“हम स्वयं हरिजन हैं ।”

गांधी जी ने कहा—“अच्छा, ऐसी बात है ! तब तो तुम्हें नहीं, बल्कि मुझे ही तुम लोगों को कुछ देना चाहिए ।”

और इसके बाद जब गांधी जी ने प्रेमपूर्वक वर-वधू की पीट थपथपाई तो वे कृतार्थ हो गए ।

लड़की के पास हथियार

दिल्ली में एक बार गांधी जी लार्ड माउंटबैटन से मिलने वाइसराय भवन (जो इस समय राष्ट्रपति-भवन कहलाता है) गए । बातचीत के दौरान लार्ड माउंटबैटन का चाय पीने का वक्त हो गया । वही समय गांधी जी का खाना खाने का था । उधर वाइसराय चाय पीने बैठे, इधर गांधी जी

खाना खाने बैठे। गांधी जी के लिए खाना लेकर उसी समय मनु बहन गांधी वहाँ पहुँच गई थी।

जब गांधी जी खाना खा रहे थे, तब वाइसराय के अंग-रक्षक ने गांधी जी से खाना खाते समय उनका फोटो खींचने की अनुमति उनसे माँगी।

गांधी जी ने हँसते हुए वाइसराय के अंग-रक्षक (ए० डो० सी०) से कहा—“अगर आपको शंका हो तो इस लड़की की तलाशी लेकर देख लीजिए कि इसके पास कोई हथियार है या नहीं ?”

गांधी जी की इस बात पर स्वयं लार्ड माउंटबैटन हँसते हुए बोले—“आप जैसे अर्हिसा के उपासक की सेवा करने वाली लड़की के पास हथियार जैसी कोई चीज होने की कल्पना करना भी मुश्किल है।”

मक्कार गांधी

भारत को स्वराज्य किस प्रकार दिया जाए, इस विषय में ब्रिटिश सरकार और भारतीय नेताओं में काफी मतभेद था। उस समय भारत में अन्तरिम सरकार काम कर रही थी। ब्रिटिश सरकार पाकिस्तान-निर्माण के रूप में देश का विभाजन करना चाहती थी और गांधी जी उसके सर्वथा विरुद्ध थे। इस समस्या पर गांधी जी और लार्ड माउंटबैटन में लगभग दो घण्टे तक बातचीत चलती रही, परन्तु दोनों किसी एक निश्चय पर सहमत नहीं हो सके।

अन्त में लार्ड माउंटबैटन ने ही गांधी जी से पूछा—“आखिर इस समस्या का हल क्या है ?”

गांधी जी बोले—“यदि आप मुझसे पूछते हैं तो मैं आपसे कहूँगा कि आज ही वर्तमान नेहरू मन्त्रि-मण्डल को भंग कर दीजिये और जिन्हा साहब को मन्त्रि-मण्डल बनाने के लिए बुलाइये। जिन्ना साहब मन्त्रि-मण्डल बनाएँ और उसमें सभी मन्त्री मुसलमान हों, तो भी मुझे कोई एतराज नहीं होगा।”

लार्ड माउंटबैटन बोले—“मगर आपके इस प्रस्ताव के बारे में मिठो जिन्ना की प्रतिक्रिया क्या होगी ?”

गांधी जी बोले—“जिन्हा साहब यही कहेंगे कि यह मक्कार गांधी एक और नया शरारती प्रस्ताव लेकर आ गया।”

यह सुनकर लार्ड माउंटबैटन भी हँस पड़े और बोले—“पर ऐसा करने पर क्या मिठो जिन्ना सच्चे सावित नहीं होंगे ?”

यह याद रखने की बात है कि उस समय मुस्लिम लीग का एक तर्क यह भी था कि अंग्रेजों ने भारत का राज्य मुसलमानों से लिया था इसलिए यहाँ से जाने से पहले उन्हें देश का शासन मुसलमानों को ही सौंपना चाहिए। संभवतः लार्ड माउंटबैटन का इशारा उसी ओर था।

गांधी जी बोले—“नहीं, मैं पूरी ईमानदारी के साथ मुसलमानों का मन्त्रि-मण्डल बनाने की बात कह रहा हूँ। आपसे पहले के वाइसराय ने जो पाप किये हैं उनका परिणाम तो आपको भुगतना ही होगा !”

महात्मा भी छुट्टी मनाएगा

एक बार एक पत्रकार गांधी जी से मिलने आए। उन्होंने गांधी जी से पूछा—“क्या आप सचमुच महात्मा हैं ?”

गांधी जी बोले—“मैं तो ऐसा नहीं समझता। मैं तो अपने आपको ईश्वर के पैदा किये हुए प्राणियों में एक नम्र प्राणी ही मानता हूँ।”

पत्रकार ने पूछा—“महात्मा की परिभाषा क्या है ?”

गांधी जी बोले—“मैं महात्मा होऊँ तब तो महात्मा की परिभाषा बताऊँ ?”

पत्रकार ने कहा—“अगर आप महात्मा नहीं हैं, तो अपने अनुयायियों से वैसा कहते क्यों नहीं ?”

गांधी जी बोले—“मैं ज्यों-ज्यों उन्हें मना करता हूँ, त्यों-त्यों वे महात्मा शब्द का और अधिक उपयोग करते हैं।”

पत्रकार ने बात बदलते हुए पूछा—“पहले आप तीसरे दर्जे में यात्रा करते थे, पर अब आप स्पेशल ट्रेन में यात्रा करते हैं। ऐसा क्यों ?”

गांधी जी बोले—“इसका मुझे भी अफसोस है। मैं क्या करूँ, इस स्पेशल ट्रेन के लिए भी मेरा महात्मा-पद ही जिम्मेदार है।”

पत्रकार ने फिर बात बदली और अन्त में उनसे पूछा—“स्वराज्य आने के बाद आपका स्थान कहाँ रहेगा ?”

गांधी जी बोले—“इतने सालों से मैंने कभी कोई छुट्टी नहीं ली, इसलिए मेरी लम्बी छुट्टियाँ जमा हो गई होंगी। तब मैं उन छुट्टियों का आनन्द लेना पसन्द करूँगा। शायद तब तुम भी मेरे छुट्टी के इस अधिकार से इन्कार नहीं करोगे !”

स्वाद मारने में भी हिंसा ?

अंतर्राष्ट्रीय स्यातिप्राप्त पत्रकार श्री लुई फिशर एक बार एक हफ्ते के लिए गांधी जी के साथ रहने के उद्देश्य से, उनसे अनुमति लेकर, सेवाग्राम आए। वे भोजन भी गांधी जी के साथ ही रसोईघर में बैठकर करते थे। आश्रम में पालक बगैरह पत्तों वाली साग-भाजियाँ बनाने का चलन था और उसमें नमक-मिर्च या अन्य मसाले नहीं डाले जाते थे।

एक दिन खाते-खाते गांधी जी बोले—“मिं फिशर अपनी थाली इधर लाइये, आपको थोड़ी साग-भाजी और दे दूँ।”

फिशर ऐसी सब्जियाँ खाते-खाते पहले ही अघा चुके थे, इसलिए बोले—“मैंने दो दिन में ही चौगुनी भाजी खा ली है, इससे और ज्यादा खाने की इच्छा नहीं है।”

गांधी जी बोले—“क्यों, आपको साग-भाजी अच्छी नहीं लगती ?”

फिशर ने कहा—“रोज़-रोज़ यही तो खाता हूँ। इसलिए अब उनके स्वाद में रुचि नहीं रही।”

गांधी जी बोले—“आपको इसमें थोड़ा नमक और नींबू का रस मिलाना चाहिये, तब अच्छी लगेगी।”

फिशर ने कहा—“क्या आप मेरा स्वाद मारना चाहते हैं ?”

गांधी जी बोले—“नहीं-नहीं, मैं तो स्वाद बढ़ाने की बात कहता हूँ।”

इस पर फिशर ने कहा—“अच्छा, आप इतने ज्यादा अहिंसक हैं कि स्वाद को भी मारना पसन्द नहीं करते ?”

गांधी जी बोले—“मनुष्य-जाति यदि स्वाद को मार कर ही चैन लेती तो मैं कभी उसका विरोध न करता, बल्कि तारीफ करता ।”

उन दिनों गर्मी का मौसम था और आश्रम में बिजली के पंखे की भी व्यवस्था नहीं थी। खाना खाते-खाते ही फिशर पसीने से सराबोर हो गए। पसीना पोंछते हुए अन्त में बोले—“जब मैं अगली बार भारत आऊँ तब या तो आप अपने आश्रम एयर कन्डीशन करवा लीजिये या वाइसराय के महल में रहने को चले जाइये ।”

गांधी जी हँसकर बोले—“तब की बात तब देखेंगे ।”

एक लाख लड़कियाँ

जब ब्रिटिश कैबिनेट मिशन सत्ता-हस्तान्तरण के सम्बन्ध में भारत के नेताओं से बातचीत करने के लिए भारत आया तब उसके साथ ब्रिटिश पार्लियामेण्ट की एक महिला-सदस्य श्रीमती निकोलस भी थी।

मिशन की गांधी जी से काफी देर तक बातचीत चलती रही। सारी बातचीत राजनीतिक प्रश्नों पर ही चल रही थी। उस सब वार्तालाप को नीरस समझकर बीच में सरसता और विविधता लाने के लिए महिला-सदस्य ने परिवारिक प्रसंग छेड़ते हुए गांधी जी से पूछा—“मिंट गांधी, आपकी कितनी लड़कियाँ हैं ?”

गांधी जी हँसकर बोले—“मेरी एक लाख लड़कियाँ हैं ।”

फिर थोड़ी देर रुककर गांधी जी ने कहा—“क्यों, मेरे उत्तर से आपको सन्तोष हुआ या नहीं ?”

श्रीमती निकोलस बोली—“मुझे तो सन्तोष हो गया । लेकिन आप क्या इतनी लड़कियों से ही सन्तुष्ट हो जाएँगे ?”

बँधी मुट्ठी

एक बार एक विदेशी मित्र गांधी जी से मिलने आए । वे हस्तरेखा देखने में बड़े कुशल थे, इसलिए उन्होंने गांधी जी से अपना हाथ दिखाने को कहा ।

गांधी जी ने हाथ दिखाने से इन्कार करते हुए कहा—“मैंने आज तक कभी किसी के सामने अपनी मुट्ठी खोली नहीं है, इसलिए इसे बँधी ही रहने दीजिये ।”

चिड़ियाघर में रख देंगे

जब गांधी जी गोलमेज परिषद में शामिल होने के लिए इंग्लैंड गए तब उनसे मिलने के लिए आने वाले लोगों की भीड़ लगी रहती थी । एक बार एक भारतीय विद्यार्थी अपनी अमरीकी पत्नी के साथ मिलने के लिए आया ।

उस विद्यार्थी से गांधी जी ने पूछा—“आप अपनी पत्नी को हिन्दुस्तान में भी ले जाएंगे न ?”

वह युवक असमंजस में पड़ गया । उसने कुछ संकोच अनुभव करते हुए कहा—“हाँ ।”

इसके बाद वह अमरीकी युवती आगे आई । वह चंचल

भी थी और वाचाल भी। उसने गांधी जी से पूछा—“महात्मा जी, आप अमेरिका कब जाएंगे ?”

गांधी जी बोले—“अभी तो कुछ नहीं कह सकता।”

युवती बोली—“लेकिन वहाँ का हर आदमी आपको देखने के लिए अत्यन्त उत्सुक है।”

गांधी जी को अनेक लोगों के द्वारा यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि अमेरिकन लोगों को उनके बारे में इस प्रकार की दिलचस्पी और कौतूहल है, इसलिए उस युवती की बात सुनकर उनकी आँखों में थोड़ी चमक आ गई। वे उस युवती से बोले—“अमेरिका के लोग मुझे देखने को उत्सुक जरूर होंगे, लेकिन मेरे अमेरिकन मित्रों ने ही मुझे बताया है कि यदि मैं अमरीका जाऊँ तो वहाँ के लोग मुझे अजीब जानवर समझकर चिड़ियाघर में रख देंगे।”

युवती की “नहीं, नहीं” की आवाज आस-पास बैठे लोगों की हँसी में लुप्त हो गई।

जनरल को चप्पल

दक्षिण अफ्रीका में एक बार जनरल स्मट्स ने गांधी जी को अपने यहाँ आमन्त्रित किया। गांधी जी उसकी सरकार के विरुद्ध कई बार सत्याग्रह कर चुके थे। एक प्रकार से यह एक योद्धा को दूसरे योद्धा का निमन्त्रण था।

गांधी जी जनरल स्मट्स के घर गए। जनरल ने हाथ मिलाकर उनका स्वागत किया और उनको अपने घर के भीतर ले गए।

गांधी जी जनरल के घर का फर्नीचर और साज-सामान देखने लगे। देखते-देखते दोनों एक अलमारी के पास आए। उस अलमारी में जनरल स्मट्स को मिली हुई भेंटें सजाकर रखी गई थीं।

उस अलमारी में रखी सादा चप्पल की एक जोड़ी बाहर निकालकर जनरल स्मट्स ने गांधी जी से पूछा—“मिंगांधी, क्या आपको यह याद है कि यह चप्पल की जोड़ी कौन-सी है?”

जब गांधी जी दक्षिण अफ्रीका की जेल में थे और जनरल स्मट्स उनसे मिलने के लिए जेल में गए थे तब गांधी जी ने एक कैदी रूप में अपने हाथ से बनाई वह चप्पल की जोड़ी स्मट्स को भेंट के रूप में दी थी। जनरल स्मट्स ने उसी भेंट को उनकी यादगार के रूप में अपनी अलमारी में सजाकर रखा था।

इसलिए गांधी जी को उन चप्पलों की अच्छी तरह याद थी। जनरल स्मट्स के प्रश्न के उत्तरमें उन्होंने कहा—“आप-की बड़ी बड़ी तोप-बन्दूकों को मात देने वाली क्या इस छोटी सी चीज को भी मैं नहीं पहचानूँगा?”

गांधी जी के इस माकूल उत्तर को सुनकर जनरल स्मट्स भी बिना हँसे नहीं रह सका।

पूँजीपति के लिए चरखा

देश के उद्योग-वाणिज्य में प्रमुख स्थान रखने वाले अनेक पूँजीपति भी बहुत बार गांधी जी से मिलने आया करते थे। वे लोग अक्सर गांधी जी के साथ राजनीति और अर्थशास्त्र

आदि के सम्बन्ध में बातचीत किया करते थे। उनमें से कुछ लोगों का गांधी जी के साथ मधुर सम्बन्ध भी था।

ऐसे ही एक पूँजीपति गांधी जी से मिलने आए तब गांधी-जी चरखा चला रहे थे। कातड़े-कातते ही गांधी जी उन सज्जन से बातचीत करने लगे। उस पूँजीपति ने अन्त में गांधी-जी से पूछा—“बापू, यदि आपको दो में से एक चीज चुननी पड़े तो आप मुझे चुनेंगे या मेरे घन को ?”

गांधी जी ने कहा—“मैं तो आपको ही चुनूँगा।”

पूँजीपति सज्जन बोले—“लेकिन अगर मैं अपना सारा व्यापार-धन्धा छोड़कर आपके पास आऊँ तो क्या मेरे लायक भी आपके पास कोई काम है ?”

गांधी जी ने चरखे की ओर इशारा करते हुए कहा—“वयों, यह चरखा है तो सही ! मैं आपको भी चरखा कातने पर ही लगा दूँगा।”

गाड़ी पटरी से उतरी

एक बार सरदार पटेल और गांधी जी गुजरात के किसी देहात की सभा में जा रहे थे। उसी दिन प्रसिद्ध मजदूर नेता श्री इन्दुलाल याज्ञिक का गांधी जी के सम्बन्ध में एक लेख अखबार में छपा था। सरदार पटेल और गांधी जी ने वह लेख पढ़ा था। उसकी ओर सरदार ने गांधी जी का ध्यान खींचा तो गांधी हँसकर बोले—

“आज तो लगता है कि गाड़ी पटरी से उतर गई है। लेकिन कोई हर्ज नहीं, किसी दिन वह पटरी पर आएगी जरूर।”

रसगुल्लों की आफत

एक बार गांधी जी की सारी मंडली के भोजन की व्यवस्था किसी अन्य गृहस्थी के घर पर थी। आश्रमवासियों के अनुकूल भोजन तैयार हो गया। परन्तु यजमान की इच्छा थी कि भोजन में कोई न-कोई मिठाई भी हो, इसलिए उन्होंने मण्डली के एक सदस्य को अपनी इच्छा बताते हुए कहा—“भोजन में नमूने के तौर एकाध मिठाई तो होनी ही चाहिये!”

उस सदस्य ने कहा—“बापू को किसी प्रकार की मिठाई पसन्द नहीं।”

यह बात चल ही रही थी कि इतने में हो कस्तूर वा आपहुँची।

यजमान ने बा से पछा—“बा, मैं आपके साथियों को रसगुल्ले परोसूं तो क्या कोई हर्ज है?”

वा यह समझती थीं कि आश्रमवासियों का मन भी स्वादिष्ट चीज खाने को ललचता ही होगा, इसलिए अगर उन्हें कभी-कभार मिठाई खाने को मिल जाए तो अच्छा ही है इसलिए उन्होंने कहा—“नहीं, कोई हर्ज नहीं। आप इन्हें रसगुल्ले अवश्य खिलायें।”

जब सब भोजन करने बैठे और रसगुल्ले परोसे जाने लगे तो गांधी जी तमक्कर बोले—“अरे! यह क्या आफत है?”

यजमान ने कहा—“बापू, बा को इजाजत से यह सब हो रहा है।”

गांधी जी बोले—“बा की इजाजत ले लेने के बाद अब मेरी इजाजत की परवाह करने वाला कौन है? बा तो ऐसा

ही करती है।”

उसके बाद मंडली के सभी साथियों ने खूब प्रसन्न मुद्रा में रसगुल्ले खाए लेकिन गांधी जी ने छुआ तक नहीं।

घड़ियां भले ही अलग हों

गांधी जी समय-पालन का बहुत ध्यान रखते थे। स्वयं उनका अपना जीवन घड़ी की सुइयों की तरह नियमित गति से चलता था। एक बार उन्होंने एक कार्यकर्ता को मिलने के लिए चार बजे का समय दिया।

वे कार्यकर्ता गांधी जी के कुछ बुनियादी विचारों से मत-भेद रखते थे, इसलिए वे उनसे लम्बी चर्चा करना चाहते थे।

घड़ी में चार बजे और कार्यकर्ता ने गांधी जी के कमरे में पांच रखा। गांधी जी किसी और सज्जन के साथ बातचीत कर रहे थे। कार्यकर्ता को आया देखकर उन्होंने अपनी घड़ी की ओर नजर धुमाई, उसमें चार बजने में अभी आधा मिनट बाकी था।

गांधी जी ने हँसते हुए कार्यकर्ता से कहा—“आप आधा मिनट पहले आ गए।”

कार्यकर्ता महाशय बोले—माफ कीजिये, मेरी घड़ी में चार बज गए हैं।” यह कहकर उन्होंने कमरे से बाहर जाने के लिए कदम उठाया।

गांधी जी ने उन्हें रोकते हुए कहा—“नहीं-नहीं, बाहर जाने की जरूरत नहीं है। आप वहाँ भीतर आइये। हमारी घड़ियाँ भले ही अलग हों, लेकिन हमारे विचार तो अलग न हों।”

गांधी जी के इस वाक्य में जो हल्का ब्यंग और आत्मीयता छिपी थी उसकी ओर ध्यान जाते ही कार्यकर्त्ता भी अपनी हँसी न रोक सके ।”

जैसे भंगी, वैसे जमींदार

बात उस समय की है जब गांधी जी दिल्ली की भंगी वस्ती में ठहरे हुए थे तब तक भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ था । परन्तु सबको यह लगने लगा था कि अब स्वराज्य भारत के दरवाजे खटखटाने लगा है । जमींदारों को भी यह चिन्ता होने लगी थी कि आजाद भारत में एक विशिष्ट वर्ग के नये उनके अधिकारों की रक्खा हो सकेगी या नहीं ! इसलिए जमींदारों के कुछ प्रतिनिधि गांधी जी से इस विषय पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए उनसे मिलने भंगी वस्ती में आए ।

उन्होंने गांधी जी से पूछा—“आजाद भारत में हमारा क्या स्थान होगा ?”

जमींदार भी आविर थे तो ब्रिटिश राज्य में गुलाम ही । जब सारा देश ही गुलाम था तो वे उस गुलामी के अभिशाप से कैसे बच सकते थे । जैसे अन्य देशवासी गुलाम, वैसे जमींदार भी गुलाम । इसलिए गांधी जी ने कहा—“आजाद भारत में आप उतने ही स्वतन्त्र होंगे जितना कोई भंगी होगा ।”

इस उत्तर से जमींदारों को सन्तोष हुआ हो या न हुआ; किन्तु यह उत्तर कितना सही था, यह लोकतन्त्र का पञ्चपाती प्रत्येक व्यक्ति तमक्ष सकता है ।

मेरा धर्म— सेवा

एक बार एक अमरीकी पादरी ने गांधी जी से पूछा—“आपका धर्म क्या है ? भविष्य में भारत कौन-सा धर्म स्वीकार करेगा !”

असल में पादरी इस बात से बहुत चिन्तातुर था कि स्वतन्त्र भारत में पता नहीं किस धर्म को स्थान मिलेगा ! खासकर ईसाइयत भविष्य के बारे के में ही वह चिन्तित था और इसीलिए उसने यह सवाल किया था ।

गांधी जी उस समय दो बीमारों की सेवा में लगे हुए थे । उनकी तरफ इशारा करते हुए गांधी जी बोले—“सेवा करना ही मेरा धर्म है । भविष्य की मैं चिन्ता नहीं करता ।”

सप्तर्षि बराती बनकर आए

एक लड़की गांधी जी के आश्रम में ही पली थी । जब वह बड़ी हो गई तब उसकी सगाई का आयोजन बारदोली आश्रम में किया गया । सरदार पटेल, कैलनबैक, गांधी जी आदि की उपस्थिति में कस्तूर बा ने वर महोदय के माथे पर कुमकुम का तिलक लगाया ।

उसके बाद गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका के साथी और अनुयायी श्री कैलनबैक ने बड़े उत्साह के साथ वर महोदय को बधाई देते हुए हाथ मिलाया और बोले—“वर राजा एक सुन्दर नौजवान हैं ।”

पास ही सरदार पटेल बैठे थे । उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा—“ध्यान देने की बात तो यह है कि आप-जैसे कुँआरे आदमी को इस अवसर पर इतना उत्साह कैसे बढ़ गया !”

कैलनबैक भी विनोद में कम नहीं थे । वे गांधी जी की ओर इशारा करते हुए बोले—“लेकिन मैं कुँआरा रहा तो सिर्फ इस आदमी के पाप के कारण ।”

सब लोग गांधी जी की तरफ देखकर हँसने लगे । उस विनोद में और वृद्धि करते हुए गांधी जी बोले—“इसीलिए तो मैं ऐसे विवाह-सम्बन्ध जोड़कर उस पाप का प्रायशिचत्त कर रहा हूँ ।”

उसके बाद कन्या के विवाह की तारीख जब तय हो गई तब सेवाग्राम से गांधी जी ने वर महोदय को पत्र लिखा—“आना अकेले और भेजेंगे दुकेले ।”

परन्तु वर को बिना वारात के अकेले आना पसन्द नहीं आया, इसलिए वह अपने साथ सात मित्रों को लेकर सेवाग्राम पहुँचे ।

जब गांधी जी के पता चला कि सात बराती आए हैं, तब उनका स्वागत-सत्कार करते हुए बोले—“ओहो, यह तो सप्तर्षिगण आए हैं ।”

उन सातों में वर के एक साथी अपनी पत्नी को भी साथ लाये थे । इसलिये वे तुरन्त बोले उठे—“बापूजी, कृषि अकेले नहीं हैं, साथ में अरुधती भी है ।”

बच्चों की तरह रोने वाले

एक बार गांधी जी सावरमती आश्रम में अपने कमरे में

बैठे 'नवजीवन' के लिये एक गम्भीर लेख लिख रहे थे। इतने में आश्रम के १० से १४ वर्ष की आयु के कुछ बालक उनके पास आये और प्रणाम करके खड़े हो गये। उन्हें देखते ही गांधी जी ने पूछा—“आज सवेरे वह बानर-सेना मेरे कमरे में क्यों चढ़ आई?”

बालकों का अगुआ बोला—“आज आपको हमारे साथ साबरमती नदी में नहाने चलना है।”

“अरे वाह रे डिश्टेटर ! नेता बनकर इस तरह हुक्म चलाना तुने कब से सीख लिया ?” कहते हुए गांधी जी खिलखिला पड़े।

नेता थोड़ा झेंपा। उसकी आज्ञा अब प्रार्थना में बदल गई—“आज तो आपको हमारी बात माननी ही होगी। चलिये न, बापू !”

“लेकिन तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिए मेरे पास समय नहीं है। फिर कभी चलूँगा।”

दूसरा बालक बोला—“समय आपके पास कब रहता है ? आप तो हमेशा ही किसी-न-किसी काम में लगे रहते हैं।”

तीसरे बालक ने कहा—“बापू, क्या आप ऐसा मानते हैं कि बड़ों को बच्चों के खेल-कूद में कभी शामिल होना ही नहीं चाहिये ?”

गांधी जी बोले—“नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता।”

चौथा बालक सामने आकर बोला—“बापू आप हमारी इतनी-सी बात नहीं मानते ! हम तो आपकी हर बात मान लेते हैं। आप कहते हैं कि तकली चलाओ, हम तकली चलाते हैं।”

पाँचवाँ बालक बोला—“आप कहते हैं कि भगवान की

प्रार्थना किया करो, हम चुपचाप बैठकर भगवान की प्रार्थना करते हैं।”

छठा बालक बोला—“आप कहते हैं तो हम प्रार्थना के समय आँखें भी बन्द कर लेते हैं।”

सातवाँ बोला—“और आपके कहने से हम सबेरे कसरत भी करते हैं।”

फिर सब मिलकर बोले—“देखिये बापू, हम आपकी इतनी वातें मानते हैं, तब आप क्या हमारी एक वात भी नहीं मानेंगे? आज तो आपको हमारे साथ नहाने चलना ही होगा।”

एक बालक दौड़कर बापू की धोती और तौलिया कस्तूर-बा से माँग लाया। दूसरे ने चप्पल उनके सामने लाकर रख दिए।

अब गांधी जी लाचार हो गए। अपना काम समेटकर वे चलने को तैयार हुए। बच्चे इतने खुश हुये कि उनकी किलकारियों से सारा आश्रम गूंज उठा।

परन्तु गांधी जी ने कहा—“मेरी एक शर्त है।”

सब बच्चे उत्सुकतापूर्वक गांधी जो के मुँह की ओर देखने लगे।

गांधी जी बोले—“देखो, तुम लोग गुस्से में आकर कभी-कभी लड़ते हो। एक-दूसरे को गाली भी देते हो। अगर तुम सब यह प्रतिज्ञा करो कि आपस में सभी प्रेम से रहोगे, लड़ोगे नहीं और गाली भी नहीं दोगे, तब मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ।”

बच्चों ने वचन दिया। गांधी जी उनके साथ सावरमती में नहाने चले।

नदी के किनारे पहुँचकर सबके कपड़े एक तरफ साफ जगह पर सम्मालकर रखवाये। फिर पानी में उतरकर सबके हाथ-पाँव, नाक-कान और अंखें तथा सिर मल-मलकर साफ करवाये और फिर गांधी जी सबको तैरना सिखाने में जुट गये।

सब बोल उठे—“अच्छा बापू, आपको तैरना भी आता है! तो हमें जरा तैरकर दिखाइये न!”

बापू को भी जोश आ गया। घोती को लंगोट की तरह कसकर बाँधा और लगे तैरने। बापू कोई डेढ़ सौ गज तैरे होंगे।

बापू को तैरता देखकर बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। वे बापू को शाबाशी देने लगे।

काफी देर के बाद सब लोग नहा-घोकश बाहर निकले और वापस लौटने लगे तो एक बालक ने गांधी जी से पूछा—“बापू, एक बार साबुन लगाने से आपको दाद हो गया था न! वो पूरी बात तो सुनाइये!”

गांधी जी बोले, “हाँ, भाई! तब मैं अठारह-उन्नीस साल का था और जहाज पर सवार होकर बैरिस्टरी पास करने विलायत जा रहा था। उन दिनों मैं साबुन लगाकर नहाने में शान और सभ्यता समझता था। पर जहाज पर समुद्र के द्वारे पानी से नहाना पड़ता था। खारे पानी के कारण साबुन शरीर से पूरी तरह छूट नहीं पाता था। इसी से दाद हो गया था।”

उसी बच्चे ने पूछा—“फिर वह दाद मिटा कैसे?”

गांधी जी ने कहा—“एक डॉक्टर ने दाद पर लगाने की दवाई दी थी। उस दवाई से इतनी जलन होती थी कि मैं

रोने लगता था।”

बच्चों ने अचरज से पूछा—“बिलकुल हमारी तरह रोने लगते थे, बाप जी ?”

गांधी जी बोले, “हाँ, बिलकुल तुम्हारी तरह। दवाई लगाते ही जब चमड़ी पर अंगरे-से जलने लगे तो क्या करता !”

बच्चों को भरोसा नहीं हो रहा था कि इतने बड़े बाप भी कभी हम बच्चों की तरह रो सकते हैं।

शरारती पेंसिल में जान

सन् १९१५ में गांधी जी मद्रास का दौरा करने गये थे और उस समय श्री नटेसन के अतिथि बने थे।

एक दिन वे सुबह दीवानेखाने में बैठे पेंसिल से कुछ लिख रहे थे। इतने में श्री नटेसन का चार-पाँच साल का बालक बहाँ आया और गांधी जी को देखकर ठिठक गया। उसकी चौकन्नी आँखों ने देखा कि गांधी जी एक छोटी-सी पेंसिल को जिस किसी तरह पकड़कर कुछ लिख रहे हैं। उसे आश्चर्य हुआ कि इतने बड़े आदमी इतनी छोटी पेंसिल से क्यों लिख रहे हैं। वह सकुचाता हुआ गांधी जी के पास आया और उन्हें प्रणाम करके बोला—“इतनी छोटी पेंसिल से क्यों लिख रहे हैं। बड़े आदमी बड़ी पेंसिल से लिखते हैं।”

गांधी जी ने हँसते हुए पूछा—“तुम्हारे पास बड़ी पेंसिल है?”

बालक बोला—“हाँ, है। मेरी पेंसिल आपकी पेंसिल से बड़ी भी है और चमकीली भी। उस पर सोने के अक्षर हैं। मम्मी ने मुझे दी है। लाऊँ, देखेंगे मेरी पेंसिल ?”

थोड़ी देर बाद बालक अपनी पेंसिल लेकर आया और गांधी जी को दिखाकर बोला—“देखिये, मेरी पैं.ल आपकी पेंसिल से बड़ी और चमकीली है न ? मैं झूठ नहीं बोला न !”

गांधी जी विनोद में बोले—“तुम्हारी ब्रात सच है। अच्छा, इसे तुम मेरी पेंसिल से बदलोगे !”

बालक थोड़ा सोच में पड़ गया, फिर बोला—“अपनी यह पेंसिल मैं किसी को नहीं देता, बड़ी वहन को भी नहीं। लेकिन आपको वैसे ही दे दूँगा। आपकी पेंसिल भी नहीं लूँगा। पापा जी कहते हैं—आप बड़े अच्छे आदमी हैं।”

गांधी जी ने पूछा—“फिर तुम कैसे लिखोगे ?”

“मैं मम्मी से दूसरी माँग लूँगा। लेकिन आप इसे खोना मत। सँभालकर रखना।”

गांधी जी बोले—“तुम्हारी बात मंजूर है। कभी नहीं खोऊँगा। और जब तक यह काम देगी तब तक इसी से लिखूँगा।”

बालक ने कर्ण-जैसी उदारता से अपनी पेंसिल गांधी जी को दे दी। गांधी जी ने अपनी छोटी-सी पेंसिल थैली में डाल ली और बालक की दी हुई बड़ी पेंसिल से लिखने लगे।

बालक के आनन्द की सीमा न रही। उछलते कूदते जाकर उसने यह खबर अपने सब घर वालों को सुनाई।

उसी साल दिसम्बर में कांग्रेस का अधिवेशन बम्बई में हो रहा था। गांधी जी वहाँ पहुँचे।

एक दिन काका साहब कालेलकर गांधी जी के निवास-स्थान पर उनसे मिलने के लिए पहुँचे तो उन्होंने देखा, गांधी जी मेज पर रखी फाइलें तथा दूसरे कागजात इधर-उधर हटाकर कुछ ढूँढ रहे हैं और उसके न मिलने से परेशान हो

रहे हैं।

काका साहब ने पूछा—“बापू, क्या खोज रहे हैं? मुझे बताइए मैं भी खोजने में आपकी मदद करूँ।”

गांधी जी बोले—“एक छोटी-सी पेंसिल खोज रहा हूँ, पता नहीं कहाँ रख बैठा हूँ।”

काका साहब ने अपनी जेव से दूसरी पेंसिल निकाली और गांधी जी से कहा, “अभी आप मेरी पेंसिल से लिखिये अपना काम न रोकिये।”

गांधी जी बोले—“नहीं काका, जब तक वह पेंसिल नहीं मिलेगी, मुझे चैन नहीं पड़ेगा।”

काका कालेलकर बोले—“लेकिन बापू, उस पेंसिल में ऐसी दया विशेषता है जो उसके लिए आप इतने परेशान हो रहे हैं? मैं भी उसे ढूँढ़ता हूँ। अगर वह न मिली तो उसके बिना क्या कुछ बिगड़ जाएगा?”

“काका, तुम नहीं जानते, वह मेरी बहुत प्रिय वस्तु है उस पेंसिल के साथ एक नन्हे बच्चे के क्रोमल हृश्य का प्यार जुड़ा है। मैं उसे किसी भी हालत में नहीं खो सकता।”

काका साहब ने उत्कण्ठा पूर्वक कहा—“कौन है वह भाग्यवान बच्चा, जरा मैं भी तो सुनूँ?”

गांधी जी बोले—“मद्रास वाले नटेसन का चार-पाँच साल का छोटा लड़का। बड़ी ममता से उसने मुझे यह पेंसिल दी थी और मुझसे यह बचन लिया था कि मैं उसे कभी खोऊँगा नहीं। तब से अब तक मैंने इस पेंसिल को बड़े यत्न से सँभाल कर रखा है और अपने कई महत्वपूर्ण पत्र इसी से लिखे हैं।”

गांधी जी के मन की वेदना को समझकर काका कालेलकर भी उस पेंसिल को खोजने में जुट गए।

पर वह शारारती पेंसिल एक फाइल के बीच में, दम साध-
कर छिपी बैठी थी और उसने गांधी जी को परेशान कर
दिया था। शायद दक्षिण अफ्रीका में जनरल स्मट्स की सर-
कार को और भारत में ब्रिटिश सरकार को छकाने वाले
सत्याग्रही गांधी का इतना प्यार पाकर वह मन-ही-मन इटला
रही थी और नखरे दिखा रही थी।

आखिर काफी देर तक खोजबीन करने के पश्चात् जब
काका साहब ने पेंसिल का वह टुकड़ा, जो विस्ते-विस्ते दो इंच
का रह गया था, गांधी जा के हाथ पर रखा तो गांधी जी
खुशी के मारे नाच उठे और बोले—“अब जान में जान आई।”

मेहनत का फल

१९४२ के आन्दोलन में गिरफ्तार होकर गांधों जी आगा-
खाँ महल में नजरबन्द थे। वहाँ रहते-रहते जब वे बीमार हो
गए और उनकी स्थिति चिन्ताजनक हो गई तो सरकार ने
घबराकर उन्हें छोड़ दिया।

जेल से छूटने के बाद बम्बई के जुहू नामक स्थान पर वे
स्वास्थ्य-लाभ कर रहे थे। डॉक्टरों ने उनको पूर्ण विश्राम की
सलाह दी थी, लेकिन दर्शनार्थियों का ऐसा ताँता लगा रहता
कि उनको पूरा विश्राम मिल नहीं पाता था। तब श्रीमती
सरोजिनी नायडू ने बीड़ा उठाया और जिस बँगले में गांधी
जी ठहरे थे उसके दरवाजे पर अगले दिन वे सबेरे से ही स्वयं
पहरा देना प्रारम्भ किया। वे लोगों की नाराजी मोल लेकर
भी किसी को गांधी जी के पास नहीं जाने देती थी।

थोड़ी देर बाद एक साँबले-से रंग का झुखे और बिखरे बालों वाला, मैली निक्कर और फटी हुई कमीज पहने, बारह-तेरह वर्ष का कमजोर-सा बालक वहाँ आया और उसने श्रीमती नायदू को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए कहा—“माता जी, मुझे बापू को कुछ देना है, इसलिए मुझे मिलने के लिए अन्दर जाने दीजिये।”

श्रीमती नायदू बोलीं—“बापू जी की तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए तुम अन्दर नहीं जा सकते।”

बालक विनयपूर्वक गिड़गिड़ाकर बोला, “मैं कई मील से पैदल चलकर आया हूँ और बापू जी के लिए थोड़े फल लाया हूँ वे बीमार हैं और कमजोर हो गए हैं न, इसलिए फल खाने से उनको ठीक रहेगा।”

श्रीमती नायदू ने उससे पूछा “खरीदकर लाए हो या किसी से माँगकर ?”

बालक के स्वाभिमान को थोड़ा आघात लगा वह बोल—“मेरे माँ-बाप कभी भीख नहीं माँगते, उन्होंने मुझे कभी भीख माँगना नहीं सिखाया। मेहनत-मजदूरी करके जो थोड़े बहुत पैसे मैंने कमाए थे उन्हीं से ये फल खरीदकर बापू को देने के लिए लाया हूँ।”

श्रीमती नायदू ने इस बच्चे को बापू के पास जाने की इजाजत दे दी, पर उसे सख्त ताकीद भी कर दी कि अन्दर जाकर बापू से एक भी शब्द न बोलना और फल देकर तुरन्त वापस चले आना।

बालक खुश होता हुआ अन्दर की ओर बढ़ा ही था कि गांधी जी की सेवा में रहने वाले दो साथियों ने उसे रोका—“ऐ लड़के ! कहाँ घुसा जा रहा है ? किससे पूछकर अन्दर

आया है ?”

बालक ने निडर होकर जवाब दिया—“बाहर दरवाजे पर जो माता जी बैठी हैं उनसे पूछकर।”

रुखी आवाज में गांधी जी के एक सेवक साथी ने पूछा—“तेरे हाथ में यह क्या है और तू किसलिए आया है ?”

बालक ने कहा—“फल हैं। बापू जी को देने के लिए लाया हूँ।”

दूसरे साथी ने और कड़ककर पूछा—“फल कहाँ से लाया है ? कहीं से चुराकर तो नहीं लाया ?”

बालक ने हुंकारकर कहा—“चोरी करना मैं हराम समझता हूँ साहब ! मैं, मेरे पिता और मेरी माता मेहनत करते हैं और सदा मेहनत की कमाई ही खाते हैं।”

बालक के इस तीखे उत्तर से दोनों सेवक साथी खिसियाकर बोले—“अच्छा, ज़ि फल देकर तुरन्त चले आना।”

बालक की चाल धीमी पड़ गई। वह मन में सोचने लगा, मैंने तो सुना था कि गांधी जी किसी को भी छोटा नहीं समझते और अपने दुश्मन को भी प्यार करते हैं, पर उनके पास रहने वाले ये आदमी ? मैं गरीब हूँ, मेरे कपड़े मैले और फटे हुए हैं, इसलिए क्या मैं चोर हो गया ?

इसी तरह के विचारों में झूबता उतराता वह गांधी जी के पास पहुँचा ; उनके चरणों में प्रणाम किया और पोटली खोल कर ताजे सन्तरे, अंगूर और सेव उनके चरणों के पास रख दिये। इसके बाद तुरन्त प्रणाम कर जब वह वापस लौटने के लिए मुड़ा तब गांधी जी ने उससे प्रेम से पूछा—“क्यों बेटा, तुम्हारा क्या नाम है ? तुम कहाँ से आए हो ? तुम्हें दरवाजे पर किसी ने रोका नहीं ? इतने बढ़िया फल तुमने स्वयं नहीं

खाए, मेरे लिए क्यों ले आए ?”

बालक कुछ बोला नहीं ।

गांधी जी को लगा कि वह शायद बोल नहीं सकता, इसलिए अपनी वाणी में और मिठास भरकर बोले—“तुम मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देते ? बोलने में तुम्हें कोई तकलीफ तो नहीं होती ?”

तब बालक से बिना बोले नहीं रहा गया—“मैं गूँगा नहीं हूँ बापू जी, लेकिन दरवाजे पर जो माता जी बैठी हैं उन्होंने मुझसे चचन ले लिया है कि मैं आपसे एक भी शब्द बोले खिना वापस लौटकर आऊँगा ।”

गांधी जी बोले—“अच्छा यह बात है ! पर बेटा, तुम मेरे लिए इतने सारे फल क्यों लाए हो ?”

बालक बोला—“मेरे पिता जी कहा करते हैं कि फल खाने से बीमार की सेहत जल्दी सुधरती है ।”

फलों को देखकर गांधी जी ने कहा—“फल तो बड़े अच्छे लग रहे हैं पर इतने फल खरीदने के लिए तुमने पैसे कहाँ से जुटाए ?”

“बापू जी, मैं सुवह एक सेठ के बांग में माली के साथ काम करता हूँ और दिन में मजदूरों की पाठशाला में पढ़ने जाता हूँ । इस हफ्ते मेरे काम के जो पैसे मिले थे, उन्हीं से ये फल खरीदकर लाया हूँ ।”

गांधी जी बोले—“अच्छा, तुम पढ़ते भी हो और काम भी करते हो ? पढ़ने के साथ-साथ मेहनत-मजदूरी करने वाले लड़के मुझे बहुत अच्छे लगते हैं । तुम्हारे फल जरूर खाऊँगा । लेकिन लब नहीं । आधे मैं खाऊँगा, आधे तुम खाना ।”

बालक बोला—“नहीं बापू, ये सब फल आपको ही खाने

होंगे। आपको तन्दुरुस्त होकर देश की बहुत-बहुत सेवा करनी है।”

देशसेवा की बात बालक के मुख से सुनकर गांधी जी गद्गद हो गए और बोले—“अच्छा तेरे दिये हुए फल मैं खाऊँगा, तो मेरे दिये हुए तुझको भी खाने दड़ेंगे।” और यह कहकर गांधी जी ने एक बढ़िया सेव चुनकर बालक के हाथ पर रख दिया और जब बालक प्रणाम करके जाने लगा तो प्यार से उसकी पीठ थपथपा कर कहा—“मेहनत के पैसों से खरीदी हुई तुम्हारी यह भेंट मेरी नजर में सबसे कीमती भेंट है। भगवान करे, तुम जीवन में सदा अपनी मेहनत की ही रोटी खाओ।”

इतने सारे अर्जुन

आश्रम में जो बालक रहते थे वे अक्सर गांधी जी से तरह-तरह के सवाल पूछते रहते थे। समय के अभाव के कारण गांधी जी उन प्रश्नों का उत्तर बहुत संक्षेप से देते थे, जिससे बालकों को सन्तोष नहीं होता था।”

एक बार एक बालक ने पूछा—“बाप्, आप हमें गीता को बातें सुनाते हैं। गीता में अर्जुन एक श्लोक में प्रश्न पूछता है और श्रीकृष्ण उसका उत्तर पूरे एक अध्याय में देते हैं। लेकिन हम लोग आपसे एक पन्ना भरकर प्रश्न पूछते हैं, तो भी आप उसका उत्तर दो-तीन शब्दों में या एक वाक्य में ही निवटा देते हैं। यह कहाँ तक ठीक है?”

गांधी जी बोले—“भगवान श्रीकृष्ण को एक ही अर्जुन के प्रश्नों का उत्तर देना होता था, जबकि मुझसे प्रश्न पूछने वाले

तुम कई अर्जुन हो । मैं सब अर्जुनों को इतने लम्बे उत्तर कैसे दे सकता हूँ ?”

यह सुनकर सब अर्जुन हँस पड़े और उनकी शिकायत हँसी में ही उड़ गई ।

बिना चाबी का घर

१९३५ के भारत कानून के अनुसार जिन दिनों देश में चुनाव हो रहे थे, उन दिनों एक अंग्रेज महिला गांधी जी से मिलने के लिए सेवाग्राम आई । उस महिला ने ब्रिटिश सरकार की उदारता और सदाशयता का जिक्र करते हुए भारत-कानून और चुनाव का प्रसंग छोड़ा । (यह स्वराज्य-प्राप्ति से पहले के सन् १९३३ के चुनावों के समय की बात है ।)

तब गांधी जी ने उस अंग्रेज महिला से कहा—“आप लोगों की उदारता से मैं कब इन्कार करता हूँ । लेकिन आप लोगों की उदारता इस ढंग की है कि आपने हमें घर तो दे दिया, लेकिन उसकी चाबी अपने पास ही रख ली ।”

उस समय चुनाव का अधिकार बहुत सीमित था और असली सत्ता प्रान्तों के अंग्रेज गवर्नरों और ब्रिटिश सरकार के श्रतिनिधि वायसराय के पास ही रहती थी, इसलिए भारत-कानून की असफलता और अपर्याप्तता की ओर गांधी जी का यह कटाक्ष काफी मतलब रखता था । अंग्रेज महिला इस कटाक्ष को समझ गई और उसके पास हँसने के सिवाय और कोई चारा नहीं रहा ।

बेचारा दिल क्या जाने !

सम्य समाज में अग्रगण्य समझी जाने वाली एक महिला धीरे-धीरे गांधी जी से परिचय प्राप्त करके काफी घनिष्ठता का दावा करने लगी थी। एक दिन उसने गांधी जी के सम्बन्ध में कोई गैर-जिम्मेदारी की बात कह दी।

वह बात गांधी जी तक भी पहुँची। ऐसी उड़ती अफवाहों के बारे में गांधी जी प्रायः विश्वास नहीं किया करते थे। वे समझते थे कि सुनी-सुनाई बातों को बढ़ा-चढ़ाकर कहने की लोगों की आदत होती है, फिर भी सचाई जानने के लिए गांधी जी ने उस महिला से ही पुछवाया।

उस महिला ने गुस्से में आकर कहला भेजा—“मुझसे क्या पुछवाते हैं? अपने दिल से ही पूछिये न!”

तब गांधी जी ने उस महिला को एक विनोदपूर्ण पत्र लिखा :—

‘तुम बहुत गम्भीर मालूम होती है लेकिन मुझे तो हँसना ही चाहिए न! वरना मैं मर जाऊँ। तुम्हारी जीभ चुपके से किसी के कान में कुछ कह दे, तो मेरा यह बेचारा दिल उसे कैसे जान सकता है?’

सब महात्मा बन चले हैं

रसोईघर के बर्तन साफ करते समय या सफाई का कोई और काम करते समय सेवाग्राम के आश्रमवासी आधी बाँह

का कुर्ता और जाँविया पहन लेते थे। उस पोशाक को देख कर एक विदेशी महिला श्रीमती मेरी चेजली ने गांधी जी से कहा—“यह पोशाक मुझे बहुत नापसंद है।”

गांधी जी ने पूछा—“इस पोशाक ने ऐसा क्या गुनाह किया है?”

श्रीमती चेजली बोली—“यह अंग्रेजी पोशाक है।”

गांधी जी ने कहा—“अंग्रेजी होने से क्या हो गया? अंग्रेजी पोशाक में अगर कोई अच्छाई हो तो उसे स्वीकार करने में हमें एतराज क्यों होना चाहिए, भले ही अंग्रेजों को हमारी हिन्दुस्तानी पोशाक से कितनी ही नफरत क्यों न हो!”

श्रीमती चेजली ने कहा—“मेरी राय इससे उल्टी है। हिन्दुस्तानी पोशाक इतनी कलामय है कि उसके साथ विदेशी पोशाक मिला देने से उसकी कला नष्ट हो जाती है; कहाँ आपके झँगूमते ढीले कुर्ते और हवा में फहराती धोती या साड़ी और कहाँ अंग्रेजी ढंग के छोटे-छोटे कसे हुए जाँविये!”

गांधी जी बोले—“तब अगर मैं अपने आश्रमवासियों को सोला हैट पहनने की सलाह दूँ, तो आप चकरा ही जाएँगी?”

पास ही मीरा बहन बैठी हुई थीं। वे बोलीं—“इनको तो पता नहीं, पर मुझे चक्कर जरूर आने लगेंगे। मुझे तो वह हैट कभी भी अच्छा नहीं लगा।”

गांधी जी ने कहा—“इससे मालूम होता है कि तुम जो हैट पहनती थी वह तुम्हारे सिर पर ठीक नहीं आता होगा!”

मीरा बहन ने कहा—“नहीं-नहीं, मेरे पास उस समय बढ़िया-से-बढ़िया हैट थे। पर उन टोपियों से मेरा सिर

हमेशा दुखने लगता था ।”

तब गांधी जी ने कहा—“मुझे कहना चाहिए कि तुम्हारा सिर ही बेड़ौल होगा । वह टोप तो धूप में काम करने वालों के लिए बहुत अच्छी चीज है ।”

मीरा बहन ने कहा—“मैं नहीं नानती । मैं तो हैट के बजाय पगड़ी पहनना पसन्द करूँगी ।”

गांधी जी बोले—“हमारे सेठ-साहूकार लोग या सिख भाई जो पगड़ी पहना करते हैं, वह धूप से तो उनकी रक्षा नहीं कर सकती ।”

इतने में श्रीमती चेजली बोल उठीं—“मुझे हिन्दुस्तानी और अंग्रेजी पोशाक की यह खिचड़ी पसन्द नहीं है । देखिये न, आपकी यह कछनी कितनी सुन्दर है ! आश्रम के अन्य भाई ऐसी ही कछनी क्यों न पहनें ? मेरा कहना तो यह है कि लोग या तो शुद्ध अंग्रेजी पोशाक ही पहनें या शुद्ध हिन्दुस्तानी ही पहनें ।”

गांधी जी बोले—“परन्तु शुद्ध अंग्रेज बनने का अर्थ है साहब बनना । तब तो ऐसे साहबों को शराब की दुकानों पर भी जाना चाहिए ?”

सबको हँसता हुआ देखकर गांधी जी बोले—“और जहाँ तक मेरी कछनी का सवाल है, वह तो सुन्दर है ही । इसमें क्या शक है ! लेकिन ये बेचारे भी मेरी-जैसी कछनी पहनने लग जाएँ तो इनकी शामत आ जाए । लोग इनके बारे में भी कहने लगें कि ये सब भी महात्मा बनने चले हैं ।”

मूर्खों का सरदार

जिन दिनों गांधी जी अपनी आत्मकथा लिख रहे थे उन दिनों एक प्रसिद्ध सज्जन उनके पास आकर कहने लगे—“महात्मा जी, आपको याद है न कि अमुक घटना के समय मैं भी आपके साथ था ? आत्मकथा लिखते समय जब उस घटना का प्रसंग आवे तब आप मेरा नाम लिखना कहीं भूल न जाइये !”

उन सज्जन के चले जाने के पश्चात् एक अन्य भाई ने गांधी जी से पूछा—“वे सज्जन क्या कह रहे थे ?”

गांधी जी ने पूरी बात सुनाते हुए कहा—“वह तो मूर्खों का सरदार है। उसे यह नहीं पता कि आत्मकथा उसके-जैसे लोगों के लिए नहीं लिखी जा रही। वह तो ऐसे स्त्री-पुरुषों को अमर करने के लिए लिखी जा रही है जिनकी महत्ता दुनिया कभी नहीं जान पाएगी।”

दूटी-फूटी हिन्दी में भी सार

एक बार गांधी जी बंगलोर में ठहरे हुए थे, तब वहाँ विद्यार्थियों के प्रतिनिधि और लेडी रमन उनको बंगलोर की साइंस इस्टट्यूट में पधारने का निमन्त्रण देने आए। इस प्रकार के अन्य सब निमन्त्रण गांधी जी अस्वीकार कर चुके थे। परन्तु विज्ञान से उन्हें प्रेम था, इसलिए उन्होंने विद्यार्थियों की बात मान ली। परन्तु साथ में एक शर्त रखी—“अगर सर

सी० वी० रमन मुझ कोई जादू दिखाएँ तो मैं उनकी साइंस-इंस्टिट्यूट में आ सकता हूँ ।”

विद्यार्थियों ने गांधी जी की शर्त स्वीकार कर ली । उसके बाद वे गांधी जी के हस्ताक्षर लेने की होड़ में फड़ गए ।

उस इंस्टिट्यूट में जाकर जब गांधी जी लेडी रमन के साथ बातचीत कर रहे थे तभी सर रमन कमरे में प्रविष्ट हुए ।

लेडी रमन गांधी जी के साथ टूटी-फूटी हिन्दी में बात कर रही थीं । अपनी पत्नी को हिन्दी में बात करते देखकर उस पर टीका करते हुए सर रमन ने गांधी जी से पूछा—“इनकी हिन्दी में कोई सार भी है ?”

गांधी जी बोले—“सार क्यों नहीं है, इनकी हिन्दी कितनी ही टूटी-फूटी क्यों न हो, उसमें आपके विज्ञान-जितना सार तो है ही !”

मोहम्मद गांधी

एक दिन गांधी जी को डाक में ऐसे लिफाफे आए जिनके पते पर उनके नाम की जगह ‘मोहम्मद गांधी’ लिखा था । कुछ लोग उनको मुसलमानों का पक्षयाती समझते थे और उन पर मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति अपनाने का आरोप लगाया करते थे । ऐसे ही लोगों ने उनके नाम में पहले ‘मोहम्मद’ लगाना शुरू किया था । उन लोगों का भाव यह था कि गांधी तो मुसलमान हो गया है ।

इसी प्रकार कुछ लोग उन्हें पूँजीपतियों का खुशामदी और साम्यवादियों का सहायक भी कहा करते थे । जब से

गांधी जी ने जिन्हा साहब के लिए 'कायदे आजम' का विशेषण प्रयुक्त करना शुरू किया था, तब से उन्हें 'जिन्हा का गुलाम' कहने वालों की भी कमी नहीं थी।

इस प्रकार अपने प्रति नाराजगी प्रकट करने वाले लोगों पर गांधी जी मन-ही-मन हँसा करते थे।

एक दिन उन्हें लक्ष्य करके गांधी जी कहने लगे—“मुझे महात्मा की उपाधि भी लोगों ने ही दी है और बापू की पदबी भी लोगों ने ही दी है। इसलिए अब अगर ये नई उपाधियाँ भी लोग दें तो मुझे उनका स्वागत ही करना चाहिये।”

सिर दिया है, नाक नहीं

'बारडोली सत्याग्रह' के समय गांधी जी बारडोली में ही ठहरे हुए थे। एक दिन कुछ किसान गांधी जी से मिलने आए। उस सत्याग्रह का नेतृत्व सरदार वल्लभ भाई पटेल के हाथ में था। किसानों के अगुआ का परिचय गांधी जी से कराते हुए एक मित्र ने कहा—“यह अपने गाँव के पटेल (मुखिया) हैं। और सरदार वल्लभ भाई से कहने आए हैं कि हमने आपको अपना सिर दिया है, लेकिन अपनी नाक नहीं दी।”

इसका आशय यह था कि सरदार वल्लभ भाई के कहने के अनुसार ये किसान बड़े-से-बड़ा बलिदान करने को तैयार थे, लेकिन किसी ऐसे काम में शामिल होने को तैयार नहीं थे जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को आघात पहुँचे।

गांधी जी ने उन किसानों से कहा—“जैसी नाक आप लोगों की है वैसी ही नाक वल्लभ भाई की भी होगी न? आपकी नाक कटने का कोई प्रसंग आए तो वल्लभ भाई

की नाक तुमसे पहले कटेगी। इसलिए आपकी नाक की रक्षा करने में ही वल्लभ भाई की और देश की शोभा है। यहाँ तक तो ठीक है, रही आपके सिर देने की बात, उसकी कसौटी भविष्य में आने वाली है।”

सब किसानों ने उत्साह के साथ कहा—“हम उसके लिए पूरी तरह तैयार हैं।”

पत्रकारों से भगवान बचाए !

बात उन दिनों की है। जब गांधी जी नोआखाली की पद-यात्रा कर रहे थे बिहार में भीषण साम्प्रदायिक उपद्रव प्रारम्भ हो गए और नोआखाली-काँड़ का बदला लिया जाने लगा। तब गांधी जी शान्त न रह सके। वे नोआखाली से विहार के लिए रवाना हुए।

गांधी जी किस स्टेशन पर उतरेंगे यह बात गुप्त रखी गई थी। लेकिन मुस्लिम नेताओं को पता था, इसलिए अब्दुल बारी साहब और डॉ० सैयद महमूद उनके स्वागत के लिए स्टेशन पहुँच गए थे।

वातावरण में उदासी छाई हुई थी। गांधी जी स्टेशन पर अब्दुल बारी और डॉ० सैयद महमूद को देखते ही बोले—“क्यों, आप लोग तो अभी तक जिन्दा हैं न ?”

इसके बाद गांधी जी की नजर कैमरे वालों पर पड़ी और उनके मुँह से निकला, “अरे इन फोटोग्राफरों और अखबार-नवीसों से तो भगवान भी नहीं बच सकता। इनको पता नहीं कहाँ से सब खबरें पता लग जाती हैं !”

गांधी जी के इस एक वाक्य ने ही वातावरण की सारी

उदासी को धो-पौँछकर साफ कर दिया ।

शुभ-गमन

सन् १९३३ में जब गांधी जी मध्य प्रदेश का दौरा कर रहे थे तब उन्हें जो भेटे दी गई उनमें से एक पर 'शुभ आगमन' के बदले 'शुभ गमन' लिखा हुआ था । उस भेट को हाथ में लेकर गांधी जी बोले—“अच्छा, आप लोग चाहते हैं तो मैं वहाँ से चला जाऊँगा । लीजिये, मैं यहाँ से सीधा बैतूल (मध्य प्रदेश का अन्य नगर) जाता हूँ ।”

उसके बाद म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष ने मानपत्र पढ़ा और पढ़ने के पश्चात् मान-पत्र को लेकर वे जाने लगे तो तुरन्त गांधी जी बोल उठे—“आप इसे लेकर कहाँ जा रहे हैं ? यह तो मुझे देने के लिए है ।”

गांधी जी के इस एक वाक्य से श्रोताओं में हँसी की लहर दौड़ गई ।

तीन-तीन बापा

गांधी जी महाबलेश्वर में स्वास्थ्य-लाभ कर रहे थे, इस-लिए 'कस्तूरबा स्मारक निधि' के ट्रस्टियों ने ट्रस्ट की बैठक महाबलेश्वर में ही रखी । गांधी जी के सबसे छोटे पुत्र देवदास गांधी ट्रस्ट के सदस्य होने के नाते वहाँ मौजूद थे । उन्हें कुछ कहना था, परन्तु अध्यक्ष-पद पर अपने पिता को आसीन देख-कर कहने में संकोच कर रहे थे । आखिर बोले—“बापू, इस-

प्रश्न पर मुझे कुछ कहना है।”

गांधी जी बोले—“जरूर ! जो तुम्हें ठीक लगे वह जरूर कहो।”

देवदास ने कहा—“लेकिन बापू, आप जिस बात का समर्थन कर रहे हैं मुझे तो उसके विरुद्ध कहना है।”

गांधी जी बोले—“आज्ञाकारी पुत्र को अपने पिता के मुँह पर ऐसी बात कहने में संकोच होना स्वाभाविक है। लेकिन तुम्हें मन में संकोच नहीं रखना चाहिए।”

फिर ठक्कर बापा की ओर अँगुली का इशारा करते हुए बोले—“और फिर यहाँ तो एक के बजाय, दो बापा (बापू-बापा-पिता) बैठे हैं, इसलिए मैं तुम्हारी परेशानी समझ सकता हूँ।”

राजा जी भी उस सभा में मौजूद थे। देवदास गांधी के ससुर होने के नाते वे भी उनके लिए पितातुल्य थे। जब उन्होंने यह बात सुनी तो बोले—“बापू, यहाँ दो नहीं, तीन बापा बैठे हैं।”

बैठक में थोड़ी देर के लिए हँसी की लहर दौड़ गई।

पिता को भोजन की बात ही नहीं

एक दिन देवदास गांधी, गांधी जी से मिलने आए। उस दिन श्री देवदास, गांधी जी के निजी सचिव श्री प्यारेलाल को खाना खिलाने के लिए अपने घर ले-जाना चाहते थे, इसलिए गांधी जी से अनुमति लेने की खातिर उन्होंने कहा—“बापू, आज मैं प्यारेलाल को भोजन के लिए अपने साथ ले-जाना चाहता हूँ।”

गांधी जी बोले—“जरूर ले जाओ। लेकिन तुम्हारे मन में कभी मुझे भी भोजन कराने का विचार आता है?”
पिता की इस बात का पुत्र क्या उत्तर देता !

समय बेकार नहीं गया

एक बार विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर गांधी जी के आश्रम में आए और उनसे खूब देर तक बातें करते रहे। गांधी जी उस समय चर्खा चला रहे थे। वे कातते गए और कविवर से बात करते रहे।

अन्त में कविवर ने विदा लेते हुए गांधी जी से कहा—“मैंने आपका इतना समय लिया, इसके लिए माफ़ करें।”

गांधी जी बोले—“नहीं-नहीं, माफी की कोई बात नहीं। मेरा समय जरा भी बेकार नहीं गया। आप तो देख ही रहे हैं कि मैं बात करते-करते भी लगातार कातता रहा, इसलिए मेरा समय बिल्कुल भी बेकार नहीं गया।”

प्रोफेसर का काम नहीं

कलकत्ता कांग्रेस के अवसर पर गांधी जी ने एक खादी भण्डार का उद्घाटन किया था। उद्घाटन-समारोह के बाद धोषणा की गई कि खादी-बिक्री के बिलों पर गांधी जी के हस्ताक्षर होंगे। यह धोषणा सुनकर इतनी भीड़ उमड़ी कि उसे सँभालना मुश्किल हो गया। अव्यवस्था से बचने के लिए

गांधी जी ने कहा—“जितने रूपये की खादी आप लोगों को लेनी हो, उतने रूपये मेरे हाथ में रख दीजिये, मैं उतने रूपये का विल बनाकर उस पर हस्ताक्षर कर दूँगा। माल आप लोग पीछे लेते रहना।”

थोड़ी ही देर में कई हजार रूपये इकट्ठे हो गए। आचार्य कृपलानी पास ही खड़े थे, वे बोले—“लेना-देना कुछ नहीं, बनिये ने मुफ्त में कई हजार रूपये मार लिये।”

गांधी जी बोले—“ऐसा काम बनिये ही कर सकते हैं। तुम्हारे जैसे प्रोफेसरों के बस का यह काम नहीं है।”

रूपये के ले खाने को

एक बार गांधी जी रेलगाड़ी द्वारा दिल्ली आ रहे थे। दिल्ली से कुछ मील दूर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के छात्रों को जब यह पता लगा कि गांधी जी आ रहे हैं, तो उनके दर्शनों और अपनी हस्तलिखित पत्रिका के लिए उनका सन्देश लेने को लालायित हो उठे।

गुरुकुल के निकट तुगलकाबाद स्टेशन पड़ता था, परन्तु जिस मेल-गाड़ी से गांधी जी आ रहे थे वह वहाँ ठहरने वाली नहीं थी। इसलिए गुरुकुल के विद्यार्थी वहाँ से चार मील दूर फरीदाबाद के स्टेशन पर आधी रात को ही पहुँच गए। गाड़ी वहाँ से रात के तीन बजे के आस-पास गुजरने वाली थी।

कई घण्टे की प्रतीक्षा के बाद जब गाड़ी ने प्लेटफॉर्म पर प्रवेश किया तो सम्पूर्ण वातावरण ‘गांधी जी की जय’ के नारों से गूँज उठा। शोर सुनकर गांधी जी ने खिड़की खोल-कर देखा कि कौन-सा स्टेशन है और इस आधी रात को नारे

कौन लगा रहे हैं।

इतने में ही विद्यार्थी उन तक पहुँच गए और उनसे सन्देश के लिए प्रार्थना की। परन्तु गांधी जी पाँच रुपये लिये बिना अपने हस्ताक्षर भी नहीं करते थे, फिर सन्देश का तो सवाल ही नहीं था।

गांधी जी ने अपनी फीस माँगी। गुरुकुल के छात्रों के पास पैसे कहाँ से आते?

आखिर किसी तरह पैसे इकट्ठे करके उनको दिये गए और तब उनसे संक्षिप्त सन्देश और हस्ताक्षर प्राप्त किये गए। इतने में ही गाड़ी चल पड़ी। एक छोटे विद्यार्थी ने अपने बाल-स्वभाव के कारण गांधी जी से पूछा—“आप इन रुपयों का क्या करेंगे?”

गांधी जी ने भी बालक बनते हुए, मुस्कराकर कहा—“केले खाऊँगा!”

प्रेम की चपत

गांधी जी के बारे में उनके निकटवर्ती लोगों में यह बात प्रसिद्ध थी कि वे जिससे जितना अधिक स्नेह करते हैं उसके उतने ही जोर का चपत गाल पर या पीठ पर मारते हैं।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ को जब यह बात पता लगी तो उन्होंने गांधी जी से कहा—“बापू, आप अपना प्रेम प्रकट करने के लिए मुझे तो कभी चपत नहीं मारते।”

गांधी जी बोले—“हाँ, इसलिए कि कहीं तुम भी उसी सिक्के में भुगतान करने लगो तो मेरा तो कच्चमर ही निकल जाएगा।”

गधा-सेवा-संघ

एक बार एक कार्यकर्त्ता गांधी जी के पास आए और उनसे कहने लगे—“बापू, आपने गौओं की सेवा करने का व्रत लिया है और उनके लिए जगह-जगह गोशालाएँ खुलवाई हैं। इसी उद्देश्य से आपने गो-सेवा-संघ की स्थापना की है। जमनालाल जी को तो इसी काम पर लगा दिया है। परन्तु एक ऐसा प्राणी भी है जिसके प्रति लोग बिल्कुल दया नहीं दिखाते ; उल्टे उसे खूब मारते हैं। वह प्राणी है—गधा। क्या आप इस गरीब के लिए कुछ नहीं करेंगे ?”

गांधी जी बोले—“बात तो आप ठीक कहते हैं। मैंने गौओं की सेवा के लिए गो-सेवा-संघ की स्थापना की है। यदि आप गधा-सेवा-संघ की स्थापना करके उसके संचालक बन जाएं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।”

बेटा बाप को गोद लेगा

एक दिन श्री जमना लाल बजाज भाव-विभोर होकर गांधी जी से बोले—“बापू, आप मुझसे कितना स्नेह करते हैं वह मैं जानता हूँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आपके चार पुत्र तो पहले से हैं ही, मैं पाँचवाँ पुत्र बनना चाहता हूँ। आप मुझे गोद ले लीजिये !”

गांधी जी लम्बे-चौडे डील-डोल वाले जमना लाल बजाज की ओर देखकर बोले—“आपका चाहनी तो ठीक है !

लोग बेटे को गोद भी लिया करते हैं, लकिन यहाँ तो बेटा ही बाप को गोद में ले लेगा ।”

लाठी नहीं पार्टनर

बात तब की है जब गांधी जी गोलमेज कांफ्रेंस में लन्दन गए�े । एक रात डिनर के बाद अंग्रेजी सम्यता के अनुसार लोग अपने-अपने पार्टनर के साथ नाचने लगे ।

किसी ने गांधी जी से कहा—“आप भी अपना पार्टनर चुन लीजिये न !”

गांधी जी बोले—“मेरा पार्टनर तो मेरे साथ है ।”

वह व्यक्ति गांधी जी की अगल-बगल में देखता रहा । उसे कोई नजर नहीं आया, तो उसने पूछा—“कौन है आपका पार्टनर ?”

गांधी जी ने अपनी लाठी की ओर इशारा करते हुए कहा—“यह रहा मेरा पार्टनर ।”

हिन्दी न जानने वाला हाथ

सन् १९३३ की बात है । गांधी जी पूना के तिलक-स्मारक भवन में भाषण देने गए थे । भवन में प्रवेश के लिए दो आने का टिकट था ।

गांधी जी ने हिन्दी में भाषण शुरू किया ही था कि कुछ लोगों ने ‘इंगलिश प्लीज़’ (कृपया अंग्रेजी में बोलिये) का नारा लगाना शुरू कर दिया ।

गांधी जी ने अपना हाथ ऊपर उठाकर सबको शान्त करते हुए हिन्दी में ही कहा—“जो लोग हिन्दी समझ सकते हैं वे अपना हाथ ऊपर उठाएँ।”

कुछ लोगों ने अपने हाथ ऊपर उठाए। उनसे हाथ नीचे करने को कहकर, गांधी जी फिर हिन्दी में बोले—“अब जो लोग हिन्दी नहीं जानते वे अपना हाथ ऊपर उठाएँ।”

उनका यह वाक्य सुनते ही एक व्यक्ति ने हाथ खड़ा किया तो सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। क्योंकि गांधी जी ने हिन्दी में प्रश्न किया था इसलिए जो व्यक्ति उनके प्रश्न को समझ गया वह हिन्दी न समझने के लिए हाथ कैसे उठा सकता था? सब श्रोता इसी बात पर हँसे थे।

गांधी जी द्वारा इस प्रकार के विनोद के परिणामस्वरूप अंग्रेजी वालों का आग्रह रखा रह गया और गांधी जी ने हिन्दी में ही भाषण दिया।

औंधी कुलदेवी

सन् १९४७ में नोआखाली और बिहार के उपद्रवों के कारण गांधी जी बहुत चिन्तित थे। वे जल्दी-से-जल्दी वहाँ की जनता की सेवा में पहुँचना चाहते थे। फिर भी अनेक कारणों से उनका दिल्ली से निकलना हो नहीं पा रहा था। अचानक उन्हीं दिनों गांधी जी का कश्मीर जाने का प्रोग्राम बन गया। जाड़े का मौसम था, लेकिन कश्मीर जाना जरूरी था। यह जानकर सरोजिनी नायदू जिनको गांधी जी मजाक में अम्माजान कहा करते थे, बोलों—“मैं पूछती हूँ कि बुढ़ापे में दिमाग का पेच कुछ ढीला हो जाता है क्या?”

गांधी जी बोले—“आप अपने अनुभव से ही बताइये न ?”

अम्मा जान ने कहा—“देखिये, यहाँ जाड़ा शुरू हो चुका है और आप कश्मीर जाने को राजी हो गए। यह सब उल्टी खोपड़ी की निशानी नहीं तो क्या है ?”

गांधी जी बोले—“लेकिन अम्मा जान, हम मूढ़ लोगों की तो कुलदेवी ही औंधी है।

अम्माजान बोलीं—“यह बात आपने पते की कही है !”

गांधी जी बोले—“तुम बिना पते की बात की मुझसे आशा ही कैसे कर सकती हो ?”

परमेश्वर का अधिकारी !

दक्षिण अफ्रीका में जब गांधी जी का जीवन काफी संकट में था तो उनके एक अंग्रेज साथी श्री केलनबैक, जिनकी गांधी जी में बहुत श्रद्धा थी, उनकी रक्षा के लिए अपने पास सदा एक पिस्तौल रखने लगे। गांधी जी को इस बारे में कुछ पता नहीं था।

गांधी जी जहाँ कहीं भी जाते, केलनबैक चुपचाप उनके साथ हो लेते। एक बार गांधी जी अपने दफतर का काम पूरा करके बाहर जाने के लिए खूंटी पर लटके हुए कोट को उतारने लगे। पास ही केलनबैक का कोट भी टैंगा हुआ था। गांधी जी ने देखा कि उनकी जेब में पिस्तौल पड़ी है।

गांधी जी ने पिस्तौल बाहर निकाली और केलनबैक को दिखाकर पूछा—“आप यह पिस्तौल किसलिए रखते हैं ?”

केलनबैक ने कहा—“यह तो यूँही पड़ी है।”

गांधी जी ने हँसते हुए पूछा—“आप पर रस्किन और

टाल्सटाय का गहरा प्रभाव पड़ा है। शायद उनकी पुस्तकों में आपको कहीं लिखा हुआ मिला होगा कि बिना किसी कारण के भी जेब में पिस्तौल रखनी चाहिये।”

कैलनबैक ने शमति हुए धीमे से कहा—“मुझे पता चला है कि कुछ गुण्डे आपके पीछे पड़े हैं और वे आपको मार डालना चाहते हैं।”

गांधी जी बोले—“इस पिस्तौल से आप मेरी रक्षा करेंगे?”

कैलनबैक ने कहा—“जी हाँ, यही वजह है कि आप जहाँ भी जाते हैं, वहीं मैं आपके पीछे हो लेता हूँ।”

यह जवाब सुनकर गांधी जी हँसते हुए बोले—“तो यह बात है! चलो अब मैं निश्चन्त हुआ। मालूम होता है, मेरी रक्षा करने वाले परमेश्वर ने आपको ही यह जिम्मेदारी सौंपी है; अथवा आपने खुद ही यह जिम्मेदारी उठा ली? जो हो, अब जब तक आप जिन्दा हैं, मुझे अपने को पूरी तरह सुरक्षित ही समझना चाहिए न? वाह भाई वाह! आपने तो परमेश्वर का अविक्षार भी छीन लेने की खासी हिम्मत दिखाई है।”

कहना नहीं होगा कि उसके बाद कैलनबैक ने कभी पिस्तौल रखने की हिम्मत नहीं की।

खेल में भी बेईमानी नहीं

सन् १९४२ के आन्दोलन में जब गांधी जी आगा खाँ महल में नज़रबन्द थे, तब एक दिन सरोजिनी नायडू ने उनसे कहा—“वापू, आइये आज हम बेडमिन्टन खेलें।”

श्रीमती नायडू के दाहिने हाथ में चोट थी इसलिए वे बाएँ हाथ से रेकिट पकड़कर खेल रही थीं। यह देखकर गांधी-

जी भी बाएँ हाथ से खेलने लगे ।

श्रीमती नायडू बोलीं—“आपको यह भी नहीं मालूम कि रेकिट किस हाथ से पकड़ा जाता है ?”

गांधी जी बोले—“तुम भी तो बाएँ हाथ से खेल रही हो ।”

सरोजिनी नायडू ने कहा—“मेरे दाएँ हाथ में दर्द है ।”

गांधी जी इसके वाद भी बाएँ हाथ से खेलते रहे । तब सरोजिनी नायडू ने उनसे कहा—“आपने अपनी भूल नहीं सुधारी ।”

गांधी जी बोले—“जब तुम दाएँ हाथ में दर्द होने के कारण बाएँ हाथ से खेल रही हो, तो मेरे लिए यह सरासर बेईमानी होगी कि मैं दाएँ हाथ से खेलूँ । मैं किसी की असुविधा का लाभ नहीं उठाना चाहता ।”

जेल भेजने का काम

जब गांधी जी नजरबन्दी से रिहा होकर दर्धा आए, तब कुछ देर के लिए दर्धा रुके । वहाँ उनसे श्री राधाकृष्ण बजाज की बूढ़ी माता जी मिलीं और उनसे पूछा—“वापू आप तो जेल से छूटकर आ गए । अब आप मेरे बेटे राधाकृष्ण को कब छुड़वाएँगे ?”

गांधी जी बोले—“मैं तो जेल से छुड़वाता नहीं हूँ, जेल भेजने का ही काम करता हूँ ।”

गांधी जी का स्वयंवर

सन् १९३७ में राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जा रहा था ।

कनटिक में हुबली नामक स्थान में गांधी-सेवा-संघ की बैठक हो रही थी।

प्रेमा बहन कण्टक फूलों की एक माला लेकर आ रही थी तो काका कालेलकर ने पूछा—“यह माला लेकर कहाँ जा रही हो ?”

प्रेम बहन ने कहा—“गांधी जी को पहनाने के लिए ले-जा रही हूँ ।”

इस पर काका साहब बोले—“मैं भी तुम्हारा स्वयंवर देखूँगा ।”

प्रेमा बहन ने वह माला गांधी जी को पहनाई और गांधी जी ने वह माला उतारकर प्रेमा बहन को पहना दी। इस पर प्रेमा बहन ने कहा—“बापू, आज आपका और मेरा स्वयंवर हो गया। काका साहब इसके साक्षी हैं।”

महात्मा जी का उस दिन मौन व्रत था इसलिए उन्होंने हँसते हुए अपनी गर्दन हिलाई और उस बात की हामी भरी।

प्रेमा बहन दिनभर वह माला पहने रहीं। आजकल वही प्रेमा बहन सेवाग्राम में रह रही हैं और ७० वर्ष से अधिक आयु हो जाने पर भी सेवा-कार्य में लगी रहती है।

सबके लिए कुर्ता

गांधी जी एक बार मेरठ गए, तब उनसे एक बच्चे ने पूछा—“बापू, आप कुर्ता क्यों नहीं पहनते ?”

गांधी जी ने कहा—“वेटा, मेरे पास कुर्ता है ही नहीं, मैं कहाँ से पहनूँ ? क्या तुम्हारी माँ मेरे लिए कुर्ता सी देगी ?”

बच्चे ने उत्साहित होकर कहा—“हाँ, क्यों नहीं ?”

गांधी जी ने कहा—“लेकिन वेटा, मैं कुर्ता सिर्फ अपने लिए नहीं चाहता। यदि तुम्हारी माँ देश में जितने भी आदमी बिना कुर्तें के हैं उन सबके लिए कुर्तें दे सके तो मैं भी कुर्ता अवश्य पहन लूँ।”

रसोइया कृपलानी

ब्रिटिश सरकार जब गांधी जी को चम्पारन से नहीं हटा सकी तब उसने एक दूसरी चाल चली। लेफ्टीनेण्ट गर्वनर आदि बड़े-बड़े अफसरों ने उनको बुलाकर समझाया—“आप तो बड़े अच्छे आदमी हैं। लेकिन आपके जो साथी हैं, वे बड़े कुटिल हैं। उन्हें हम अच्छी तरह जानते हैं।”

गांधी जी ने कहा—“देखिये, आप तो उन्हें दूर से जानते हैं, लेकिन मैं उनके साथ दिन-रात रहता हूँ, इसलिए मैं निजी अनुभव से कह सकता हूँ कि वे मुझसे कहीं अच्छे हैं। मैंने उनमें से किसी को भी बुरा आदमी नहीं पाया।”

पुलिस कमिशनर भी वहीं था। उसने कहा—“आपके साथ जो प्रोफेसर कृपलानी है, उसका रिकार्ड बहुत खराब है। वह राजद्रोही है, शरारती है और लोगों को आन्दोलन के लिए भड़काने वाला है।”

उन दिनों आचार्य कृपलानी, जो नये-नये कार्यक्षेत्र में आये थे और प्रोफेसर कृपलानी के नाम से परिचित थे, अक्सर रसोईघर में बैठकर भोजन बनाने में मदद किया करते थे। गांधी जी कलक्टर वर्गेरह को जो खत लिखते उन्हें लेकर जाने वाले डाकिये का काम भी प्रो० कृपलानी ही किया करते थे। विद्यार्थियों और युवकों पर प्रोफेसर कृपलानी की विद्वत्ता,

देशभक्ति और वक्तृत्व शैली का बहुत प्रभाव था।

पुलिस कमिशनर की बात सुनकर गांधी जी बोले—“आप जानते हैं कि प्रो० कृपलानी मेरे यहाँ क्या काम करते हैं? वे तो कस्तूर वा के साथ रसोईघर में बैठे हम सबका खाना बनाने में व्यस्त रहते हैं। रसोईघर में वे कौन-सी शरारत कर सकते हैं? क्या आप यह समझते हैं कि वे वहाँ साम-भाजी को राजद्रोह के लिए भड़का रहे होंगे?”

झूबता सूरज

आगा खाँ महल में एक दिन शाम को गांधी जी, सरदार पटेल और महादेव भाई आपस में बातचीत कर रहे थे। उसी समय सूर्यास्त का बड़ा सुन्दर और अद्भुत दृश्य दिखाई पड़ा।

उसे देखकर गांधी जी बोले—“जरा देखो तो सही, कितना सुन्दर दृश्य है!”

वल्लभ भाई बोले—“इस झूबते हुए सूरज को क्या देखते हैं? पूजन तो सदा उगते सूरज का करना चाहिए।”

गांधी जी बोले—“हाँ हाँ, कल सुबह वही सूरज फिर नहा-धोकर आ खड़ा होगा, तब हम उसका भी पूजन करेंगे।”

बिल्ली और सरदार

आगा खाँ महल में चिट्ठियाँ भेजने के लिए जिफाके बनाने का काम वल्लभ भाई ने सँभाल रखा था। गांधी जी के पास

जो चिट्ठियाँ आतीं, उनके खाली हिस्से फाड़ लिये जाते और उनको ही जोड़-जाड़कर लिफाफे बनाए जाते। वल्लभ भाई ऐसे कागज के एक-एक टुकड़े पर नज़र रखते और लिफाफे बनाने की रोज कोई-न-कोई नयी तरकीब सोचते रहते।

एक दिन गांधी जी ने सरदार का मजाक उड़ाते हुए कहा—“निकम्मे कागजों पर आपका ध्यान वैसे ही लगा रहता है जैसा बिल्ली का छिपकली पर।”

सूत नहीं सुधा फेनी

एक दिन गांधी जी दोनों हाथों से चलने वाले मगन चर्खे पर कोई दो घण्टे तक सूत कातते रहे। चरखा उसी दिन आया था और उस पर कातने का गांधी जी को अभ्यास नहीं था। आखिर जब गांधी जी के २४ तार पूरे हो गए तभी उन्हें शान्ति हुई।

वल्लभ भाई सारे समय बराबर हँसते रहे और कहते रहे, “बापू, आप जितना कातेंगे उससे ज्यादा बिगड़ेंगे।”

गांधी जी बोले—“मैंने जब बायें हाथ से कातना शुरू किया था तब भी मेरी हँसी उड़ाने वाले आप ही थे न? अब देखिये, बायें हाथ से बराबर तार निकल रहा है या नहीं? तुम जब-जब इधर देखते हो तभी मेरा तार टूट जाता है। अब जब तक तुम इधर नहीं देखोगे तब तक मेरा तार बराबर निकलता रहेगा।”

धीरे-धीरे मगन चरखे पर कातने का गांधी जी का अभ्यास बढ़ता गया। एक दिन उन्होंने तीन घण्टे में १३१ तार काते। तब वल्लभ भाई से बोले—“देखो, अब तो मानोगे न?”

वल्लभ भाई बोले—“हाँ मुझे मनवाने के लिए काफी सबूत नीचे पड़ा है।” नीचे काफी सूत ढूटा हुआ पड़ा था, उसी की तरफ उनका इशारा था।

गांधी जी ने कहा—“एक दिन यह सुधा-फेनी (मैदे से बनने वाली सूत के लच्छे-जैसी एक मिठाई)। यहाँ अभिप्राय ढूटे हुए सूत की ढेरी से है।) भी बन्द हो जाएगी। तब तो मानेंगे न कि मुझे सफलता मिल गई?”

१५ और २० में फर्क?

आगा खाँ महल में गांधी जी के लिए खजूर धोने का काम सरदार वल्लभ भाई पटेल किया करते थे। एक दिन उन्होंने गांधी जी से पूछा, “खजूर के कितने दाने धोऊँ?”

गांधी जी उन दिनों गिनकर पन्द्रह खजूर खाया करते थे। इसलिए उन्होंने कहा—“पन्द्रह।”

परन्तु वल्लभ भाई ने सोचा कि गांधी जी अधिक खजूर खायें तो अच्छा हो, इसलिए उन्होंने पन्द्रह के बजाय बीस खजूर धोकर उनके आगे रख दिये।

गांधी जी ने उन्हें गिनकर कहा—“ये तो बीस हैं।”

सरदार ने कहा—“पन्द्रह और बीस में क्या फर्क है? आप खा लीजिये न!”

गांधी जी ने तुरन्त कहा—“फिर पन्द्रह की जगह दस ही कर दो। दस और पन्द्रह में क्या फर्क है?

मूसल से संगीत

वल्लभ भाई गांधी जी के लिए दतौन की कूची भी तैयार करके दिया करते थे। एक दिन कूची तैयार करते-करते बोले—“बापू, आपके दाँत तो इने-गिने रह गए हैं, फिर भी आप इन्हें घिसते ही रहते हैं। चीज पोली हो तब तो ठीक, पर आप तो मूसल-जैसी ठोस चीज़ में से भी संगीत निकालना चाहते हैं।”

गांधी जी बोले—“पर इस ठोस मूसल से भी संगीत तो बढ़िया ही निकलता है न !”

कथा शुरू करो !

सरदार वल्लभ भाई स्वयं अखबार दिलचस्पी से पढ़ते और मुख्य-मुख्य खबरें गांधी जी को भी पढ़कर सुनाया करते। गांधी जी कभी-कभी बीच में कोई और काम ले बैठते तो सरदार चुप हो जाते और इस बात की प्रतीक्षा करते कि गांधी जी अपना हाथ का काम पूरा कर लें तो आगे सुनाऊँ।

एक दिन सरदार ऐसे ही रुक गए तो गांधी जी बोले—“क्यों बल्लभ भाई, रुक क्यों गए ? जब तक मैं ‘हरे’, नहीं कहूँगा तब तक क्या तुम आगे कथा नहीं बाँचोगे। तो लो मैं कहता हूँ—‘ओ३म् हरे ! हरे !!’ अब तो शुरू करो !”

बनिये की मूँछ नीची

सन् १९१५ में जब गोखले का स्वर्गवास हुआ तब गांधी जी ने “सर्वेन्ट्स् ऑफ इण्डिया सोसायटी” का सदस्य बनकर देशसेवा करने की बात सोची। वे पूना जाकर सोसायटी के भवन में ठहरे और उन्होंने उसकी सदस्यता के लिए प्रार्थना-पत्र भी दिया। उन्होंने सोसायटी के सेक्रेटरी से कहा कि सोसायटी जो-जो काम करती है या करना चाहती है, उसका विवरण मुझे बताइये ताकि मैं उसमें से अपने लायक काम छाँट सकूँ।

सेक्रेटरी ने अस्पृश्योद्धार के सम्बन्धमें जो कार्यक्रम बताया उसमें अछूतों के पास जाकर भाषण देने और उनमें अपने ऊपर होने वाले अन्याय के प्रति जागरूकता पैदा करने की बात शामिल थी।

गांधी जी भाषण करने मात्र के कार्यक्रम से सहमत नहीं थे। वे कोई ठोस अमली कार्यक्रम चाहते थे जिससे अछूतपन का कलंक मिट सके।

सोसायटी के पदाधिकारी गांधी जी के क्रान्तिकारी विचारों से सहमत न हो सके। उनको भय था कि गांधी जी के विचारों के अनुसार कार्य किया गया तो समाज में बगावत हो जाएगी। गांधी जी इस बगावत के लिए तैयार थे। काफी वाद-विवाद हुआ, पर दोनों पक्षों में से कोई अपनी बात नहीं मनवा सका। तब गांधी जी ने अपना सदस्यता-फॉर्म वापस माँगते हुए कहा—“मुझे कल्पना नहीं थी कि मेरे विचारों से आपको दुःख पहुँचेगा। इसलिए आप सब लोग मुझे माफ करें। मैं आपकी

सोसायटी का सदस्य बनकर आप लोगों को परेशानी में नहीं डालना चाहता।”

गांधी जो की इस विनम्रता से सोसायटी के पदाधिकारी अत्यन्त प्रभावित हुए। गांधी जी को सदस्यता-फॉर्म वापिस कर दिया गया और श्रीनिवास शास्त्री तथा हरिनारायण आटे आदि प्रमुख व्यक्तियों ने अपने मन में राहत की साँस ली। वे लोग गांधी जी को पचा नहीं सकते थे। परन्तु गोखले के अनन्य भक्त होने के कारण उन्हें सदस्यता से रोक भी नहीं सकते थे। परन्तु गांधी जी ने अपना सदस्यता-फॉर्म स्वयं वापस लेकर उन्हें इस दुविधा से मुक्त कर दिया। तब तक गांधी जी भारत में प्रसिद्ध नहीं हुए थे, परन्तु उसके बाद से गांधी जी और सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी के सदस्यों में पारस्परिक सौहार्द बना रहा।

गांधी जी ने यह घटना स्वयं जब आगा खाँ महल में एक दिन सरदार वल्लभ भाई को सुनाई तो सरदार ने हँसते हुए कहा—“आपका तो सभी के साथ मेल बैठ जाता है। आपका क्या है—बनिये की मूँछ सदा नीची।”

गांधी जी भी हँसते हुए बोले—“इसीलिए तो मैं मूँछ कटा डालता हूँ न !”

अच्छा हुआ स्वराज्य नहीं आया

जेल में सरदार वल्लभ भाई गांधी जी के अनेक काम किया करते थे। उन्हें इसमें आनन्द आता था। हँसी-मजाक तो सरदार का स्वभाव ही था। एक दिन गांधी जी ने सरदार से पूछा—“वल्लभ भाई, स्वराज्य आने पर आप कौन-सा

विभाग सँभालेंगे ?”

सरदार ने विनोदपूर्वक कहा—“स्वराज्य आने पर मैं तो चिमटा और तूम्ही सँभालूँगा और घर-घर अलख जगाया करूँगा ।”

गांधी जी बोले—“चित्तरंजनदास और मोतीलाल नेहरू अपने-अपने पद की बात सोचा करते थे। मोहम्मद अली और शौकत अली ने भी अपने लिए क्रमशः शिक्षामन्त्री और प्रधान सेनापति का पद पसन्द कर रखा था। इसी तरह और न जाने किस-किसने क्या-क्या सोच रखा था। एक तुम हो कि सन्यासी बनने की सोचते हो ! अच्छा ही हुआ कि स्वराज्य नहीं आया और तुम सबके मंसूवे धरे-के-धरे रह गए ।”

पाँव से कलम

एक दिन गांधी जी कॉपी में उर्दू लिखने का अभ्यास कर रहे थे। वल्लभ भाई ने कहा—“यदि इसी में आपका जो रह गया तो अगले जन्म में आपको उर्दू का मुन्शी बनना पड़ेगा ।”

फिर थोड़ी देर बाद वल्लभभाई बोले—“आपका बस चले तो आप पैर से भी कलम पकड़कर लिखने का अभ्यास कर डालें ।”

गांधी जी ने कहा—“अगर हाथ बेकार हो जाए तो यह भी करना पड़ सकता है। आखिर धुमली का लड़ाई में मूलू माणिक और जोधा माणिक ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में घायल होकर पैरों की मदद से बन्दूक चलाई थी कि नहीं ? अगर पैर से बन्दूक चलाई जा सकती है तो कलम क्यों नहीं चलाई जा सकती ?”

संस्कृत पढ़ने का फल

एक दिन जेल में सरकार की ओर से डाक में कुछ ऐसे चुने हुए पत्र गांधी जी के पास भिजवाए गए जिनसे ऐसा आभास होता था कि वे गांधी जी को परेशान करने के लिए ही भेजे गए हैं। पहले जेलर खुद ही आकर केवल काम के पत्र गांधी जी को दे जाते थे और निकम्मे पत्र अपने पास ही रख लेते थे। पर अब इससे उल्टी बात होने लगी। काम के पत्र रख लिये जाते और निकम्मे पत्र भेज दिये जाते।

महादेव भाई ने कहा—“जान-बूझकर चिढ़ाने के लिए ही ऐसा किया जाता होगा ?”

पर वल्लभ भाई का कहना था—“यह काम जिस कार-कुन को सौंपा गया होगा वह निर्दोष दिखाने वाले पत्र भेज देता है और बाकी के पत्र सरकार क आदेश के अनुसार उच्च-अधिकारी को दिखाने के लिए रख छोड़ता है।”

गांधी जी बोले—“इस विषय में वल्लभ भाई का उदार अर्थ करना ही ठीक होगा।”

महादेव भाई ने कहा—“मगर वल्लभ भाई तो सरकार के कामों का ऐसा उदार अर्थ शायद ही कभी करते होंगे !”

गांधी जी ने कहा—“आजकल वल्लभ भाई संस्कृत का अध्ययन जो करने लगे हैं।”

बात यह थी कि उन्हीं दिनों वल्लभ भाई को संस्कृत पढ़ने का चाव चढ़ा था और उन्होंने श्री सातवलेकर द्वारा रचित ‘संस्कृत पाठशाला’ के चौबीसों भाग इकट्ठे मँगा लिये थे। गांधी जी का इशारा उसी ओर था।

संस्कृत की नोक-झोंक

सरदार वल्लभभाई पटेल जिन दिनों संस्कृत का अभ्यास कर रहे थे उन दिनों वात-बात में गीता के या किसी अन्य संस्कृत ग्रन्थ के श्लोक जड़ देने की उनकी आदत-सी बन गई थी। गांधी जी भी ऐसे वार्तालाप में खूब रस लिया करते थे।

एक दिन सोते समय महादेव भाई ने सरदार से पूछा—“तो कल से गीता शुरू करेंगे न ?”

वल्लभ भाई बोले—“आदौ वा यदि वा पश्चात् वेदं कर्म तु मारिष !”

एक दिन महादेव भाई ने जेल सुपरिटेंडेंट की कुछ आलोचना की तो वल्लभ भाई ने तुरन्त कहा—“नैतत्त्वयुपपद्यते ।”—(अर्थात् तुम्हारे लिए यह उचित नहीं है।)

इसी तरह अंग्रेजी के ‘थैंक्स’ के लिए भी सरदार ‘कृतार्थ-झम्म’ शब्द का प्रयोग किया करते थे।

एक दिन गांधी जी ने सरदार वल्लभ भाई से देश के एक बड़े नेता की, जो बहुत अच्छे लेखक और पत्रकार भी थे, जन्मतिथि पूछते हुए जानना चाहा कि उनकी ६१वीं वर्षगाँठ किस दिन है।

सरदार बोले—“आप उनको बधाई भेजना चाहते हैं क्या ? छोड़िये, आप खुद तो जेल में पड़े हैं, दूसरों को बधाई भेजेंगे ?”

असल में सरदार की उन नेता के बारे में अच्छी राय नहीं थी। सरदार का ख्याल था कि उनके प्रत्येक कार्य में स्वार्थ की मात्रा अधिक रहती है। देश को उतना उन्होंने

दिया नहीं, जितना लिया है। कम-से-कम त्याग और अधिक-से-अधिक लाभ की इच्छा रखने वालों को सरदार अच्छा नहीं समझते थे।

पर गांधी जी का कहना था कि वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक हैं और देश के प्रथम श्रेणी के लेखकों में उनका नाम आता है, इसलिए मुझे उनके ६१वें जन्ददिवस पर अपनी ओर से बधाई अवश्य भेजनी चाहिए।

सरदार ने कहा—“अच्छी बात है, आप लिखिये। और फिर आप तो ‘सत्यमपि प्रियं वदेत्’ को मानने वालों में हैं न ?”

गांधी जी ने हँसते हुए कहा—“अच्छा, आप यह वाक्य भी सीख चुके हैं ?”

ततो दुःखतरं नु किम् ?

गांधी जी को हमेशा खुले आस्मान के नीचे सोने की आदत थी। जेल में भी वे खुले में ही सोते। बरसात का मौसम था। रात को कभी पानी बरसता तो गांधी जी की चारपाई छत के नीचे बरामदे में लानी पड़ती। चारपाई भारी थी, इसलिए जेलर से हल्की चारपाई की माँग की गई।

जेलर ने पूछा—“नारियल की रस्सी वाली चारपाई से काम चलेगा ? आप कहेंगे तो नारियल की रस्सी निकलवा-कर उस पर निवार भरवा दूँगा।”

शाम को दूसरी खाट आ गई। उसे देखकर गांधी जी बोले—“हाँ, मुझे यह पसंद है। इसमें निवार भरवाने की जरूरत नहीं। आज मेरा विस्तर इसी पर लगेगा।”

बल्लभ भाई ने कहा—“क्या कहते हैं ? कहीं इस खाट

पर सोया जा सकता है ? क्या गहे में नारियल की जटा कम है जो आप नारियल की रस्सी पर सोना चाहते हैं ?”

गांधी जी बोले—“लेकिन यह खटिया खूब साफ रह सकती है ।”

सरदार ने कहा—“आप भी खूब हैं ! इसके चारों कोनों पर सिर्फ़ चार नारियल बाँधने ही बाकी हैं । ऐसी असगुनिया खाट किस काम की ! कल इसमें निवार भरवा देंगे ।”

गांधी जी ने कहा—“नहीं वल्लभ भाई, निवार में धूल भर जाती है, निवार धुलती नहीं । इस पर तो पानी डाला कि साफ़ ।”

सरदार बोले—“निवार भी धोबी दूसरे दिन धोकर ला सकता है ।”

तब गांधी जी बोले—“मैं तो इसी पर सोऊँगा । आप चाहें तो अपने लिए ऐसी चारपाई न मँगाएँ । मुझे याद है कि बचपन में हमारे परिवार में ऐसी ही चारपाई काम में आती थी । मेरी माँ उस पर अदरक घिसा करती थी ।”

महादेव भाई भी वहाँ खड़े थे; बोले—“यह क्या बात हुई, मैं नहीं समझा ।”

गांधी जी बोले—“जब अदरक का अचार डालना होता है तब उसे चाकू से न छीलकर... खटिया पर घिसा जाता है । इससे उसका छिलका साफ हो जाता है ।”

वल्लभ भाई ने कहा—“उसी तरह इन मुट्ठीभर हड्डियों पर चढ़ी चमड़ी छिल जाएगी । इसीलिए कहता हूँ कि निवार भरवा लीजिये ।”

गांधी जी बोले—“इस खटिया पर निवार ऐसी लगेगी जैसे ‘बूढ़ी घोड़ी पर लाल लगाम’ । इस पर तो नारियल की

रस्सी ही भलो !”

इसके बाद गांधी जी ने चारपाई वरामदे से नीचे उतर-वाई । तब वल्लभ भाई बोले—“लेकिन वारिश आए, तो ?”

गांधी जी बोले—“तब ऊपर चढ़ा लेंगे ।”

वल्लभ भाई ने कहा—“ततो दुःखतरं नु किम् ?”

गांधी जी ने हँसते हुए कहा—“मैं तो पहले ही समझ गया था कि आप ऐसे ही किसी इलोक का प्रयोग करने के लिए यह सवाल-जवाब कर रहे हैं !”

मँझधार में नहीं छोड़ सकते

गांधी जी का चर्खा चलाने का नियम इतना पक्का था कि उसमें कभी व्याधात नहीं पड़ने देते थे । एक दिन उनके हाथ में दद बढ़ता जा रहा था, पर वे कातना बन्द नहीं कर रहे थे । तब वल्लभ भाई ने कहा—“देखिये, दर्द अंगूठे से शुरू हुआ, कुहनी तक पहुँचा गया ; अब कुहनी से बढ़कर कंधे तक जाएगा । अब बस करिये । बहुत कात चुके ।”

गांधी जी कहाँ मानने वाले थे ! बोले—“कभी-न-कभी तो किसी के कन्धे पर चढ़ना ही पड़ेगा न ?”

वल्लभ भाई बोले—“यह नहीं हो सकता । देश को मँझधार में छोड़कर आप नहीं जा सकते । एक बार जहाज को किनारे पर लगा दीजिये, फिर जहाँ जाना हो, जाइये । मैं भी साथ चलूँगा ।”

गांधी जी बोले—“आप कहाँ तक मेरा साथ देंगे ?”

चक्की पीस, बात करें

बात तब की है जिन दिनों विनोबा जी गांधी जी के पास उनके आश्रम में ही रहते थे। गांधी जी, महादेव भाई और विनोबा जी तीनों बड़ी प्रसन्नता से आटा पीसने और अनाज साफ करने का काम किया करते थे। जब तीनों रसोईघर में बैठकर अनाज साफ करने या चक्की चलाने में व्यस्त होते तो बड़ा प्रेरणादायक हश्य होता।

एक बार गुजरात के प्रसिद्ध विद्वान् और शिक्षा-शास्त्री श्री आनन्दशंकर बापू भाई ध्रुव गांधी जी से मिलने आए। गांधी जी उस वक्त चक्की पर बैठे अनाज पीस रहे थे।

गांधी जी उन्हें देखकर बोले—“आइये, पधारिये!” फिर पल-भर को चक्की रोककर उनसे बोले—“आपको कोई आपत्ति न हो तो आप भी पीसने बैठ जाइये। हम अनाज पीसते-पीसते ही बात करेंगे।”

वकील अच्छे फँसे

इसी तरह की एक और घटना है।

गांधी जी और विनोबा वगैरह अनाज साफ कर रहे थे कि कोट-पतलून में सजे एक अपटुडेट वकील साहब गांधी जी से मिलने आए।

गांधी जी ने जमीन पर चटाई का आसन बिछाकर कहा—“बैठिये।”

परन्तु वकील महोदय पतलून के साथ आसन पर कसे बैठते ? खड़े-खड़े ही कहने लगे—“महात्मा जी, मैं यहाँ बैठने के लिए नहीं आया हूँ। मुझे कोई काम चाहिए। आप मेरे लायक कोई काम मुझे सौंपेंगे, इस आशा से मैं आया हूँ।”

ये वकील अंग्रेजी के बहुत अच्छे पण्डित थे और इसी आशा से आए थे कि गांधी जी उनसे कोई लिखने-पढ़ने का दिमागी काम लेंगे।

परन्तु गांधी जी ने कहा—“बड़े आनन्द की बात है। यह लीजिये, अनाज साफ करिये।” और यह कहकर उनके सामने दो-तीन थाली भरकर अनाज सरका दिया। साथ में इतना और कहा—“देखिये, अनाज इस तरह साफ करिये कि उसमें एक भी कंकर न रहे।”

अपने सामने अनाज की ढेरी देखकर वकील साहब अस-मंजस में पड़ गए। यह तो नौकर-चाकर या घर की स्त्रियों का काम है। वकील जैसे सुशिक्षित और बुद्धिमान व्यक्ति से गांधी जी ऐसा हल्का काम करने को कहते हैं, यह विचित्र बात है। बोले—“मुझे भी अनाज की सफाई का काम करना पड़ेगा ?”

गांधी जी बोले—“इस समय तो मेरे पास यही काम है।”

अब वकील साहब से ना करते भी नहीं बना। लाचार किसी तरह उकड़ू होकर आनाज साफ करने बैठे और थोड़ी देर में ही पसीने से तर-बतर होकर बोले—“अच्छा महात्मा जी, अब मैं विदा चाहता हूँ।”

गांधी जी ने कहा—“पधारिये !”

इसके बाद फिर कभी वकील महोदय ने गांधी जी से अपनै लायक काम की माँग नहीं की।

देहरादून का अकलमन्द

एक बार मौलाना आजाद ने, जब वे जेल में थे, तब एक चिट्ठी किसी वार्डर के हाथ तिकड़म से बाहर भेजी। जेल के फाटक पर तलाशी में वह पकड़ी गई। मौलाना को यह बात पता लगी तो बहुत ध्वराए। उनको लगा कि इस जरा-सी बात से दुनिया-भर में बदनामी हो जाएगी। महावीर त्यागी भी उसी जेल में थे और जवान छोकरे के रूप में तरह-तरह की शरारतों के लिए प्रसिद्ध थे। जब उन्हें यह बात पता लगी तो उन्होंने समझदृश बाबू को २५ रु० की रिश्वत का वादा करके वह चिट्ठी छुड़ा ली और जेल के एक नम्बरदार (पुराने कैदी) के ज़रिये वह चिट्ठी मौलाना के पास पहुँचवांदी। मौलाना ने त्यागी को बुलाकर कन्धे से लगाते हुए कहा—“मेरे भाई, तूने मुझे बचा लिया। इस अहसान को उम्र भर नहीं भूलूँगा।”

त्यागी ने बाद में यह घटना साझरमती आश्रम में गांधी-जी को सुनाई, तो गांधी जी आँखें तरेरकर बोले—“क्या तू सत्याग्रही नहीं है?”

त्यागी जी बोले—“सत्याग्रही नहीं हूँ तो क्या चोरी और डाके में जेल काटी है?”

गांधी जी ने कहा—“रिश्वत देना तो चोरी से भी बुरा है। जब सत्य में तेरा विश्वास नहीं तो तू सत्याग्रही कैसे हो सकता है?”

त्यागी ने कहा—“मैं वया बेवकूफ हूँ जो सत्य में विश्वास

करूँगा ? ”

गांधी जी बोले—“तो क्या सत्य और अक्ल साथ-साथ नहीं चल सकते ? ”

त्यागी ने अपनी फिलासफी बघारते हुए कहा—“नहीं, यदि सत्य में अक्ल मिलाओ तो असली धी में डालडा मिल जाएगा । फिर सत्य सोलहों आने सच नहीं रह सकता । अक्ल-मन्द आदमी तो सत्य को समय के अनुसार दबाता, लचकाता और तोड़-मोड़कर हथियार की तरह इस्तेमाल करता है ।”

गांधी जी चश्मे के ऊपर से देखते हुए बोले—“बात तो तेरी ठीक है कि अक्ल के लगाने से मिलावट हो जाएगी, पर सत्य और झूठ को पहचानने के लिए तो अक्ल की दरकार है न ? ”

त्यागी ने कहा—“उसके लिए आप बैठे तो हैं ! हमारे जैसे को अक्ल बढ़ाने की क्या जरूरत है ? ”

इस पर गांधी जी ने उनकी पीठ पर धौल जमाते हुए कहा—“वाह रे देहरादून के अक्लमन्द उर्फ ‘वाइज़मैन ! ’

निरा पागल है ?

गांधी जी जब देहरादून गए तो वहाँ के प्रसिद्ध राष्ट्रीय और सामाजिक कायंकर्त्ता वैद्य अमरनाथ ने उनसे कहा कि आपको जो मानपत्र मिलते हैं, आप उन्हें तुरन्त ही देखते-देखते नीलाम कर देते हैं । यह ठीक नहीं है । वै मानपत्र राष्ट्र की सम्पत्ति हैं, इसलिए उन्हें सुरक्षित रखा जाना चाहिए ।

गांधी जी ने कहा—‘‘मेरे पास तो इतना बड़ा घर नहीं

है।”

तब वैद्य जी ने सुझाव दिया कि उन्हें किसी अजायबघर में रखवा दिया जाए।

इस पर गांधी जी ने कहा, “इन कागजों को वहाँ कौन रखेगा ? अलबत्ता अगर तुम कोई ऐसा अजायबघर बनवाओ तो मैं उसमें रखने के लिए ये मानपत्र तुम्हारे पास भेज सकता हूँ।”

निराश होकर वैद्य जी बोले—“तो बापू, इसका यह अर्थ हुआ कि देश की यह बहुमूल्य सम्पत्ति कभी एकत्र न हो सकेगी, क्योंकि आपकी बात तो पत्थर की लकीर होती है।”

गांधी जी बोले—“लोग तो कहते हैं कि मैं बहुत जल्दी-जल्दी बदल जाता हूँ !”

महावीर त्यागी भी वहाँ बैठे थे ; बोले—“हाँ, मेरा ऐसा ही विश्वास है।”

कार्यकर्ताओं के बीच में गांधी जी को ऐसी बात कहे जाने की आशा न थी । बोले—“क्यों, तुम भी ऐसा समझते हो ?”

महावीर त्यागी बोले—“जी हाँ, पुराणों की कथा है कि गाय की पूँछ पकड़ने वाला वैतरणी के पार हो जाता है और भैंस की पूँछ पकड़ने वाला बीच धारा में गोते खाता है । आपके साथ क्या हुए कि हमने तो भस की पूँछ पकड़ ली है । पता नहीं, कहाँ गोता खाना पड़े । क्योंकि आपने जितने भी आन्दोलन चलाए, वे सब-के-सब बीच में ही तो ठप्प हो गए ।”

गांधी जी भी इस बात पर क्षणिक उत्तेजित होकर बोले—“तुमने अपनी मर्जी से ही तो भैंस की पूँछ पकड़ी है न, पूँछ ने तो तुमको नहीं पकड़ा ? तुम जब चाहे, पूँछ को छोड़ सकते हो ।”

त्यागी हक्के-बक्के रह गए मुँह पीला पड़ गया। फिर भी किसी तरह हिम्मत करके कहा—“आपके लिए आसान है यह कहना कि पूँछ छोड़ दो। पर मँझधार में कैसे छोड़ दें? क्या हूँब मरें? हम तेरना जानते तो पूँछ ही क्यों पकड़ते! जिस किनारे से पकड़ा है, पहले उसी किनारे पहुँचा दो और उम्र भी घटाकर २१ वर्ष कर दो।”

गांधी जी ने कहा—“यह तो निरा पागल है!”

वीरोचित मृत्यु

१९३३ में यरवदा जेल में जब गांधी जी ने अपना ऐतिहासिक उपवास प्रारम्भ किया तब पाँचवें दिन ही उनकी तबीयत इतनी खराब हो गई कि सरकार ने घबराकर उन्हें छोड़ दिया। कैदी के रूप में गांधी जी की मृत्यु हो जाने से पैदा होने वाले खतरे का सामना करने की हिम्मत सरकार में वहीं थी।

गांधी जी लेडी ठाकरसी के ‘पर्णकुटी’ नामक आवास पर स्वास्थ्य-लाभ कर रहे थे। एक दिन शाम को धूमते हुए उन्होंने अपने एक साथी से कहा—“मुझे यह विश्वास नहीं था कि इस बार मुझे रिहा कर दिया जाएगा। मैं समझता था कि सरकार मुझे जेल में ही मर जाने देगी और इसलिए मैंने मरने की पूरी मानसिक तैयारी कर ली थी। मैंने अपने उपयोग की सब चीजें दूसरों को बाँट दी थीं।”

साथी ने कहा—“यह तो आपकी बड़ी भव्य मृत्यु मानी जाती।”

गांधी जी बोले—“नहीं-नहीं, यह बेकार की बात है। उपवास से होने वाली मृत्यु में क्या भव्यता है? तुम्हें मालूम है, मेरी जन्मकुण्डली में क्या लिखा है? उसमें लिखा है कि मुझे ऐसी मृत्यु मिलेगी जो वीरों को शोभा देने वाली हो।”

साथी बोला—“उपवास से होने वाली मृत्यु भी तो ऐसी ही मृत्यु है। इसके लिए भी बड़े भारी आत्मबल की जरूरत होती है।”

गांधी जी बोले—“नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता। मेरी मृत्यु फँसी के तख्ते पर या पिस्तौल की गोली से होनी चाहिये। ऐसी ही मृत्यु सच्चे अर्दों में वीरों को शोभा देने वाली मृत्यु है। खटिया में पड़े-पड़े मरना वीरोचित मृत्यु नहीं है।”

क्या गांधी जी ने अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में यह भविष्य वाणी की थी।

०००

सुबोध पॉकेट बुक्स के नये प्रकाशन

नूरबाई

वृन्दावनलाल वर्मा

सपनों का गाँव

आदिल रशीद

तलाक १)

गुरुदत्त

सपनों का गाँव



तलाक



पत्थर के आँसू
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

रेशमी रात

जोरावरसिंह वर्मा

सोने का दुकड़ा

अमृता पांचाली

गांधीजी का हास्य-विनोद

क्षितीश



प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

सुबोध पॉकेट बुक्स के अन्य लोकप्रिय प्रकाशन उपन्यास

अपसरा	सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	2.00
लालसा	पं० मुखराम शर्मा	2.00
पतन	भगवतीचरण वर्मा	2.00
यह कंचन-सी काया तेरी	उग्र	2.00
कचनार	वृन्दावनलाल वर्मा	2.00
सुलगते अरमान	आदिल रशीद	2.00
मन का मीत	"	2.00
बाबुल	"	2.00
विधायक की हत्या (जासूसी)	ओमप्रकाश शर्मा	2.00
साँझ का सूरज	"	2.00
चक्रम गायब	"	2.00
रात के मौन स्वर	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	2.00
प्रायश्चित की सीमाएँ	नानकसिंह	2.00
खूनी हस्पताल (जासूसी)	जोरावरसिंह वर्मा	2.00
पुलिस के कारनामे	"	2.00
मैं जासूस नहीं हूँ	"	2.00
मैं तेरी दीवानी	"	2.00
हम तो मोहब्बत करेगा	कृश्न चन्द्र	2.00
नीलोफर	शौकत थानवी	2.00
घाट का पथर	गुलशन नन्दा	2.00
तपोभूमि	जैनेन्द्रकुमार, ऋषभचरण जैन	2.00
आकाश खाली है	दत्त भारती	2.00
ये चकलेवालियाँ	कुप्रिन	2.00
वरदान	प्रेमचन्द	2.00
लाट आए साजन	अमृता पांचाली	2.00
मनुष्य के रूप	यशपाल	2.00
विलायती मेम	शंकर	2.00

रोम की नगरवधु
 यौवन की प्यास
 मुझे मालूम न था
 पत्थर के सनम
 एक रात का नरक
 लोपामुद्रा
 स्वेतलाना
 गोली
 देवागंना व नरमेध
 घर की लाज
 मिस चौधरी
 औरत एक चेहरे हजार
 घर की बात
 पत्रलता भाग १
 पत्रलता भाग २

अल्बर्टो मोराविया २.००
 „ २.००
 भगवतीप्रसाद वाजपेयी २.००
 शंकर सुल्तानयुरो १.००
 उपेन्द्रनाथ अश्क १.००
 कें० एम० मुन्ही १.००
 क्षितीश २.००
 आचार्य चतुरसेन २.००
 „ „ २.००
 माणिक वन्द्योपाध्याय २.००
 प्यारेलाल 'आवारा' २.००
 परदेशी २.००
 गुरुदत्त ३.००
 „ २.००
 „ २.००

काव्य एवं हास्य-व्यंग

भाभी जी न मस्ते
 पत्नी को परमेश्वर मानो
 सलवार चली सलवार चली
 मेरी पत्नी भली तो है लेकिन—
 हास्यकवि-सम्मेलन
 हास्यरस के हल्ले
 ढुलत्ती
 महामूर्ख सम्मेलन
 हँसना मना है
 ढोल की पोल
 शे'र-ओ-सुखन
 दीवान-ए-ज़फ़र
 ढोलवती & पोलवती

गोपालप्रसाद व्यास १.००
 „ १.००
 „ १.००
 „ १.००
 „ १.००
 „ १.००
 „ १.००
 काका हाथरसी १.००
 „ १.००
 योगेन्द्रकुमार लल्ला १.००
 चिरंजीत १.००
 चन्द्र माथुर २.००
 रामानुजलाल श्रीवेस्तव २.००
 हुल्लड़ १.००

जीवनोपयोगी

आप क्या नहीं कर सकते ?	स्वेट मार्डन	1.00
चिन्तामुक्त कैसे हों ?	„	1.00
हँसते-हँसते कैसे जियें ?	„	1.00
जो चाहें सो कैसे पायें ?	„	1.00
अपना खर्च कैसे घटायें ?	„	1.00
अवसर को पहचानो	„	1.00
अपने आपको पहचानिये	„	1.00
सिगरेट बीड़ी कैसे छोड़ें ?	नरेन्द्रनाथ	1.00
हम सुखी कैसे रहें ?	डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	2.00
२०० स्मॉल स्केल इण्डस्ट्रीज	रवि श्रीवास्तव	2.00
एकलाख नौकरियाँ	अरविन्द	2.00
रेडियो ट्रांजिस्टर मैकेनिक	हयात	3.00

काम-विज्ञान

अनबन	आचार्य चतुरसेन	1.00
काम-कला के भेद	„ „	2.00
बदनाम रास्ते	„ „	2.00
नर, नारी और प्यार	राधामोहन जोशी	1.00
गर्भस्थिति, प्रसव और शिशुपालन	डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	2.00

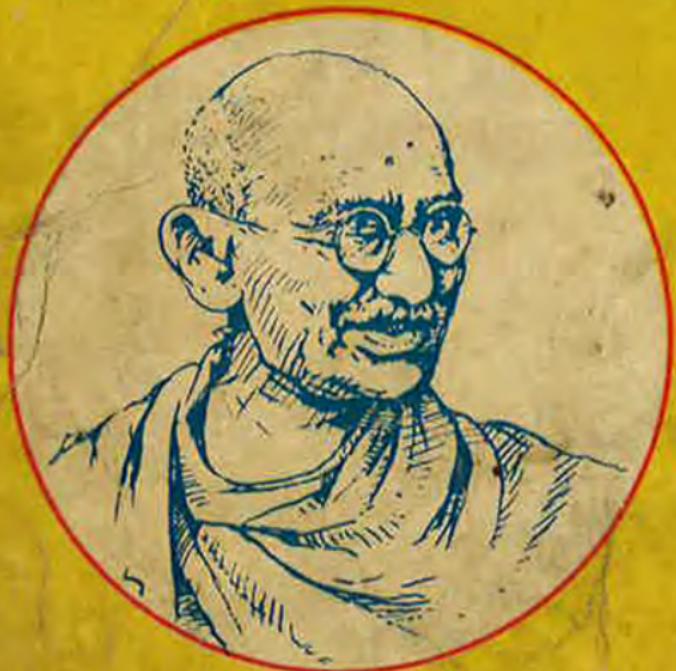
फैशन परेड	कार्टून	शिक्षार्थी
	सिनेमा सिरीज	

मीनाकुमारी	बच्चन	श्रीवास्तव
दिलीपकुमार	„ „	1.00
वैजयन्तीमाला	„ „	1.00

इन पुस्तकों को अपने स्थानीय पुस्तक विक्रेता से खरीदें। न मिलने पर हमें लिखें।

सुबोध पाकेट बुक्स, दरियागंज, दिल्ली-६

भारत की सर्वश्रेष्ठ पॉकेट बुक्स



जिसका हृदय शुद्ध होता है वही हँस
और हँसा सकता है। गांधीजी शुद्ध
हृदय थे, इसीलिए वे सदैव सबको
हँसाते रहते थे। उनके हँसने-हँसाने

के प्रसंगों का यह संकलन आपको
भी पसन्द आएगा।



सुखोद पॉकेट बुक्स डिल्ली